कहानियाँ

बदलते जीवन की

'श्यामबाबू शुक्ला 'विमल'

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shyam Babu Shukla "Vimal" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69906-96-8

First Edition: August 2026

समर्पण

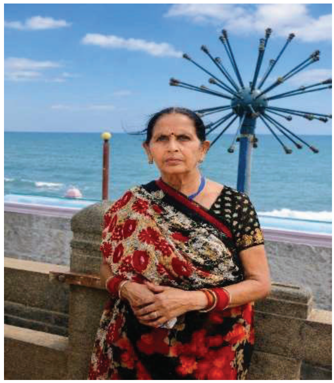

मैंने अपने इस वक्तव्य को कलमबद्ध कर अपनी स्वर्गीया धर्मपत्नी महेश्वरी देवी को समर्पित करने का मन बनाया है। जिन्होंने मेरे जीवन में आने वाली नित्य प्रति की अनचाही समस्याओं में सदा मेरा साथ दिया है अथवा जो अनेकानेक कारणों से दूसरों द्वारा परोसी गई तरह तरह की समस्याओं का सामना करने के समयए ग्रामीण जीवन या शहरी जीवन में भी मेरे साथ में सहभागिनी ही बनी रहीं और मेरे साथ-साथ इन बिसंगतियों को भी झेला और अपना मनोबल उन्नत बनाए रखा। उन्होंने बगैर विचलित हुए अपनी मान प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आने दी, सदा सच का अनुसरण कर जो अपनी मेहनत की रोजी-रोटी पर भरोसा रख जीवन पथ को हमेशा आगे बढ़ाती रहीं, मेरा उनको बंदन, नमन और अंतरात्मा से भावपूर्ण समर्पण।

प्रकाशकीय

मनुष्य का जीवन हमेशा कठिनाइयों से भरा रहता है, इन्हीं कठिनाइयों को जब वह संघर्षों की कसौटी पर कसता है, तो उसमें इनसे जूझने की प्रवृत्ति पैदा हो पाती है और वह समाज में अपने को स्थापित करने की अनुभूति मन में अर्जित कर पाता है। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी ने कहा था "देव सदा देव है, दनुज दनुज हैं, जा सकते किंतु दोनों ओर ही मनुज है" मनुजता विकसित करना वास्तव में एक चुनौती पूर्ण कार्य है। संवेदना सहनशीलता सत्य के मार्ग का अनुसरण करते हुए ही हम इस प्रकार की कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके संसार में सुख शांति प्राप्त कर सकते हैं तथा दूसरों से आदर प्राप्त करके स्वयं को धन्य कर सकते हैं।

विपत्तियों का साया हमारे जीवन में सिर पर उड़ती हुई मधुमक्खियों के झुंड के सदृश्य हमारा पीछा करता रहता है और हम जीवन की दौड़ती हुई जिंदगी की मोटरसाइकिल पर सवार है। सामने आने वाली कठिनाई रूपी गड्ढे से बचकर कैसे हमें अपनी जीवन यात्रा को सफल बनाना है और अपने गंतव्य तक पहुँचना है। यह सारी बातें हमारी सूझबूझ से ही हमें प्राप्त हो पाती हैं। कठिनाइयों में हम विचलित न हो और युद्ध भूमि में लड़ते हुए योद्धा की भाँति शत्रुओं के हर बार को बचाते चलें, तभी हम अपने को अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं।

मैंने 'कहानियाँ बदलते जीवन की' पुस्तक में जीवन के पग पग पर आने वाली उन परेशानियों का छोटी-छोटी कहानियों के द्वारा उल्लेख करने का यत्न किया है जो कुछ मनोरंजन तथा कुछ शिक्षा का पुट लिए हुए हैं। तथा संघर्षों की सत्यता का उल्लेख करती चलती है। कि किस प्रकार यह बचपन से ही मनुष्य को हराने का स्वांग रचती डोलती रहती हैं। यदि परमात्मा की अनुकंपा ना हो तो जल्दी ही हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाए। परन्तु दृढ़ निश्चयी मनुष्य उन कठिनाइयों को झेलता हुआ आगे बढ़ता चला जाता है।

हमारे विज्ञ पाठक जन इन लघु कथाओं को पढ़कर ही निर्णय देंगे कि, उन्हें यह कितनी आश्चर्य जनक लगीं अथवा यह संघर्षों की पृष्ठभूमि में मन को क्या अनुभूति करा गई तथा यह शैक्षिक ज्ञान के पद पर उनका कितना गाइड के रूप में कार्य करेगी।

निवेदन

मेरा जन्म एक साधारण ब्राह्मण परिवार में चैत्र शुक्ल रामनवमी विक्रम संवत 2012 को रात्रि नौ बजे हुआ। माता/पिता सहित हमारे बाबा, साथ ही विमाता को अत्यंत सुख हुआ। परिवार, अत्यंत चार सदस्यों का छोटा परिवार था। पाँचवे सदस्य के रूप में मेरे आगमन ने जो प्रसन्नता प्रकट की थी, उसके उपलक्ष्य में एक विशाल यथाशक्ति भोज मेरे नामकरण पर आयोजित किया गया।

मेरे आगमन के उपरांत मेरे परिवार की अत्यन्त प्रगति हुई। बाबा जो एक किराने की दुकान करते थे, जिसे लोग गाँव में बड़ी दुकान के नाम से जानते थे उसमें अत्यंत प्रगति हुई, जो क्रमशः परिवार की उन्नति का आधार बदलते परिवेश के अनुसार बनी।

मेरे जन्म के उपरान्त, भाई, बहिनों के रूप में परिवार में वंश वृद्वि भी हुई। वर्तमान में अब हम चार भाईयों और एक विवाहित बहिन के सुखी परिवार से निर्वाह योग्य सम्पत्ति से युक्त है। एक विवाहित एवम् एक अविवाहित बहिन की मृत्यु हमारे माता पिता के जीवन काल में हो चुकी है।

मनुष्य के जीवन काल में, सुख और दुःख क्रमशः आते जाते रहते हैं। सुख तो आनन्द देते हैं, परन्तु दुःखों में कष्ट का थोड़ा या अधिक पीड़ामय अनुभव होता ही है।

उल्लेखनीय है, कि भगवान हरि या उनके अवतारों के पावन नामों से इस भवसागर में दुःखों में भी सुख पूर्वक, जीवन काटा जा सकता है।

मेरे भी जीवन में अनेक दुःख आये, विषमताएं आयीं परन्तु प्रभु का स्मरण बना रहा, कृपा भी मिली अवकाश के क्षणों में मैंने सोचा, कि क्यों न जो दुःख जीवन में आये, उनको लिपिबद्व किया जाय। कापी कलम उठाली, प्रभु स्मरण कर, स्मृति के आधार पर लिखने लगा।

आशा और विश्वास है, कि जो कष्टमय जीवन बीमारी या अज्ञानता अथवा अपनों के संग से व्यतीत हुआ जैसा कि अनेक पूर्व पुरूषों, महा पुरूषों

के साथ भी हुआ। इसे पढ़कर पाठको को आगे दिशापथ मिलेगा। और कष्टों में कमी से अति कमी आयेगी और हरि स्मरण बना ही नहीं रहेगा अत्यन्त और दृढतर होगा।

भवदीय,

श्यामबाबू शुक्ल 'विमल'
25.12.2025
क्रिसमस दिवस

अनुक्रमणिका

(खाई में डूबने से बचे)..1
(करूणा शंकर (चोर) द्वारा बैलों पर हमला) 1
(फुड़ियों के कारण सिर में पीड़ा)...6
(साथी बालक द्वारा भयभीत करने के कारण ट्रक से कूदे)................9
(पेट में भंयकर गैस पीड़ा) 9
(जीर्ण ज्वर).. 11
(चेचक का प्रकोप और पीड़ा) 17
(चेचक के बाद की न्यूमोनिया).. 17
(साथी विद्यार्थी द्वारा काँच पर ढकेलना)..................................... 22
(आँख में अरहर की लकड़ी से चोट)... 25
(आँखों का दुःखना).. 28
(अप्रशिक्षित बैलो की बैलगाड़ी से मेहमानों सहित गिरे).................. 31
(कुत्तों के हमलों का शिकार)... 34
(गेहूँ बुवाई के लिए बीज ले जाते समय बैलगाड़ी से गिरे) 34
(पढ़ाई के वक्त बर्रो का हमला) 41
(पैरों में दर्द एवम् मोच की पीड़ा) 41
(साइकिल से गिरने पर पैर में चोट).. 47
(रिश्तेदार की बन्दूक की फायर से बचे)...................................... 50
(आधा शीशी की पीड़ा) 53
(बदमाशों की फायर से बचे)... 55
(बिच्छू दंश (डंक) का शिकार हुए).. 58
(मलेरिया बुखार की पीड़ा) 61
(भयंकर चक्रवातीय तूफान में फँसे) 63
(जब कान में कीड़ा घुसा).. 65
(पुलिस की भ्रामक मुठभेड़ से बचे).. 68
(दाँतों की पीड़ा)... 71
(नाभि खिसकने की पीड़ा).. 74

(भंयकर खूनी पेचिश).. 78
(नागिन का पैर के ऊपर से निकल जाना) 80
(पेट के कीड़ों के कारण पीड़ा) 84
(छालों की पीड़ा) 87
(गुर्दे की पथरी की पीड़ा) 90
(कब्ज के भंयकर मरीज) 93
(बवासीर का देशी इलाज) 96
(मोटर साइकिल खाई में घुसी) 98
(इलेक्शन डयूटी उपरान्त पैरों में दर्द)....................................... 100
(साइटिका का दर्द) 103
(फिस्टुला (भगंदर की पीड़ा).. 105
(साढ़ के झपटने से कंधे में चोट) 108
(खुजली का प्रकोप).. 110
(नितम्बों में दाद) 113
(बरहा क्रास करते समय पैर की चोट)...................................... 115
(शरीर पर दागों की समस्या)... 117
(तीव्र ज्वर, भीगने के कारण) 120
(चक्कर आने की समस्या)... 122
(बैरिको सील, लिपोमा (बड़ी गाँठ) हार्निया) 125
(आँख के ऑपरेशन)... 128
(एक हादसा ऐसा भी).. 132
(जब दीवाल डगमगाई) 135
(जब मेरे पौत्र को चोट लगी) 138
(जब बन्दर मेरी पुत्री की चोट का कारण बना).......................... 140

(खाई में डूबने से बचे)

मेरी सौतेली माता (स्वर्गीया सुन्दरी देवी) हमें बहुत प्यार करती थी। जब हमारी आयु दो वर्ष अथवा कम की ही थी, वह हमें खेतों की तरफ जाते अपनी गोद में साथ लेकर चली जाती थी। हमारी माता जी घर के कार्यो का दायित्व पूरा करती थी।

बरसात के दिन थे, बरसात प्रारम्भ होते ही लोग अपने रास्ते के निकटवर्ती खेतों में खाईयाँ लगवा देते थे। उन दिनों मार्ग प्रायः कच्चे रास्तों के रूप में होते थे, जिन पर पशु या बैलगाड़ियाँ आती जाती थी। बरसात के दिनों में यह मार्ग प्रायः कीचड़ से भर जाते थे। खाइयाँ लगवाने का लाभ यह होता था, कि लोग उन पर सेंटा, पतेल खेत की साइड में रोप देते थे, जो ग्रामीण क्षेत्रों में छप्पर या पलानी डालने के काम आ जाता था। खाइयाँ लगने से कीचड़ से भरे रास्तों से पशु भी खेत में उगी फसल नष्ट करने नहीं पहुँच पाता था।

बरसात का प्रथम चरण जोर पर था। जुलाई का महीना था, खाईं से पानी निकल कर रास्ते में जा रहा था। मेरे माता जी, जो मुझे

गोद में लिये थी, उन्होंने मुझे गोद से उतारकर जमीन पर बिठा दिया, और स्वयं बहते हुए पानी को खेत की मिट्टी उठा–उठा कर बाँधने लगी। मैं कुछ दूर पर बैठा था और सरक कर खाई में जा गिरा, खाई में गिरते ही गिरते मैं पानी में डूबने लगा मेरी माता जी ने मुझे देखा और दौड़कर किसी तरह पानी भरी खाई से निकाला मेरे कई गोते लगे, कपड़ों में कीचड़ लगा। मुँह के रास्ते पेट में पानी गया। परन्तु जान बच गई।

सारांश यह है कि वैसे तो अपने शिशुओं की ओर माताओं का पर्याप्त ध्यान रहता है। परन्तु यदि छोटी सी लापरवाही हो जाये, तो भयानक मुसीबत ला सकती है। हमें बच्चों की सुरक्षा पर पर्याप्त ध्यान रखना चाहिए।

शब्दार्थ – पलानी – (कच्ची दीवालों पर सूखी पतेल का छावन बरसात में दीवालों की सुरक्षा हेतु डालते थे।

पतेल – एक प्रकार की लम्बी घास जो छप्पर छाने के काम आती है।

(करूणा शंकर (चोर) द्वारा बैलों पर हमला)

मैं अपने छोटे से परिवार में एक आकर्षक श्याम वर्ण शिशु था। विमाता, पिता प्रायः शैशवावस्था में मुझे खेतों की ओर साथ लेकर, लहड़ू की सवारी से चले जाते थे। जैसा कि मैंने पूर्व में बताया, कि चकबन्दी से पहले खेत छोटे–छोटे आकार के तथा दूर–दूर होते थे।

एक दिन अपनी एक जोड़ी बैलों के चारा, वास्ते, लहडू से पिता और माता मुझे लेकर अपने एक खेत पर गये, जो घने झाड़ीदार एक बाग के निकट था। उन्होंने लहड़ू को ज्वार के खेत में रोक दिया, जिसका ज्वार चारा हेतु काट लिया गया था। मेरी उम्र इतनी छोटी थी कि मुझे ज्वार के ठूँठो वाले खेत में पैदल चलाना मुश्किल था। मैं सही से बोल भी नहीं पाता था, तथा मेरे लिए दूसरे व्यक्ति को पहचानना भी मुश्किल था।

मुझे हिदायत दें के, कि चुपचाप यही लहडू पर बैठे रहना माता–पिता कुछ दूर स्थित दूसरे खेत की ओर चले गये। प्रायः उन दिनों खेत में वानरों और भेड़ियों का डर भी लगा रहता था। परन्तु मेरी स्मृति मुझे बोध कराती है। कि उन पशुओं से मनुष्य अधिक क्रूरकर्मा तथा मनुष्य जाति का दुश्मन होता है। मेरे पिता ने लहडू के जुऑंर से क्रमशः दोनों बैलों की रस्सी को बाँध दिया था और कुछ चिन्तित सा आगे बढ़ गये थे।

अरई हाथ में लिए सहसा एक व्यक्ति जो कि अपने मुँह पर ढाँटा चढ़ाये था ज्वार के खेत से निकला। जब उसे यह प्रतीत हुआ कि मेरे माता पिता दूर निकल गये। उसके हाथ में बैलों को हाँकने वाली एक अरई थी। उसने अपने हाथों से एक बैल की नाथ को जकड़ कर उसी बैल के नथुने पर अरई से प्रहार करना शुरू किया। बैल के नथुने से काफी रक्त बहा, और कटे हुए ज्वार वाले खेत की जमीन भी उसके खून से लाल हो गई।

मेरे पिता माता ने दूर से हलचल हुई जान, अपने गन्तव्य स्थान से उस जगह शीघ्रता से पहुँच गए। तब तक वह व्यक्ति पुनः उस खड़ी फसल में घुसकर ओझल हो चुका था। अवाक् माता–पिता वापिस घर आ गये।

मैं सोचता हूँ, आखिर उसने यह सब क्यों किया। उसका क्या प्रयोजन था। उन दिनों लोग विपत्तिग्रस्त होकर जब गाँव से भाग जाते थे। तो सम्पत्ति पर कानूनी अधिकार न होने से लोग कब्जा कर लेते थे। उसका भी शायद यही इरादा था, कि बैल को जख्मी कर शिशु को मार देंगे। खून देखकर यही लगेगा कि बच्चे को बैल ने मारा होगा। यदि मेरी मृत्यु हो जाती तो उसका शोक परिवार को गाँव से पलायन करने पर मजबूर करता। सम्पत्ति पर किसी प्रकार छल कपट से अधिकार उनका हो जाता। अतः सतर्कता और सावधानी बरतना आवश्यक है।

शब्दार्थ – ढाँटा – कपड़े से मुँह ढककर अपनी पहचान छिपाना

जुँअर – बैलगाड़ी में बैलों को जोतने के लिए बँधा लकड़ी का निर्मित उपकरण

अरई – बैलों को हाँकने की लोहे की कील लगी लकड़ी

(फुड़ियों के कारण सिर में पीड़ा)

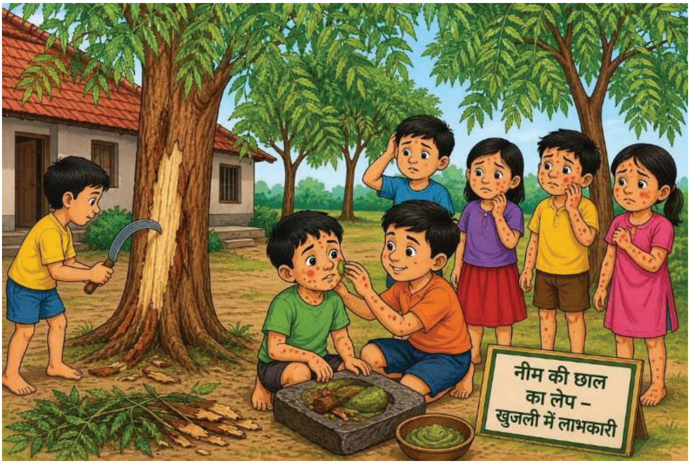

यह वह युग था कि उपचार की उन दिनों समुचित व्यवस्था न थी। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में सर्दी के मौसम में त्वचा शुष्क हो जाने के कारण, अथवा बरसात में नमी के कारण शरीर, या सिर में खुजली या फुड़ियों की पीड़ा हो जाया करती थी। जो बच्चों या बड़ों को भी काफी परेशान किया करती थी। बचपन में मेरे सिर में भी फुड़ियों की समस्या काफी अधिक हो गई, जो महीनों तक पीड़ा देती रही।

अपने बाबा के बताएं अनुसार, हम नीम के वृक्ष की छाल छीलकर लाते थे। और उसे पत्थर की सिल पर पानी के साथ घिसकर लेप बनाते थे। और उन फुड़ियों पर लेप लगाते थे, जो उपचार से कालान्तर में ठीक भी हो गई।

उन दिनों दरवाजे–दरवाजे–नीम के पेड़ गाँव में लगाये जाते थे। गर्मी में जिनकी शीतल छाया लोगों को तृप्ति का अनुभव कराती थी। लोग अपने पशु भी नीम के वृक्षों के निकट बाँधते थे। जिससे पशुओं को

भी नीम की छाया का लाभ मिलता था। कुछ क्षेत्रों में राष्ट्रीय पक्षी मोर एक वृक्ष से दूसरे नीम के पेड़ पर जाता हुआ वातावरण को गुंजायमान कराता सुरीली कुहुक भरी आवाज से उड़कर आता जाता है। तो लोगों में एक उल्लास का सृजन कराते हुए असीम आनन्द पैदा कराता है। नीम हमारे लिए बड़ा उपयोगी है, जब ग्रामीण क्षेत्रों में संक्रामक रोग खुजली का प्रकोप रहता था। पूरा का पूरा घर मोहल्ला इस संक्रामक रोग से पीड़ित रहता था। तथा सरकार की गाइड लाइन के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों में भी खुजली से पीड़ित छात्रों को इस भय से अलग दूर चटाई पर बिठाया जाता था, कि उनके संपर्क से अन्य छात्रों में यह संक्रामक रोग न फैलने पाये। उस समय नीम ही उपचार का प्रमुख विकल्प था।

दिलचस्प बात है। कि बचपन में, मैं जिस प्राथमिक स्कूल की प्राथमिक कक्षा में पढ़ता था, उसमें कुछ छात्रों को खुजली हो गई मुख्य अध्यापक ने उन्हें अलग चटाई पर बिठाया। संयोग से उनमें दो बच्चे एक ठाकुर के थे। ठाकुर लाठी लेकर प्रधानाध्यापक से विरोध प्रकट करने आया, कि आपने मेरे बच्चों से छूतछात का भेदभाव पैदा किया।

बरसात से पूर्व नीम के पेड़ में विशेषतयः चैत्रमास में फूल आता है, जिसको पीसकर पीने से लोग संक्रामक रोगों से बचाव करते हैं। जब फूल के उपरान्त वृक्ष में निबौरी आती हैं, जो पककर पेड़ के नीचे गिरती है। कुछ महिलाएं उसको बीनकर तेल निकालती थी, जो बड़े काम का था। पशुओं को सामान ढोने आदि में, या जुताई के समय उनके कंधों में व्रण हो जाते थे, कभी–कभी मक्खी उनमें बैठकर कीड़ों की समस्या पैदा कर देती है। नीम का तेल बड़ा उपयोगी है, लगाने से मक्खी नहीं बैठती। मेरी माता जी अपने पशुओं के हित में नीम के तेल का प्रयोग करती थी। फलतः मेरे सिर की फुड़ियों में नीम की छाल वरदान सिद्व हुई।

(साथी बालक द्वारा भयभीत करने के कारण ट्रक से कूदे)

विगत उन दिनों की है, जब गाँव में कोई, डीजल, पेट्रोल वाला वाहन आ जाता था, तथा तत्कालीन कच्चे रास्तों से धूल उड़ाता गुजरता था, तो गाँव के बच्चे उसका दृश्य देखने उसके पीछे दौड़ते थे। अथवा उसकी गति कम हुई तो उस पर बैठकर सवारी, जिसे उस समय की भाषा में (मन्जलुआ खाना) करना चाहते थे।

मेरी उम्र उस वक्त पाँच वर्ष से अधिक नहीं रही होगी। अपने से बड़ी उम्र के बच्चों के साथ गाँव में आये हुए एक ट्रक के पीछे पहुँच गया। वह ट्रक उस समय बरेली में निर्मित होने वाले खपटों को, एक किसान द्वारा मँगवाये जाने के कारण लाया था। खपटें उन दिनों खपरैल (एक प्रकार की गृह निर्माण कला) बनाने के काम आते थें।

जब ट्रक का ड्राईवर उन खपटों को निर्दिष्ट स्थान पर उतार चुका, तब बच्चों ने उस ड्राईवर से अनुनय विनय की कि वह उन्हें भी मन्जलुआ खिला दें जिससे वह सैर का आनन्द ले सके। ड्राइवर ने बच्चों के अनुरोध पर उन्हें ट्रक के पिछले हिस्से के डाले से चढ़कर बैठ जाने को कहा, आठ या दस की संख्या में बच्चे ट्रक में चढ़ गये। उन बड़ी आयु के बच्चों में मैं ही सबसे छोटा था साथी बच्चों ने मुझे भी ट्रक में सहारा देकर चढ़ा दिया।

बच्चों को खाली ट्रक में बिठाकर ट्रक ड्राइवर उस मार्ग को धूल धूसरित करता हुआ अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ा, साथी बच्चों में हलचल पैदा हुई, कोई कहने लगा, कि यह बरेली ले जाकर सबको मकान में बन्द कर लेगा, तथा फिर कभी वापिस आने नहीं देगा।

यद्यपि मैं छोटा था, मुझमें समझ नहीं थी। बाल बुद्वि थी, बड़े बच्चों की इन बातों से, मैं डर गया। साथ ही माता–पिता की डाँट और पिटाई से भी डरता था। कुछ भी समझ में नहीं आया ट्रक के डाले की ओर बढ़ा और चलते ट्रक से कूद गया। गिरते ही मै बेहोश हो गया क्योंकि ट्रक की रफ्तार तेज थी, साथी बच्चों ने मुझे गिरते देख लिया था, उन्होंने ट्रक का पिछला हिस्सा पीटकर (हाथों से थपथपाकर) ट्रक रूकवाया, और उतरे उन्होने देखा मैं बेहोश पड़ा था। मेरे सिर में भी बहुत चोट थी एक गाड़ी वाला, जो गोबर की खाद ढोकर खेत में ले जा रहा था, मुझे उठाकर एक बाग में लाकर लिटाया काफी देर बाद मुझे होश आया। घर आने पर मेरी चोट के बारे में मेरे बाबा को जब पता चला, तो उन्होंने शहद और चूने वाले मिश्रण से लेप तैयार कर मुझे कई दिनों में ठीक किया। और ईश्वर ने मुझे जीवन देकर स्वस्थ किया सारांश यह कि बच्चों के मामलों में परिवार को संवेदनशील रहकर उनकी गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए।

(पेट में भंयकर गैस पीड़ा)

यह वह समय था, जब चकबन्दी नहीं हुई थी, किसानों के छोटे–छोटे खेत बड़ी दूर–दूर तक फैले हुए थे, तथा किसानों के पास काफी संख्या में कम दूध देने वाली गायें तथा कृषि कार्यो में काम आने वाले बैल और भैंसे हुआ करते थे। पशुओं के चारे हेतु लोग अपने खेतों में मटर, चना आदि बो देते थे। ज्वार, बाजरा, समां भी अधिकांश दूरस्थ खेतों में बोया जाता था। बरसीम का प्रचलन नहीं था।

बरसाती नालों के निकट भी पानी सूखने पर परती भूमि में उक्त फसलें बोयी जाती थी जो बिना खाद–पानी के अच्छी उपज देती थी। हमारे गाँव के करीब ऐसा एक बरसाती नाला था, जिसके निकट की परती नम भूमि पर चारे के लिए मटर बोयी गयी थी। उस वर्ष उसमें खूब मटर लदी थी। चरवाहे भी नाले के निकट मटर तोड़कर भूनकर उसका होरा खूब खाते थे। भुनी मटर खाने में स्वादिष्ट लगती है। एक

दिन एक परिचित चरवाहा मटर भूनकर लाया, बच्चों ने बड़े चाव से खाई मैं उस दिन कुछ ज्यादा खा गया।

रात्रि में भुनी मटर ने पेट में भयंकर दर्द पैदा किया। रात भर उपचार न होने के कारण गैस का ताण्डव बढ़ता गया, सुबह हमारे माता–पिता लहडू से इलाज हेतु निकटवर्ती रेलवे स्टेशन ट्रेन पकड़कर ले जाने को उद्वत हुए , कि ठंडी हवा के प्रभाव से मुझे काफी पलटी आई, और ईश्वर की इच्छा से जिससे मुझे राहत मिल गई, और इस प्रकार मेरे जीवन की रक्षा हुई।

मैंने सुना है कि पेट में गैस बनने पर, यदि उसका ठीक समय पर उपचार न किया जाय, तो मृत्यु भी हो जाती है। ऐसा मेरे एक दूरस्थ सम्बन्धी के बच्चे के साथ हुआ। जब तक वह अस्पताल लेकर पहुँचे उसके प्राण पखेरूँ उड़ गये।

उस समय मैं अध्यापक के रूप में सरकारी स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगा था। किन्हीं कारणों से मेरे एक दाँत में भयंकर दर्द होने लगा, मैं उपचार हेतु एक डाक्टर के पास गया, प्राइवेट डाक्टर ने मुझे कुछ दवा दे दी, रात्रि 10 बजे मेरे पेट में गैस की पीड़ा शुरू हुई जो निरन्तर बढ़ती गई, अब मैं दाँत का दर्द भूल गया और पेट की पीड़ा से छटपटाने लगा, मुझे लग रहा था कि कोई मेरे पेट में भाले चुभो रहा है) मैंने एक डाक्टर का दरवाजा भी जोर से खटखटाया। परन्तु वह रात्रि में नहीं उठा, सुबह तक मैं बुरी स्थिति में पहुँच गया।

सवेरे हमारे गुरू जी संयोगवश हमारे पास गाँव से आ गये, और हमे लेकर एक सज्जन वैद्य के पास लेकर गये। उन्होंने हमारा इलाज किया, जिससे हमारी पीड़ा शान्त हो गई और इस बार भी ईश्वर की अहेतुकी कृपा ने हमारी रक्षा की।

सारांश यह है, कि बच्चों के खानपान पर उनके संरक्षकों को और बड़ों को स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए स्वाद के वश होकर स्वादिष्ट चीज अधिक नहीं सेवन करनी चाहिए। तथा दवा का भी अपनी

शारीरिक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सोच समझकर सेवन करना चाहिए।

शब्दार्थ

समां – एक प्रकार का पहले समय में

खाये जाने वाला अन्न

होरा – भुना हुआ कच्चा अनाज

पल्टी - उल्टी

(जीर्ण ज्वर)

उन दिनों समुचित उपचार व्यवस्था नहीं थी। बचपन में मुझे जीर्ण ज्वर हो गया, शहर में भी एलोपैथी के इक्का–दुक्का डाक्टर, मरीज का आयुर्वेदिक साथ ही एलोपैथी से इलाज करते थे। जब मैं जीर्ण ज्वर का शिकार हुआ, तो मुझे घरेलू आयुर्वेद आधारित अर्क नं0 4 जैसी दवाओं का सेवन कराया गया। रोग की तीव्र अवस्था में, मेरे पिता ने मेरा इलाज एक नये एलोपैथी डाक्टर से कराया। उस समय के चिकित्सक मरीज को लंघन (भूखा रखकर) कराकर उपचार करते, और दवा का सेवन कराते थे। पानी, साबूदाना और हल्के दूध के साथ रोगी को दवा पर निर्भर रहना पड़ता था। जिससे उसका लीवर भी कमजोर हो जाता था। मेरा उपचार भी इसी प्रकार चला। मुझे भी ठीक होने के बाद लीवर से संबंधित अनेक समस्याओं ने घेर लिया था।

पानी, विशेषकर बरसात में दूषित हो जाता है, सर्दियों के मौसम में बासी या ठंडा पानी अत्यन्त हानि कारक रोग का कारण बन जाता है। आजकल तो पानी को शुद्व करके पीने योग्य बनाने के साधन और उपकरण, अनेक युक्तियों की जानकारी भी आम जनता के पास है। उस समय देश अत्यन्त गरीब था, शिक्षा के स्तर का अनुपात भी अत्यन्त कम था, लोग और उनके बच्चे गंभीर बीमारियों की चपेट में दूषित जीवन शैली के कारण आ ही जाते थे।

इसी प्रकार के जीर्ण ज्वर के कारण मेरे एक अनुज का स्वास्थ्य जीवन में खराब रहा। तथा मेरी एक बहिन की मृत्यु, टाइफाइड बुखार के कारण हो गई जिसकी आयु उस समय पन्द्रह वर्ष की थी, महीने भर एलोपैथी के डाक्टर ने भी लंघन करा कराकर उसका उपचार किया अन्ततः वह मृत्यु को प्राप्त हो गई। उन दिनों मैं एक आवश्यक चुनाव डयूटी में था, मुझे अन्तिम समय उसके दर्शन भी न हो सके।

आजकल समय कितना बदल गया है। हमारे लिए हमारी सरकारों ने चिकित्सा क्षेत्र में उपचार का समुचित ध्यान रखा है। जिससे जन जीवन गम्भीर बीमारियों की चपेट में आने से बहुत कुछ अपने को सुरक्षित कर पाता है।

फिर भी हमें अपने, तथा अपने बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए, संचार माध्यमों द्वारा दी गई उचित जानकारी के अनुसार स्वस्थ रहने के लिए जागरूक रहना चाहिए। जिससे हम गम्भीर बीमारियों से बचे रहे।

उल्लेखनीय दिलचस्प बात यह है कि जिस समय यह बीमारियां होती थी, तो लोग उस समय भाप से चलने वाले रेल इंजन के ड्राईवर से इंजन में भरे हुए गर्म पानी को उपचार हेतु, अपने बर्तन में अनुनय विनय करके माँग लाते थे, जिसको पिलाकर ज्वर में आने बाली खाँसी से मुक्ति मिल सके।

शब्दार्थ :– लंघन (भूखा रहकर दवा सेवन करना।

(चेचक का प्रकोप और पीड़ा)

यह बात उन दिनों की है, जब सारा देश चेचक की बीमारी से ग्रस्त था। देश के अधिकांश हिस्से विशेषकर उत्तर भारत में इस रोग का इतना प्रकोप था, कि मुझे याद है, कि मेरे गाँव में ऐसा कोई घर नहीं था, जिसमें चेचक की बीमारी से कोई ना कोई मृत्यु न हुई हो। मेरे पड़ोस के रहने वाले एक व्यक्ति के पाँच पुत्रों में से चार की मृत्यु हो चुकी थी।

जनता केवल परम्परागत देवी, अनुष्ठानों, एवम् उपचारों पर ही विश्वास करती थी। चिकित्सकों के पास न तो समुचित, रोग की पहचान का ज्ञान था, और न ही कोई इलाज था, अथवा टीकाकरण के बाद आने वाले बुखार से जनता भयभीत रहती थी। तथा कभी–कभी बस्ती में वैक्टीनेटर के आने पर भी टीके नहीं लगवाती थी।

मेरी आयु उस समय लगभग 8 वर्ष की थी। जब मुझे इस भयंकर बीमारी ने आ घेरा। मैं कक्षा तीन उत्तीर्ण कर कक्षा 4 में पढ़ता था। उस दिन साठा चावल, दाल सहित खाकर मैं सोया था, रात्रि में

मुझे तीव्र बुखार आ गया, मेरे पिता और माता मुझे सुबह ट्रेन से शहर लेकर गये। जहाँ चिकित्सक ने बुखार की किस्म का परीक्षण किये वगैर मुझे इंजेक्शन लगा दिया। चेचक के दानों का निकलना बन्द हो गया, परन्तु वे पेट के अन्दर ही रूक कर उत्पात दिखाकर रोग की तीव्रता को बढ़ाने लगे, मेरे पिता को मुझे घर तक वापिस लाना अत्यन्त मुश्किल हो गया। घर आने पर मेरी स्थिति अत्यन्त खराब हो गई, मुँह के अंदर दानें, दाँतों पर दाने, पलकों पर दाने, हाथ पैरों के तलवे, यहाँ तक कि नाखूनों पर भी दानें, मुँह में दानों के कारण खाने पीने का प्रश्न ही नहीं उठता, मेरे मुँह में एक महीने तक प्रतिदिन एक दो चम्मच पानी ही जाता था, उस समय रातों में जागकर मेरी चारपाई के सिरहाने मेरी विमाता ने मेरी देखभाल की, तथा जैसा कि मेरा शरीर, एक कंकाल जीवधारी बन चुका था, मेरे जीवन का आधार केवल मेरा कण्ठ था। जिस पर दानें नहीं थे वह एक मात्र एक दो चम्मच पानी जाने का आधार था।

मेरी विमाता ने मेरे पैरों की बीमारी में शरीर की त्वचा से निकलने बाले गीले चिपचिपे द्रव से बचाया जिसके रहते पैर मोड़ने पर त्वचा में चिपक जाते थे। आँख की पुतलियों पर दानें निकलने पर आँख बन्द होने पर व्यक्ति अंधा, या बहरा भी हो सकता था, अपनी देखभाल से मुझे बचाया। उस समय गाँव के अनेक पीड़ित बच्चे अन्धे या बहरे हो गये। उस जीवधारी कंकाल के जीवन की आशा त्याग कर मुझे कई बार असहाय मेरे माता पिता ने दरी पर जमीन में उतारा, परन्तु प्राण शरीर त्याग करने वाले नहीं थे, मेरा जीवन शेष था तथा संसार में ईश्वर द्वारा सौपे गये शेष कार्य को करना था, कंकाल जीवधारी को कुछ और झेलना था, जिसका उल्लेख अगले चेप्टर में करना शेष है।

शब्दार्थ – साठा चावल - एक प्रकार की पुरानी किस्म का धान जिसमें लाल रंग का चावल निकलता था।

(चेचक के बाद की न्यूमोनिया)

जैसा मैंने उल्लेख किया कि मेरे शरीर में केवल प्राण शेष बचे थे। अंग प्रत्यंग इस कठिन बीमारी ने क्षरित कर दिया था। एक दिन मेरे पिता जी ने एक टमाटर का थोड़ा रस निकाल कर मुँह में डाला ही था, मुँह के व्रणों में बहुत पीड़ा हुई, मैं निस्तब्ध खुले मुँह से अत्यंत पीड़ा के कारण ताकता रह गया।

इसी समय मेरी माँ ने मेरे शरीर पर हल्का वस्त्र पहनाया, कि हवा लगी, और पसलियों में असहनीय दर्द उठा, सभी ने माना कि मुझे, चेचक के जाने के बाद होने वाली न्यूमोनिया हो गई है, जो अत्यन्त कमजोर शरीर को जकड़ लेती है। मेरी पीड़ा देखकर घर में बना बनाया खाना भी परिवार के बिना खाये छूट जाता था। मेरे पिता जी ने अपने बाल और दाढ़ी बढ़ा रखी थी।

संयोग से मेरे दूरस्थ रिश्तेदार का, एक बेटा, हाल में आर्मी की सेवा से रिटायर हुए, एक प्रशिक्षित चिकित्सक आर0एन0सिंह के यहाँ गोला गोकरननाथ में कम्पाउन्डर था। उसको जब मेरी इस दशा के बारे में पता चला। उसने मेरे पिता जी को उन सम्मानित चिकित्सक के पास ले जाने की सलाह दी मेरे पिता और माता मुझे दयनीय दशा में लेकर वहाँ गये।

चिकित्सक को देखते ही मेरी माता जी करूण क्रन्दन करते हुए उसके पैरों पर, भगवान का रूप मानते हुए गिर पड़ी, उसने भी मेरी माता को (माई रो मत़) मैं इसके उपचार में अपनी पूरी ताकत लगा दूँगा, कहकर ढाँडस बँधाया।

उस समय चिकित्सक महोदय ने मेरा उपचार प्रारम्भ किया, शरीर पर जो दाने पड़े हुए थे, उन पर किसी दवा का लेप लगाना प्रारम्भ किया, जिससे वह सूखने के बाद खुरन्ट छोड़ देते थे।

मुझे याद है, चिकित्सक महोदय जब मेरे दोनों हाथो में क्रमशः इन्जेक्शन लगाते थे, तो मुझे मेरा मुँह वगैर चीख के पाँच मिनट खुला ही रहता था, वह तुरन्त हृदय को ताकत देने वाली कोई एक दवा मुझे पिलाते थे, करीब चार पाँच दिनों बाद हल्का जूस उपचार के दौरान मैंने पिया और माता पिता को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

उल्लेखनीय है, धान की कटाई की सीजन थी। गाँव का एक व्यक्ति मुलाराम जो मेरे पिता का सहयोगी था, उसके धान, मौका पाकर चोरों द्वारा चुरा लिये, गये जब वह मुसीबत में दो दिन मेरे साथ रहा।

प्रसन्न हुए, मेरे पिता ने चिकित्सक महोदय का आभार व्यक्त करते हुए कहा, कि यदि मेरा पुत्र पन्द्रह दिनों में थोड़ा चलने लगे, तो मैं आपको चिकित्सा के अतिरिक्त सौ रूपये और दूँगा, चाहे मुझे कुछ बेचना ही पड़े। दस दिनों बाद चिकित्सक ने मुझे उठाया, मेरी माँ से कहा उँगली पकड़ कर इसे चलाओ। कमजोर शरीर चलना सहन नहीं कर पाया, मेरे पैरों के टखनों में भयंकर दर्द शुरू हुआ, जो काफी दिनों

तक रहा। कालान्तर मैं ठीक हो गया। मैं उन चिकित्सक महोदय, का आभारी हूँ जिन्होंने अपनी दवा से मुझे जीवन जीने योग्य फिर से बना दिया।

शब्दार्थ –

खुरन्ट – जख्म पर बनने वाली पपड़ी जो बिना सूखे छुड़ाने पर निशान छोड़ देती है।

(साथी विद्यार्थी द्वारा काँच पर ढकेलना)

मेरी प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाई के दौरान, गुल्ली डंडा, खो–खो कबड्डी, आँख मिचौली कुर्रा है बादशाही, पीछे देखा तो मार खाई, लंगड़ी खेलना जैसे परम्परागत खेलों का प्रचलन था।

बच्चे खाली समय में, इस प्रकार के खेलों को बड़े चाव से खेला करते थे। जिसमें बड़े बच्चे छोटी आयु के छात्रों पर हावी रहते थे, और उन शारीरिक क्षमता प्रदर्शित करने वाले छात्रों का उत्पीड़न भी करते थे।

कभी–कभी आउट साइडर बच्चे, जिनका पढ़ाई से कुछ लेना–देना नहीं था, छात्रों के ग्रुपों में खेलने के बहाने घुस आते, और छोटे बच्चों को खेलों में चालाकी से हरा देते थे।

जब छात्रों में अवकाश (मध्य) के दौरान आँख मिचौली का खेल चल रहा था, अध्यापक महोदय दूर कुर्सी पर बैठे हुए विद्यालय की कुछ पंजिकाओं को भरने का कार्य कर रहे थे। मेरे इस खेल के ग्रुप में आउट साइडर बड़ी आयु का एक लड़का प्रवेश कर गया, छोटी उम्र, मेरी आँखों को, पीछे से अपने हाथों से बन्द कर दूर ले जाकर, टूटी पड़ी काँच की शीशियों के ऊपर मुझे ढकेल दिया। मेरे पैर का एक घुटना फट गया, और मुझे काफी चोट लगी मेरे पिता जी को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने अध्यापक के पास जाकर अपना विरोध प्रकट किया। खैर काफी दिनों बाद मैं पुनः ठीक हो गया। उन दिनों अविभावक पूर्णतः अपने बच्चों को अध्यापक के संरक्षण में छोड़ देते थे। अध्यापक महोदय से इस आशा के साथ कि वह भी चाहे छात्रों की कितनी भी छड़ी से मारपीट करें लेकिन पढ़ा लिखाकर योग्य बनायें।

कभी–कभी अध्यापक भी छात्रों को पढ़ाई के दौरान नाजायज पीटते थे, जो कार्य छात्रों की सहन क्षमता से बाहर का हुआ करता था मुझे याद है, कि अध्यापक की लापरवाही से एक छात्र जो माता पिता का इकलौता पुत्र था, विद्यालय के निकटवर्ती तालाब में डूब गया था।

मिड डे मील के बनने के अवसर पर भी रसोइयों की लापरवाही से और प्रधानाध्यापक की उदासीनता से एक छात्रा की बहिन जो अपने साथ उसे विद्यालय लेकर आई थी, खौलती सब्जी, के भगौने के ढक्कन पर चढ़ गई, और उसमें गिरने से झुलसकर उसकी मृत्यु हो गई। ऐसी बड़ी घटना विद्यालय और शिक्षा के लिए अभिशाप है।

छोटे बच्चे अत्यंत संवेदनशील होते है उनको हर स्तर पर संवर्धन और संरक्षण मिलना चाहिए। वर्तमान में हम कितना बदले और कितना समाज और उत्तरदायी संस्थाओं ने उन्हें परम्परागत समस्याओं से बाहर निकाला है विचारणीय प्रश्न है।

(आँख में अरहर की लकड़ी से चोट)

यह बात भी उन दिनों की है, जब बड़े पैमाने पर बैलों द्वारा खेती की जाती थी, और पालतू पशुओं के चारे हेतु बड़ी मात्रा में हरा चारा प्राप्त करने के लिए खेतों में ज्वार बोयी जाती थी। आसाढ़ मास की प्रथम फुहारों ने भूमि को तरबतर कर दिया था। खेतों में छोटी–छोटी घास उग आयी थी। कृषक उसको पलटकर खरीफ की फसलों की बुवाई हेतु कृषि भूमि को जोत रहे थे। ऐसे ही एक खेत की जुताई हेतु हलवाहे हल लेकर चले गये मेरी माता जी मुझसे यह कहकर खेतों की ओर चली गई, कि घर में शेष एक जोड़ी बैलों को लहडू में जोड़कर, घर में जो ज्वार मैंने खेत की बुवाई हेतु तौल कर रखी है। उसे लादकर खेत में ले आना।

मैंने अभी किशोरवस्था की दहलीज पर कदम रखा ही था, जैसे तैसे ज्वार की गठरी उठाकर लहडू पर रखी और बैलों को जोड़कर उसे लेकर चला। कच्चे रास्ते में पहली तेज बरसात का पानी भरा हुआ था, बैलों को मैं साध नहीं पाया, उससे बचकर बैल मुझे लहडू समेत लेकर अरहर के खेत में घुस गये। जिसमें पुरानी वंध्या अरहर के पेड़ खड़े थे, मैं लहडू से उतर कर खेत में घुसा और गीली जमीन से एक पेड़ को उखाड़ कर बैल के साधने हेतु उसकी पीठ में मारा, मारते ही अरहर के पेड़ की जड़ में लगी मिट्टी समेत एक लकड़ी टूटी और सीधे मेरी एक आँख में जा धँसी। मैं पीड़ा से बेचैन होकर चक्कर खाकर धरती पर बैठ गया। दूर हल जोतते हलवाहों ने मुझे गिरते देख लिया था। वह दौड़े, और मेरे पास आकर मुझे उठाया। मुझे एक व्यक्ति नन्हूँ लाल ने उठाकर, बैलों को सीधा कर लहडू में बिठाया और घर ले आया।

घर आकर मेरी माँ ने परम्परागत घरेलू उपचार का सहारा लिया, लेकिन आँख जख्मी हो चुकी थी। मेरे को लेकर वह (सीतापुर आँख के अस्पताल) की शाखा पर लेकर, कई बार गईं, परन्तु आँख में लाल दाना उभर आया जिसे देहाती भाषा में चोभ कहते हैं। दवा से कोई फायदा नहीं पीड़ा बढ़ती गई।

उस समय के घरेलू इलाजों में, देशी, बूटियों या मन्त्र, तन्त्र, का भी प्रयोग कितना कारगर था, मैं नहीं जानता था कि आज के युग में वह कितना उपयोगी है। मेरा गाँव में रहने वाली एक बूढ़ी माता जी ने गोबर के उपयोग से और मन्त्र के प्रयोग से उपचार, निर्दिष्ट दिनों में किया और तीन माह पीड़ा भोगने के बाद मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया।

उस समय लोग निष्काम भाव से जनता की जर्नादन में विश्वास रखते हुए सेवा निःशुल्क करते थे। उससे फायदा भी होता था। आज कल सब कुछ पैसे के लिए होता है। मैं उन बूढ़ी कृषक परिवार की माता का स्मरण करते हुए आभार व्यक्त करता हूँ।

शब्दार्थ –

वन्ध्या – जिस पौधे में फली नहीं आती है उसे वन्ध्या पौधा कहा जाता है।

निर्दिष्ट दिन – का अर्थ, शनिवार, रविवार कभी कभी मंगलवार भी

(आँखों का दुःखना)

ग्रामीण जनजीवन में, उस समय गर्मी की ऋतु में, अथवा बरसात के आरम्भ की फुहारों के जमीन पर पानी पड़ने से, निकलने वाली कष्टदायक गर्मी से आँखों की पीड़ा, जिसमें आँखे तीव्र लाल, और सूखी नसों वाली हो जाती है। बहुत पीड़ा देती थी, ग्रामीण क्षेत्रों में उन दिनों परम्परागत नुस्खों का उपचार ही सम्भव था।

मेरी आँखो में जब यह पीड़ा हुई उस समय मैं किशोरावस्था में था, आँखे बहुत दुःखी, पीड़ा तब बढ़ जाती थी जब हम कोई मिर्च वाली तीखी चीज खा लेते थे। उस समय केवल राब या गुड़ से ही रोटी खाने पर आराम मिलता था।

जैसा कि मैंने बताया कि सर्दियों में भी आँखों में खुजली जो पलकों या उनके कोनों को प्रभावित करती थी बच्चे अपनी आँखों को

खुजलाते–खुजलाते लाल कर लेते थे उनमें पीड़ा होती थी। और वह दर्द से कराहते थे। उस समय ग्रामीण क्षेत्रों में गाँव में कुँओं से भरकर पानी पिया जाता था। कुँओं की जगत या (पार) पर बरतन रखने पर जो गढ्ढे बन जाते थे, उन पर पानी भरते, समय जो थोड़ा बहुत पानी भर जाता था। उससे लोग खुजली बाली आँखों को धोते, और ठीक भी हो जाते थे।

हमें याद है कि बचपन में मेरे या मेरे भाई या बहिन को आँखों में कुथियां नामक रोग हो गया था, जिसको वाल्मीक बिरादरी की एक दादी ने बताशों से दबाकर उपचार कर ठीक कर दिया था।

एक बार मैं अपने बच्चों के साथ, आमंत्रण प्राप्त होने पर इटावा से भिण्ड जाने वाली एक बारात में सम्मिलित हुआ। जुलाई के प्रथम सप्ताह की गर्मी में बच्चों की आँखे दुखने लगी यद्यपि हमारी पत्नी और दो बच्चे जो उस समय छोटे थे, बारात वाले घर इटावा में ही रूके, मैं बारात के साथ गया था। वापिस आकर (जब बारात लौटी) देखा दोनों बच्चे आँखों की पीड़ा से अत्यन्त पीड़ित है। उस समय गृह स्वामिनी जो मेरी पत्नी की मामी थी, उन्होंने देशी घी में, नारियल को महीन कतरकर गुड़ में पाग कर बच्चों को खिलाया था। उन्हें तीन चार दिनों में आराम आ गया। और मैं आराम से घर वापिस लौटा।

आजकल शुद्व घी का आम जनता को प्राप्त होना अत्यंत कठिन जान पड़ता है। शुद्व (बिना मसाले) बाली गुड़ का मिलना भी बहुत मुश्किल है, शहरी क्षेत्रों में आम जनता को और कठिन है। फिर समय का अभाव, किसी शायर ने ठीक ही कहा है।

‘दर्दे सर के वास्ते सन्दल लगाना है। मुफीद।

लेकिन घिसना और लगाना यह भी तो सर का दर्द है।’

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हम देशी उपचारों का प्रयोग भूल जायेंगे तो यह नुस्खे हमारी पीढ़ी से खिसकते नजर आयेंगे और हम एलोपैथी दवा पर ही निर्भर रहकर, अपना जीवन केवल प्रशिक्षित लोगों के हाथों में बहुत कुछ खर्च कर सौंपते रहेंगे।

शब्दार्थ – राब गुड़ का तरल रूप

(अप्रशिक्षित बैलो की बैलगाड़ी से मेहमानों सहित गिरे)

यह वह समय था कि लोग अपने उपयोग में आने वाले पशु एवं अनुपयोगी पशुओं, दूध देने वाली अथवा न देने वाली गायों को भी अपने यहाँ गोडों में रखकर चारे का प्रबन्ध करते थे। भारत की धर्मप्राण हिन्दू जनता सेवा कार्य में विश्वास रखती थी शादियों का सीजन था, शादियां लोग अत्यंत कम आयु में ही अपने बच्चों की कर देना धर्म का पुनीत अंग मानते थे।

मैं उस समय कक्षा 8 का छात्र था। घर मे रोटी थी, यद्यपि मैं अत्यंत कमजोर कद काठी का था। मेरी शादी के लिए रिश्ते आने लगे, माता को ही मेरी शादी की बहुत चिन्ता थी। घर में उन्हें सहयोगी बहू की आवश्यकता थी कहीं रिश्ता लौट न जाये, जिसके लिए नाली में साबुन घोल–घोल कर बहाया जाता था, जिससे आने वाले मेहमान जानें कि इनका रहन सहन स्तर अच्छा है। इनके परिवार में साबुन का भी अच्छी मात्रा में प्रयोग होता है।

जैसा कि मैंने ऊपर उल्लेख किया कि लोग उस समय अनुपयुक्त पशु भी पालते थे, मेरा एक समवयस्क, कुछ उम्र में बड़ा कंधई लाल नाम का मित्र था जिसके घर पर अप्रशिक्षित बैलों की एक जोड़ी बँधी थी। गन्ने की छिलाई के समय वह गन्ना छीलकर लाता और उन्हें घर पर ही चारा खिलाता था। बैलों को कभी–कभी गन्ने वाले खेत तक लहडू में जोड़कर ले जाता और लहडू पर अगौले लादकर घर तक आता बैलों को आगे जाने का प्रशिक्षण नहीं मिला था।

उन दिनों वर की तलाश में, कन्या वालों का भ्रमण जोरों पर था। मेरे घर पर भी हमारे निकट के रिश्तेदार जो समाज में अच्छी पकड़ रखते थे। एक रिश्ता लेकर आये, उनके साथ कन्या के पिता समेत एक महात्मा, जिन्हें फक्कड़ बाबा कहते थे भी आये थी महात्मा जी अपने गेरूआ लिबास में सिर पर साफा बाँधे हुए जो अपने पूर्व जीवन में शातिर रहे होंगे, टीम के साथ विराजमान थे।

किसी प्रकार से रिश्ता तय हो जाये अतिथि लोगों की खूब आवभगत की गई। उस समय की परम्परा के अनुसार कन्या का पिता यदि रिश्ता देखने जिस परिवार क्या गाँव में जाता, खाता पीता नहीं था। अतः कन्या के पिता को अपने साथ लाये अल्याहार से समय काटना पड़ा।

सवेरे उस टीम को विदा करना था, मेरे को उन्होंने ज्योतिषीय अवरोधी के कारण पसन्द नहीं किया हलवाहे, हल लेकर खेतों में चले गये थे मेरी माता जी ने मुझे आदेश दिया कि मेहमानों को लहडू में बिठाकर रेलवे स्टेशन तक भेज दो। मेरे दिमाग में आया कि क्यों न अपने मित्र के अप्रशिक्षित बैलों से लहडू में बिठाकर स्टेशन तक छोड़ दें, आनन फानन में बैल खोलकर लाये लहडू जोड़ कर मेहमानों को बिठाया, और लेकर चले बैलों ने निश्चित जाने के स्थान से आगे बढ़ने से खुद को रोका, एक बैल रास्ते में बैठ गया, महात्मा जी अपने लिबास के साथ, कन्या के पिता के साथ उतर कर लहडू की जुँअर उठाने लगी, उनके लिबास से भड़क कर बैल उठकर भागा और सवार सभी लोगों के ऊपर लहडू पलट दिया, लड़की के पिता को भी चोट लगी। जैसे तैसे वह उठे और यह कहकर इस कन्या ने बहुत परेशान किया रेलवे स्टेशन की ओर टीम सहित ट्रेन पकड़ने हेतु रवाना हो गए।

(कुत्तों के हमलों का शिकार)

कुत्तों का मानव जीवन से जुडा पुराना रिश्ता है। ग्रामीण परिवेश में जब लोग जंगली पशुओं के शिकार में रूचि रखते थे, अथवा जंगली जानवर उनके खुले घरों में घुसकर उनपर हमला करते, अथवा कोई भेड़िया जैसे हिसंक जानवर उनकी बकरियों को, अथवा बच्चों को शिकार बनाने की कोशिश करते तो यह स्वामि भक्त पालतू कुत्ते उनके बचाव में मालिक को सचेत करते हुए उनसे भिड़ जाते थे।

अधिक सर्दी में कुत्ते पालतू होने पर भी कभी–कभी अपने अस्थिर दिमाग से झुंड बनाकर लोगों पर हमला कर उन्हें जख्मी बना देते थे कहते हैं कि जब किसी मृतक पशु की देह को गीध, आदि पक्षी खाते थे और हिसंक कुत्ते

भी माँस खाने के लालच में वहाँ पहुँचकर पशु के शव पर पड़ी हुई पक्षी की बीट को खा लेते थे। तो वह निश्चित पागल हो जाता था और जिस व्यक्ति को या पशु को वह काट लेते, वह भी भौंक–भौंक कर कुत्ते जैसा मर जाता था। मैंने फर्रूखाबाद जाते समय एक बच्चे को बस के अंदर, जो अपने पिता के साथ उपचार कराने जा रहा था, रास्ते में इसी प्रकार मरते देखा है।

बचपन में, खेलते वक्त मैं अपने छोटे भाई के साथ एक घर के पीछे गया, जहाँ मुझे देखते ही दो कुत्तों ने मुझ पर हमला कर दिया मैंने अपने छोटे भाई को अपने आगे छिपा लिया, एक कुत्ते ने मुझे मेरे नितम्ब (चूतड़) में काट लिया, किसी व्यक्ति के देख लेने पर उसने कुत्तों को ललकारा, और मैं घर वापिस आ गया। मैं अपने माता–पिता से बहुत डरता था घर आकर नहीं बताया लेकिन मेरे छोटे भाई ने मेरी माता जी को सारी बात बता दी। तत्कालीन उपचारों में, कुम्हार के चाक की मिट्‌टी लाने के लिए मुझे दूसरे गाँव भेजा गया जो उस समय उपचार के काम आती तथा मट्‌ठे के साथ मन्त्र पूरित चने की दाल पर एक माह रखा गया। यद्यपि कुत्ता पागल नहीं था और मैं ठीक हो गया।

द्वितीय बार जब मैं कुत्तों के हमले का शिकार हुआ, मैं कमजोर शरीर वाला, कक्षा सात का एक छप्परपोश प्राइवेट स्कूल में पढ़ने वाला छात्र था, उस दिन मेरा संस्कृत का पेपर था, पड़ोस में रहने वाला एक छात्र जो मुझसे अगली कक्षा में पढ़ता था, मैं उसे साथ में लेकर चलने के लिए बुलाने गया, उसके यहाँ कई पालतू कुत्ते और कुतिया पली थी उसका परिवार घर के अंदर था कुत्तों ने हमला कर दरवाजे पर ही मेरा स्वागत किया मेरे हाथ में मेरा पायजामा था, जिसे मैंने अभी नहीं पहना था। कुत्तों ने मेरा पीछा किया। और मुझे पास में बहने वाली एक नाली में गिरा दिया और हिंसक हुई एक कुतिया ने मेरी टांग में काट लिया, यह दृश्य दूर बैठे एक सज्जन व्यक्ति ने देखा तथा दौड़कर डन्डे से कुत्तों को भगाया, उस दिन मेरे पैर से खूब खून बहा, आसानी से मिलने वाली मकोय को मेरे पैर में पीस कर बाँधा गया। फिर मुझे साइकिल में पेपर दिलाने स्कूल भेजा गया।

मैं अपने जीवन में तृतीय बार भी कुत्ते के हमले का शिकार हुआ सर्दियों का मौसम था, जैसा मैंने बताया कि कड़ाके की सर्दी में कुत्ते हिंसक हो जाते हैं। उस दिन साइकिल से मैं ईंट भटटे पर ईंट क्रय करने हेतु ईंटे तय करने गया था मुंह में मफलर बाँधे, सर्दियों में पहनी जाने वाली ड्रेस में था, एक काले कुत्ते ने पीछे से मुझ पर हमला किया और काट लिया, उस समय भी मैं एक गाँव जहाँ एक मुसलमान सज्जन ऊँची जगह पर बैठकर टांग के नीचे से पीड़ित को निकालते थे, उनके पास मैं गया था। कहते हैं उन्हें किसी सन्त का वरदान था और वहाँ लोग प्रसाद वितरित करने पर ठीक हो जाते थे। इस बार भी यह कुत्ता पागल नहीं था।

जब मैं चौथी बार कुत्तों के हमलों का शिकार हुआ तो मैं अपने एक रिश्तेदार के पुत्र के विवाह में, उनके आग्रह से बाराती बनकर सम्मिलित होने गया था।

बारात गाँव में गई थी और उस समय के प्रचलन के अनुसार गाँव के प्राथमिक विद्यालय, जो प्रायः गाँव के बाहर ही होते थे, ठहराई गयी थी फर्श पर बिछौने थे बाराती खाना खाकर दरवाजे की रस्म कराकर लेट गये थे आपस में अधिक बातें करने के कारण मुझे देर से नीदं आई।

सुबह मेरी आँख जल्दी ही खुल जाती है, हल्के वस्त्रों के साथ मैं सुबह जल्दी उठा और लोटा लेकर मैं स्कूल के पिछवाड़े शौच के लिए गया मैंने धोती को दोबर कर लुंगी की तरह कमर में लपेट रखा था। धान के पुआल का एक ढेर जिसे गैरिया कहते हैं कुत्तों का एक झुंड बैठा था, मुझे देखते ही उन्होंने मुझ पर हमला कर दिया। मेरे बचाव के लिए तड़के सुबह वहाँ कोई न था, उस दिन मेरी उस लूंगी नुमा धोती ने लाठी का काम किया और मैंने साहस कर कुत्तों को पीछे ढकेल दिया और अपने को सुरक्षित बचा लिया। कहते हैं कुत्ते के हमले में यदि वह पागल न हो और आप स्थिर होकर उसका मुकाबला करें, तो उसके हमले से अपने को बचा सकते हैं। एक बुजुर्ग का कहना था कि यदि

कुत्ता पीछा करे तो उसे जमीन पर हाथ टेककर यह आभास कराना चाहिए कि वह भूमि से कुछ उठाकर उसे मारना चाहता है। आप अपने को बचा सकते है।

कभी–कभी चलती हुई, मोटरसाइकिल जैसे वाहनों पर भी कुत्ते दौड़ते हैं लेकिन यदि आपने वाहन रोका तो कुत्ते द्वारा काटे जाने की सम्भावना बढ़ जायेगी मगर दौड़ते हुए वाहन का पीछा करते हुए कुत्ते का मुँह खुला होता है और वह काट नहीं पाता है।

कहने का अर्थ यह है कि कुत्ते के काटने पर व्यक्ति या पशु को टीके जरूर लगवाना चाहिए दुधारू पशु को पागल कुत्ते द्वारा काटने पर उसके दूध का प्रयोग नहीं करना चाहिए और दूध बेचने वालों को उसका दूध जनहित में बिक्री नहीं करना चाहिए। जिससे किसी को कोई हानि न उठानी पड़े।

चीनी मिल के एक गेस्ट हाउस में एक बारात ठहरी हुई थी जिसमें भी मैं बाराती के रूप में सम्मिलित था, दरवाजे की रस्म के लिए सभी, उस कर्मी के दरवाजे पर गये जिसके यहॉ बारात आई।

अधिकांश बिस्तर गेस्ट हाउस के फर्श पर बारातियों के शयन के लिए बिछाये गये थे। संयोग से गेस्ट हाउस की एक खिड़की बिल्कुल टूटी हुई थी उसमें जब कोई व्यक्ति नहीं था एक कुतियां अपने पाँच सात पिल्लों के साथ, नाश्ते में छोड़े अवशेष को खाने के लिए घुस गई और भागते हुए कुतिया ने सारे बिस्तरों को अपने द्वारा त्याग किये गये मल से गन्दा कर दिया।

उस दिन बारातियों को वह रात्रि बाहर पड़ी कुर्सियों पर बैठकर काटनी पड़ी। शेष बचा उनके स्मरण के लिए कुतिया द्वारा किया गया उनका सर्वोत्तम स्वागत।

शब्दार्थ – मकोय – (ग्रामीण क्षेत्रों पाया जाने वाला औषधीय पौधा)

गैरिया– धान के पुआल का ढेर

गेहूँ बुवाई के लिए बीज ले जाते समय बैलगाड़ी से गिरे

गेहूँ की बुवाई का सीजन था, किसान अपने खेतों में गेहूँ, शाम होने से पूर्व, एक घण्टा या दो घण्टा पहले लेकर खेतों में जाते थे क्योंकि बुवाई के बाद गेहूं खेत की ऊपर पर्त पर पड़ा रहता था। रात्रि में ओस की बूँदे पड़ने से उसमें कुछ नमी आ जाती थी और सुबह जब उस बीज को मिट्टी में हल से हलका जोतकर दबाया जाता था, तो नम बीज का अंकुरण शीघ्र और अच्छा होता था। साथ ही, झुंड के झुंड गिरने वाली छोटी चिड़ियों से भी बीज की रक्षा होती थी और रात्रि में चिड़ियां अँधेरा होने के कारण किसान की मेहनत से बोये गये बीज को नहीं खा पाती थी।

मुझे याद है कि उन दिनो मेरी माता जी गेहूँ के इस बीज की अंकुरण क्षमता का आकलन, कददू के तने में भरकर करती थी गेहूं के बीज को गिनकर, इस तने में भरकर ऊपर से गोबर का लेप लगाकर

उसे सात दिनों के लिए किसी सुरक्षित स्थान पर रख दिया जाता था, फिर इस निश्चित अवधि के बाद उस तने से वह उन बीजों को निकालकर उन्हें गिनकर अंकुरित होने वाले बीजों की क्षमता का आंकलन करती और उसी अनुपात में न जमने वाले बीजों को बुवाई के समय होने वाली राशि में बढ़ाकर बोया जाता था, ताकि खेत में बीज की मात्रा कम न रहे।

यद्यपि उनका भंडारण प्रबंध तत्कालीन संसाधनों के हिसाब से बहुत उत्तम था, उनके बीज को बुवाई के समय लोग खरीद कर ले जाते थे।

ऐसी ही गेहूँ की एक बुवाई के समय, मेरे पिता जी ने एक ठाकुर को बटाई पर खेत दे रखा था। अपने चपल बैलों के साथ उसने बीज को बैलगाड़ी पर लादा, साथ ही उस समय, हल्के रूप में प्रचलित होने वाली प्लास्टिक के कट्टे में भरी, एक बोरी रसायनिक खाद को भी बैलगाड़ी पर रखा, मेरे पिता जी ने मुझे उसके साथ बैलगाड़ी में इस आशय से बिठा दिया कि कहीं वह कुछ बीज की, उनकी अनुपस्थिति में बचत न कर ले।

गाड़ी खुली हुई थी उसमें पड़ने वाले जतुएँ भी नहीं थे, रास्ता ऊँचा नीचा था, जैसा कि उन दिनों बरसात के बाद कच्चे मार्गों में हो ही जाता था, मैं प्लास्टिक के खाद के उस कटटे पर बैठा हुआ था। गाड़ी वान शीघ्रता से खेत में पहुँचने के लिए गाड़ी दौड़ा रहा था, मैं एक जगह, इस ऊँची नीची भूमि से गाड़ी दौड़ते समय उस कटटे से सरका, और दूर जा गिरा, संयोग ही था कि मैं सरक कर पहिये के बीच में नहीं गिरा, नहीं तो मेरे दोनों पैर टूट जाते और मैं आजीवन विकलाँग हो जाता।

ईश्वर हमें पल–पल बचाता है मेरी उम्र छोटी थी लेकिन प्रभु ने मुझे अपने होने का आभास दिखा दिया। ज्ञान और समझ ईश्वर ने मनुष्य को जो दी है उसे उससे अपनी रक्षा का विवेक रखना चाहिए।

शब्दार्थ – जतुएँ– बैलगाड़ी में सवारी की सुरक्षा हेतु लगने वाली लकड़ी

कद्दू – एक बड़े आकार की सब्जी, जिसकी बेल छतों पर जमीन में उगने के बाद फैल जाती है।

पढ़ाई के वक्त बर्रो का हमला

डंक वाली बड़ी मक्खी, जिसे हम बर्र कहते है, अनेकों की संख्या में बरसात के नम मौसम में अपनी उपस्थिति से मनुष्य के घरों की छतों में छत्ता निर्माण कर अपनी उपस्थिति से अवगत कराती है। विशेषकर उन स्थानों पर जहाँ गुड़ या राव के मटकों का भंडारण किया गया हो इसे गुड़ बड़ी पसन्द है।

अपनी छठी कक्षा की पढ़ाई के समय, मैं पैदल ही दो किलोमीटर दूर पड़ने वाले स्कूल जाया करता था उस दिन मुझे कुछ देर हो गई अपने थैला नुमा किताबों के बस्ते को पीठ पर टाँगे, जल्दी विद्यालय पहुँचने के लिए शार्ट कट रास्ते से पायजामा कँधे पर डाले, शीघ्रता से जा रहा था कि पड़ोस के एक कच्चे घर जिसमें सम्भवतः राब की कलसियां रखी थी। राब को खाकर दीवाल के छेद से निकलने वाले बर्रो के झुंड ने मुझ पर हमला कर दिया। मुझे खूब डंक मारे मैं वापिस भागता

हुआ घर लौट आया क्योंकि मेरे शरीर पर पित्ती (छपकी) का उभार खूब हो गया था, तथा शरीर पूरी तरह सूज गया था।

उस दिन घर वापिस आने पर मेरी माता ने बर्रो के डंकों को शरीर से बीन कर निकाला, गेरू मिलाकर मीठे गुलगुले बनाकर मुझे खिलाये ठीक होने में लगभग एक सप्ताह का समय लगा। गन्ने की खड़ी फसल में भी, मिठास के कारण बर्रे छत्ता बना लेती हैं। जिन्हें ततैया कहते हैं। यह बड़े जोर से डंक मारती है।

शहद की मक्खी भी छत्ता बनाकर शहद इकट्ठा करने के लिए छत्ता पेड़ों पर बनाती है। शहद तोड़ने वाले कुछ पेशागर मनुष्य छत्ता तोड़कर शहद निकाल लेते हैं। बाज पक्षी द्वारा इन्हें छेड़ने पर भी यह मक्खियां भड़क उठती हैं।

एक बार मैं अपने विद्यालय में अपने कुछ छात्रों के साथ, उन्हें सर्दी में चटाई पर मध्यावकाश में धूप सेवन कराने हेतु बैठा था, मेरे बैठने के स्थान से कुछ दूर एक पाकड़ का पुराना पेड़ था, पेड़ पर मधुमक्खी का छत्ता लगा था सहसा

मधुमक्खियों का झुंड ऊपर मंडराने लगा और कुछ बच्चों सहित, मेरे को–चिपटकर डंक मारने लगा मैं और बच्चे तितर बितर होकर भागे। संयोग से दूर एक किसान, धान का पुआल अपनी बैलगाड़ी से लादकर ला रहा था। उसने पुआल को थोड़ा उठाकर बैलगाड़ी से उतरकर, जलाकर धुँआ किया और मधुमक्खी को धुएँ से भगाया। बाद में एक बूढ़ी ग्रामीण महिला ने मेरे शरीर से उन डंकों को निकाला, और पीड़ित स्थान पर अमचूर का लेप लगाया।

मधुमक्खियाँ, मोटर साइकिल से जाते हुए सवार पर भी, यदि वह पहले से किसी द्वारा छेड़ी गई हो, हमला करती है, यदि सवार कुछ तेज गति से निकल जाता है तो यह उससे चिपट नहीं पाती मधुमक्खी यदि बहुत अधिक डंक मारे तो पीड़ित की मृत्यु भी हो जाती है। कहते हैं, इसके मारे गये डंक का विष कुछ व्यक्तियों पर ज्यादा असर करता है और कुछ पर बिल्कुल नहीं यह भी मनुष्य की प्रकृति पर निर्भर है।

शब्दार्थ – राब (गुड़ का पतला स्वरूप)

कलसी–मिट्टी बरतन जिसमें राब रखी जाती है।

पैरों में दर्द एवम् मोच की पीड़ा

पैर जब ऊँची नीची जमीन पर, बराबर नहीं पड़ता है तो उसके पंजे में, पैर के टखने के मुड़ने से भयंकर पीड़ा पैदा हो जाती है, जो प्रायः हल्की–फुल्की दवा या पट्टी से ठीक नहीं होती है।

एक बार जब मैं पैर की मोच से पीड़ित हुआ उस समय एक नल का मिस्त्री, जिसका औजारों का थैला उसकी साइकिल के कैरियर पर बँधा था, कच्चे रास्ते में जो मेरे घर के सामने थी, खड़ा करके अंदर काम करने चला गया, उसी समय एक गाड़ीवान रास्ते से निकलने के लिए गाड़ी लेकर आ गया। मैने उस मिस्त्री की साइकिल को भारी भरकम थैले के साथ हटाकर पास में बहने वाली नाली के पार खड़ा करना चाहा, किन्तु मुझसे साइकिल न सधी, क्योंकि मैं उम्र में छोटा था, अस्थिर होकर मुड़ा और मेरे एक पैर में मोच आ गई, मैं काफी दिनों तक उससे परेशान रहा, घरेलू उपचार किये फायदा नहीं हुआ। उस समय एक बुजुर्ग हसिये से मन्त्र पढ़कर, पैर पर फिराते थे, और उनके दो–चार बार के इलाज से आराम हो जाता था। मैं भी उनके इस उपचार से ठीक हुआ।

मुझे नही मालूम, आज की पीढ़ी इन उपचारों पर कितना विश्वास करती है। अथवा इन सिद्ध साधकों की सिद्धियों को कोई प्राप्त करना भी चाहता है या नहीं, लेकिन वर्तमान में इन उपचारों का अभाव तो अवश्य होता जा रहा है। इतना तो जरूर हैं। कृषकों के पशुओं को माल ढोते समय अथवा हल से जुताई के समय उनके कंधों में मोच आ जाती थी, जिसे झींटा या झटका लगना कहते हैं इसी प्रकार के मन्त्र उपचारों से ठीक किया जाता था। उस समय अधिक सूजन के कारण पशु वजन नहीं ढो पाता था। ताज्जुब यह है कि मन्त्र से वह झींटा, उस व्यक्ति द्वारा बाँस की लकड़ी पर उतारा जाता, और वह लकड़ी चटक जाती थी। दूसरी बार भी मैं पैरों के भूमि पर बराबर न पड़ने के कारण, मोच से पीड़ित हुआ और उस समय मैं इसी प्रकार के कुशल व्यक्ति की खोज में उसे ढूढता रहा, परन्तु वह न मिला हाँ एक व्यक्ति ने उपचार, उसी प्रकार किया लेकिन फायदा पहले जैसा नहीं हुआ। पता नहीं समय के प्रभाव से लोगों में सत्य का अभाव होने से लालच का भाव मन में आने से इस प्रकार के उपचार अब फायदा नहीं करते हैं। इस उपचारों का असर उन पर विश्वास करने से तथा उपचारकर्ता की पवित्र मनोदशा, एवम् सिद्धि पर भी निर्भर करता है। ऐसा मेरा विश्वास है।

सारांश यह है कि इस प्रकार के निःशुल्क पराम्परागत उपचारों को भी प्रोत्साहन देना चाहिए, जिससे हमारे पूर्वजों द्वारा संजोयी आशीर्वादात्मक इन विरासतों का लाभ भी हम उठा सके।

(साइकिल से गिरने पर पैर में चोट)

साइकिल का भी एक जमाना था। खाते पीते घर के माने जाने वाले मेरे पिता जी, प्रति वर्ष नई साइकिल खरीदते, पुरानी किसी व्यक्ति के आग्रह पर उसे आधे से भी अधिक मूल्य पर दे देते, साइकिल सीखने या उस पर थोड़ी सी भी सवारी करने के लिए, सवेरे से ही अनेक युवा उनके दरवाजे पर खड़े रहते, कि थोड़ा सा कहीं यह हमें काम बता दें और साइकिल से जाने को मिल जाये और शौक पूरा हो जाय।

कई—कई बार खीझ कर वह उनसे कहते, ठीक है चलो मैं पास में स्थित कस्बे में जा रहा हूँ, मेरे साथ चलो, साइकिल सीखने के लालच में लोग उनकी साइकिल को धक्का देकर कच्ची रेतीली रास्तों पर चलाते

पिता जी खुद वगैर चलाये, साइकिल के पैडलों पर पैर रख लेते और कस्बे या शहर आते जाते थे।

किसी व्यक्ति को यदि उसके विवाह में साइकिल, घड़ी या उस समय के प्रचलन में आने वाले ट्राँजिस्टर, दहेज के रूप में प्राप्त हो जाता, तो उसे एक भी चीज मिलने पर बड़ी खुशी होती, कि उसे बहुत कुछ मिला है। मुझे तो अपने विवाह में घड़ी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिला, बारात जरूर पाँचवे दिन वापिस आई। शादियां वगैर दहेज, बारातियों की खातिरदारी पर ही हो जाती थी। दहेज में मिलने वाली साइकिल पर जब दूल्हा बैठकर निकलता था, वह अपने को बड़ा ही खुश किस्मत समझता था। सवा रूपये से सगुन की रोक मैने आँखों से देखी है।

मैं उस समय कक्षा छः का छात्र था, घर में उस समय दो साइकिल मौजूद थी, नई साइकिल लेकर पिता जी अपनी साइकिल को धक्का लगवाते हुए शहर चले गये। माता जी खेत पर मुझसे, यह कहकर निकल गई कि खेत जोतते हुए हलवाहों के लिए घर में तैयार कलेवा लेकर खेत पर आना।

समयानुसार मैंने अभी साइकिल चलाना बहुत कम ही सीखा था। कलेवा उठाया, डोलची में पानी भरा। डोलची को साइकिल के हैन्डिल से लटकाया, कैरियर पर कलेउ रखा, और अकड़ के साथ चल दिया, रास्ता एक बाग के पास रेतीला था, मोड़ते ही साइकिल फिसली कलेउ बिखर गया, पानी की डोलची रेत में गिरकर खुल गई, मेरा एक पैर साइकिल के फ्रेम में इस तरह फँसा, कि मैं उठने की कोशिश करता तो पैर के साथ सारी साइकिल उठती, बैठने पर पूरे शरीर का वजन पैर पर था, मैं पीड़ा से कराह उठा, जैसे तैसे पैर फ्रेम से बाहर निकला और टूटने से बच गया, मैं उस दिन न तो खेत पर पहुँचा ना ही स्कूल गया।

कलेवा खेत पर न पहुँचने पर मेरी माता जी घर आयी तथा दोनों कारणों पर मुझसे स्पष्ट उत्तर माँगा, मेरे कारण बताने पर भी उन्हें गुस्सा आया और पीटते हुए दो किलोमीटर दूर, मेरी पढ़ाई के स्कूल तक ले गई। उनकी वह डाँट मेरे लिए वरदान सिद्ध हुई। कालान्तर में शिक्षित होकर सरकारी सेवा में लग गया, अच्छा सम्मानित जीवन जिया। आज

मैं अपनी माता जी को उनके असीम उपकार के लिए नमन करता हूँ और साइकिल सीखने के दिन को याद भी।

(रिश्तेदार की बन्दूक की फायर से बचे)

यह बात उन दिनों की है। जब जनता के गिने चुने जमीन, सम्पत्ति वाले उन लोगों को सरकार, बन्दूक (आग्नेय अस्त्र) का लाइसेन्स देती थी, कि वह स्वयं या अपने गाँव मोहल्ले या खेती के निकटवर्ती बसने वाले, पड़ोसियों का, उस समय पड़ने वाली, चोरी, डकैतियों या जंगली हिंसक पशुओं से होने वाली हानि से अपनी रक्षा कर सके। कभी–कभी नरभक्षी हिंसक जानवरों की शिकार पर भी उन्हें पुरूस्कार के रूप में सरकार द्वारा अस्त्रों हेतु लाईसेन्स दिये जाते थे।

कालान्तर में सम्भवतः जब हरे भरे प्रकृति के सुरम्य वातावरण में पलने वाली इन प्रजातियों का लोग शिकार से क्षरण करने लगे, उनके संरक्षण संवर्धन हेतु इस प्रकार के लाइसेन्सों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

इस प्रकार की दोनाली एक विदेशी बन्दूक, मेरे पिता जी के पास भी थी जो स्वयं की सुरक्षा हेतु उन्होंने ले रखी थी। मुझे याद है कि जब मैं बहुत छोटा था, तब उन्होंने अपने घर पर पड़ने वाली, डकैती को बड़े साहस से इस बन्दूक के सहारे रोका था, घर की रसोई में दीवाल के सहारे वह अपनी बन्दूक लोड किये खड़े रहे मेरी माता जी कारतूसों की पेटी के साथ उनके पास खड़ी होकर उनका साहस बँधाती रही। मैंने दूर खड़े डकैतों के एक गिरोह को अपनी आँखों से, अपनी छोटी अवस्था में देखा था। उनके द्वारा मुकाबले की स्थिति भाँपकर गिरोह के सदस्य वापिस लौट गये और हम लुटने से बच गये। बाद में उन्होंने पड़ोस के गाँव में डकैती डाली महिलाओं को जलाया लूट की, माल बँटवारे के समय गोली चली गिरोह का एक सदस्य अपने साथी की गोली से भी मारा गया। कभी–कभी इन बन्दूक धारी लाइसेन्स धारकों द्वारा आकाश मार्ग से सर्दी के मौसम में आने वाली, प्रवासी पक्षियों की प्रजातियों का उनके मांस के लोभ के कारण शिकार किया जाता था। जिसमें हरियल, धनमानस नामक पक्षी भी मांस के लिए शिकारियों द्वारा अच्छे माने जाने के कारण मारे जाते थे।

ऐसे ही एक शिकारी को लेकर मेरे एक मामा जी मेरे घर पर आ गये, और मेरे पिता जी से अनुरोध किया कि वह उन्हें अपनी लाइसेंसी बन्दूक दे दें, जिससे पास में पड़ने वाले बड़उआ नामक बरसाती नाले, में गिरने वाली मुरगाबी (चक्रवाक) पक्षियों का शिकार कर सके, मामा जी की सिफारिश पर पिता जी ने उन्हें अपनी बन्दूक और दो कारतूस देकर विदा किया। कारतूसों को शिकारी सज्जन ने तुरन्त बन्दूक की नाल में भर दिया। एक किलो मीटर दूर अधिक जल फैलाव वाले, स्थान पर शिकारी महोदय बन्दूक लेकर शिकार के लिए जाकर खड़े हो गये। मुरगाबी, अपने ग्रुप में कतारबद्ध, होकर आकाश में उड़कर नाले की अधिक जल राशि वाले स्थान पर जा रही थी उन्होने शिकार के लिए झुंड पर निशाना लगाकर फायर झोंका, लेकिन पक्षियों को फायर न लगा और वह उड़ता हुआ झुंड कतार से तितर बितर हो गया। शिकारी यह कहते हुए , वह लगी, वह गई, हड़बड़ी में दूसरा फायर भी अपने स्थान से मुड़कर खोल बैठे, सामने हम और हमारे मामा जी खड़े थे, दो फिट की दूरी पर फायर जमीन पर पड़कर नीचे धँस गया और हम लोग बाल–बाल बचे परमात्मा ने यह अनुभूति करा दी कि इस प्रकार के तमाशे

देखने का परिणाम, इस बार तो बचा दिया आगे के लिए सजग हो जाओ।

(आधा शीशी की पीड़ा)

आधा शीशी की पीड़ा का अर्थ, मस्तिष्क के दायें या बायें भाग में पीड़ा या दर्द का उठना, यह पीड़ा जितना सूर्य ऊपर आकाश में चढ़ता जाता है, पीड़ा तीव्र से तीव्र होती जाती है। यह पीड़ा तभी होती है, जब मस्तिष्क के उस हिस्से में कुछ पानी का जुकाम के रूप में जमा हो जाना और कभी–भी यदि इसे ठीक न किया जाय, तो यह माइग्रेन जैसे दर्द का कारण बन जाता है। मुझे भी यह पीड़ा जीवन में दो या तीन बार हुई। और जिसने मेरे दैनिक, कार्य करने की क्षमता में बाधा पहुँचाई। और मैं पीड़ित रहा। कहते हैं कि परम्परागत हल्के उपचारों में यदि सतर्कता बरतते हुए, मस्तिष्क में इससे जमने वाले पानी को, छींकों द्वारा बाहर किया जाय, तो हमें इस पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है। मैंने भी नाक के नथुनों में कागज की बत्ती बनाकर सहलाया, नथुने के अन्दर बत्ती डालकर सहलाने से सरसराहट के साथ कई छीकें आई, और मेरे

मस्तिष्क में जमा पानी बाहर हो गया। ध्यान रखा, कि नथुना, छिलने न पाये, हल्के इशारे से रगड़ने पर काम चल जाता है।

सुखाने वाली गर्म औषधी के प्रयोग से, पानी अधिक कठोर अवस्था में जमने का डर रहता है। और मस्तिष्क में अन्य बीमारियों का खतरा उत्पन्न करता है।

इसी प्रकार गुहारी, जो आँख की पलकों पर निकल आती है और अनेक बार कई–कई की संख्या में क्रमशः पलकों पर निकल कर पीड़ा देती है। परम्परागत इलाजों में वन्दन का, घी के साथ पलकों की साइड में लगाकर उपचार किया जाता था।

कभी–कभी लोग आम के पेड़ के पत्तों के डंठल को तोड़कर डंठल के मुख वाले सिरे को पलकों पर छुआते थे, और इन गुहेरियों को ठीक करते थे।

आजकल आधुनिक चिकित्सा पद्यतियों में अनेक लाभदायक उपचार लोगों को उपलब्ध हैं। जिनका उपयोग कर लोग, इस प्रकार की बीमारियों में लाभ उठाते हैं।

मगर मेरा मानना है कि इन परम्परागत गत उपचारों से देश, काल परिस्थिति के अनुसार, उपयोग को ध्यान में रखकर लाभ उठाना चाहिए। आधा शीशी के दर्द में लोग शनिवार या मंगलवार को गुड़ की छोटी ढेली के साथ सूर्योदय होने से पूर्व चौराहे पर जाते थे, और ढेली को दो टुकड़ों में दाँत से काटकर दो दिशाओं में फेंक कर वापिस मुड़कर पीछे न देखकर चले आते थे।

इसी प्रकार बुखार की तिजारी या चौथिया अवस्था में तन्त्र क्रिया के अनुसार बिना बोले किसी खेत से दो ढेले उठाकर, एक–एक कर यह कहते हुए विपरीत दिशाओं में फेंक देते थे, और बोलकर चले आते थे, कि जब एक साथ मिलना, तभी यह ज्वर पास आये और बुखार ठीक हो जाता था। मुझे नहीं पता आज के परिवेश में यह सब कितना उपयोगी है। या कितना परीक्षण में लाया जाता है।

(बदमाशों की फायर से बचे)

यह वह समय था, जब परम्परागत खेती के संसाधनों को उन्नत स्तर प्रदान करने हेतु, विकास खण्ड स्तर पर सरकार ने गहाई में प्रयुक्त होने थ्रेसर और ट्रेक्टर भेजे थे, जो किसानों को उस समय की किराये की दर पर गेहूँ की गहाई हेतु उपलब्ध कराये जाते थे। मेरे द्वारा पूर्व में बुक कराये गये ऐसे ही, विकास खण्ड कार्यालय पर उपलब्ध एक ट्रेक्टर को थ्रेसर सहित लेकर उसका सरकारी ड्राईवर रात्रि 8.00 बजे मेरी तलाश में मेरे गाँव पहुँचा और गहाई में थ्रेसर के अंदर, गेहूं की मोख लगाने वाले मजदूर को उपलब्ध कराने को कहा। क्योंकि कुशल व्यक्ति ही मोख लगा पाता था।

गेहूँ की कटाई करने वाले एक मजदूर के साथ देर रात्रि मजदूर की तलाश में मैं, पास के एक गाँव में ऐसे कुशल व्यक्ति के पास जा

रहा था, कि रास्ते में बदमाशों ने मुझे घेर लिया। एक व्यक्ति ने मेरे सिर के ऊपर हाथ से उठाये काँते को ताना, दूसरे ने तेज रोशनी वाली टार्च डालकर मेरी आँखों को बन्द किया, तीसरे ने तमन्चा मेरे सीने पर रखा, परन्तु चौथे ने मेरा बचाव करते हुए अपने साथियों से कहा, अरे इन्हें जाने दो यह कोई हमारे दुश्मन नहीं है। इसकी इतनी बात सुनकर उन्होंने मुझ पर दया करके छोड़ दिया, और हम अपने गन्तव्य पर पहुँच कर, कुशल मजदूर को लाये। और अपना कार्य सम्पन्न कराया। अगले दिन उसी गाँव के एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई जिसकी दुश्मनी थी। हमारा किसी से वैर नहीं था। और हम प्रभु की दया से बदमाशों का मन्तव्य पलटने से बच गये।

एक बार पुनः मेरे घर से कुछ दूर एक छोटे टीले पर कुछ लोगो ने जो शराब पिये हुए थे। छत पर खड़े हुए, मुझ पर रात्रि के दस बजे के बाद टार्च की रोशनी में फायर दाग दिया, जिसके छर्रे घर के अन्दर गिरे और मैं बाल–बाल बचा, फायर चलाने वालों का पता मैं नहीं लगा सका।

एक बार गाँव में एक विवाह पार्टी, ट्राली से विवाह कराने आई दरवाजे से निकलती हुई ट्राली में बैठे हुए एक व्यक्ति ने जोश में आकर अपनी इकनाली बन्दूक से हर्ष फायरिंग झूमते हुए कर दी, छत पर बैठे पड़ोसी लोग बाल–बाल बचे, मेरे पिता जी मुझे लेकर उस बारात में जहाँ वह ठहरी थी, गये और विरोध प्रकट करते हुए उसके इस कृत्य की निन्दा की।

ऐसे ही गाँव में तिलक चढ़ावे की रस्म में, मोहल्ले के व्यक्ति का एक किशोर वय बालक, समारोह को देखने गया था, शराब पीये लोग बढ़ चढ़कर हर्ष फायरिंग कर रहे थे, एक व्यक्ति द्वारा की गई फायर से किशोर को गोली लगी और वह वहीं ढेर हो गया।

सरकार द्वारा वर्तमान में, इस हर्ष फायरिंग पर रोक लगाई गई। और झूठी शेखी प्रदर्शित कराने वाली इस प्रथा का किसी सीमा तक अन्त हुआ हम सोचते है कि कितनी बदल गई हमारी आज की पीढ़ी।

शब्दार्थ –

मोख– गेहूँ के पौधों को गहाई हेतु मशीन में लगाने की प्रक्रिया।

काँता –बाँस की लाठी के अंतिम हिस्से में लगा लोहे का धारदार हथियार।

(बिच्छू दंश (डंक) का शिकार हुए)

कहावत है कि साँप का काटा सोवे, और बिच्छू का काटा रोवे, अर्थ यह हुआ कि साँप के काटे से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, और बिच्छू के काटने से व्यक्ति रोता, एवम् अत्यंत पीड़ा से चीखता चिल्लाता है। मेरे साथ भी बिच्छू के द्वारा डंक मारने की प्रथम बार जब घटना हुई, उस समय घर में मेरी शादी की तैयारियां चल रही थी, मेहमान उन दिनों एक या दो दिन पूर्व शादी वाले घरों में पहुँच जाते थे, और उनके स्वागत में रहने ठहरने के लिए बिस्तर और चारपाइयों की व्यवस्था करनी पड़ती थी। एक दिन पूर्व संध्या के समय जब मेहमानों की संख्या बढ़ी, तब हमें उनके लिए पड़ोस से चारपाइयाँ मांग कर लानी पड़ी जो गाँव में उस समय आसानी से मांगने पर मिल जाती थी, घर में पिता जी के बाद मैं ही बड़ा था और स्वयं ही इस प्रकार की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ले रखी थी। रात्रि 8 बजे के अँधेरे में एक सहयोगी के साथ में कच्चे रास्ते से गुजरते हुए इस व्यवस्था में लगा था, कि मार्ग में पड़े एक बिच्छू पर मेरा पैर पड़ा, मैं हवाई चप्पल पहने था, बिच्छू बहुत जहरीला था, पैर से

दबने पर उसने तेजी से मेरे पैर में डंक मारा, बिच्छू के विष ने मेरे शरीर को पसीना–पसीना कर दिया, भंयकर पीड़ा शुरू हुई तैयारियां धरी की धरी रह गई घरेलू उपचार किये गये, रात भर दर्द से मैं चीखता–चिल्लाता रहा, नींद आने का प्रश्न ही नहीं, पिता जी ने भी वह रात्रि जागते हुए मेरे साथ काटी, सुबह बारात जानी थी, पीड़ा युक्त मैं कुछ खा पी नहीं सका, बिच्छू के डंक ने स्वास्थ्य पर असर डाला, शादी के लिए मैं उसी हालत में कुछ राहत के साथ शादी वाले घर में पहुँचा।

एक बार फिर से मैं बिच्छू के दंश से पीड़ित हुआ। उस समय मेरी शादी हो चुकी थी, गर्मी के दिन थे, मैं एक छोटे बरामदे में लेटा हुआ था, जल्दी सवेरे उठने की आदत ने मुझे उठाया खूँटी पर मेरी शर्ट टंगी थी, मैने उतारकर जैसे ही शर्ट पहनी बिच्छू ने हाथ में डंक मार दिया, इस बार का बिच्छू अधिक विषैला नहीं था। अधिक दिनों तक मैं पीड़ित नहीं रहा तीन चार दिनों में मैं ठीक हो गया।

बिच्छू अपनी उम्र और रंग के कारण अधिक या कम जहरीला माना जा सकता है, लाल रंग का कम जहरीला, परन्तु काले रंग के बिच्छू में अधिक जहर पाया जाता है। इसके पूँछ की नोंक के हिस्से को डंक कहा जाता है। जिसमें जहर होता है एक व्यक्ति को मैंने सावधानी से बिच्छू को लकड़ी से दबाकर उसके डंक को हल्के से पत्थर पर घिसटते देखा है, बाद में उसने उसको उठाकर हथेली पर रखा और उसको लेकर घूमता रहा, लेकिन उसे बिच्छू द्वारा डंक मारे जाने का अब कोई डर नहीं था। अधिक विषैले बिच्छू के डंक से लोगों की मृत्यु तक होती है।

इसके परम्परा गत उपचारों में, कुछ लोग मरी हुई छिपकली को एक काँच की छोटी शीशी में डालकर गोबर में महीने या पन्द्रह दिन तक गाड़कर रखते थे। और फिर उसको निकालकर जब कोई बिच्छू डंक मारता, हल्की रूई की फुरहरी से पीड़ित स्थान पर लगाते थे। मुझे नहीं पता कि उस समय यह प्रयोग कितना लाभकारी होता था, टाट के संग्रहित बोरे में जब उनमें नमी होती है। बिच्छू पैदा होने का डर रहता है।

(मलेरिया बुखार की पीड़ा)

मलेरिया बुखार से बचने के लिए मच्छरों से बचाव जरूरी है

बुखार की पीड़ाओं में, जो कई प्रकार से अपनी उपस्थिति से मनुष्य को परेशान करता है मलेरिया ज्वर का शरीर को कमजोर करने में बहुत बड़ा हाथ है। बदलती ऋतु में हिमालय की तलहटी वाले तराई क्षेत्र के जनपदों में इसका प्रकोप अधिक रहता है। जब आधुनिक उन्नत चिकित्सा संसाधन नहीं थे तब कभी–कभी घर के सम्पूर्ण सदस्य क्या मोहल्ले, गाँव के अधिकांश लोग इस बीमारी की चपेट में आ जाते थे। जानकारों का कथन है, कि इसके फैलने के मुख्य कारणों में मच्छरों का काटना ही होता है। मच्छर दूषित जल जमाव वाले स्थानों में बरसात के अंत में प्रजनन कर अपनी संख्या में वृद्धि करते है, और पशुओं तथा मनुष्यों को काटकर बीमार कर देते हैं।

लोग अपने पशुओं के बाँधने के स्थान पर धुआँ कर इनसे उनका बचाव करते थे। पशु इनके काटने से एक स्थान पर आराम से खड़ा नहीं रह पाता। दुधारू पशु पीड़ित होने पर ठीक से दूध नहीं दे पाता।

मुझे भी मलेरिया ज्वर ने एक बार आ घेरा, हाथ पैर ठंडे पड़ जाते और मुझे जोर से ज्वर चढ़ आता। मुझे बुखार में भूख कम हो गई, कड़ुआ–कड़ुआ सा मुँह का स्वाद हो गया, कुछ खाने की जी नहीं चाहता और मैं परेशान रहने लगा, काफी कुछ इलाज के बाद मैं ठीक हुआ।

वैसे तो बुखार शरीर की बीमारी की एक सामान्य प्रक्रिया है। लेकिन पुराने जमाने के लोग, जब चाय का प्रचलन नहीं था, तो अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बुखार की पीड़ा में भी खूब शरबत पीते थे, और अपने को ठीक कर लेते थे, ऐसा मैंने उन बुजुर्गो से मिलकर बात की उनका कहना था कि वह कभी दवा नहीं खाते।

एक व्यक्ति तो कई–कई गन्ने का रस पेट भर कर बुखार में पीता था, यह उस व्यक्ति की प्रकृति पर रहा होगा। आज कल किसी को भी दवा लिये बगैर बुखार ठीक करना मुश्किल होगा। सो भी जाँच कराकर बुखार की प्रकृति पहचान कर, कुशल डाक्टर व्यक्ति की प्रकृति की जाँच कर उसके लिए दवा का निर्धारण करते हैं।

आजादी से पहले जब हम पर विदेशी शासन था, बुखार जनित प्लेग की बीमारी जो चूहों से फैलती थी, जिसमें पेट में गिल्टियां उभर आती थी, और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी। कहते हैं जब यह बीमारी महामारी का रूप लेती थी, तब गाँव के गाँव उजड़ जाते थे, और बचे हुए लोग दूसरी जगह जाकर बसते थे, आज कल इन वीरान मौजों का नाम कृषि अभिलेखों में अंकित पाया जाता है।

बदलते मौसम में बुखार जनित, बीमारियों से स्वयं की रक्षा जागरूक होकर करनी चाहिए, पोलियो जिसमें पीड़ित विशेषकर शिशु विकलांग हो जाते हैं। सरकार द्वारा चिकित्सा क्षेत्र में किये प्रयासों से लाभ उठाना चाहिए, तथा दूसरों को भी लाभ उठाने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

(भयंकर चक्रवातीय तूफान में फँसे)

चक्रवात से टूटी झोपड़ी में न जायें

तेज हवाओं के साथ, यदि पानी बरसने लगे, तो यह कभी–कभी एक चक्रवात के रूप में बदल जाता है। और घूम घूम कर नाचता हुआ, यह बवंडर अनेक पेड़ों, और गन्ने जैसी फसलें जो लम्बाई लिए हुए तने के साथ ही छोटी फसलों को भी धराशायी कर देता है। कभी–कभी यह कमजोर इमारतों को भी निशाना बना कर, गिरा देता है। इस बवंडर वाले तूफान का कोई मौसम नहीं होता है। यह सर्दी के मौसम में और घातक हो जाता है। जानकार बताते हैं, कि यह बवंडर वाला चक्रवातीय तूफान वातावरण में जलवायु के द्वारा बने विछोभ के कारण पैदा होता है।

एक बार जब मैं प्राइमरी स्कूल में छात्र था। उस समय बदलते मौसम में हवा का बवंडर बना उसने, खुले परिसर में कुछ प्रपत्र तैयार कर रहे मेज पर बैठे, मुख्य अध्यापक पर हमला बोल दिया, और बवंडर उनकी मेज से सारे प्रपत्रों को उड़ाकर तेज हवा के साथ आकाश में उड़ा ले गया। उस समय आवश्यक माने जाने वाले प्रपत्र

पाने के हेतु हम कई विद्यार्थी दो किलो मीटर तक उस बवंडर के पीछे गये, लेकिन प्रपत्र न मिले निराश सभी विद्यार्थी वापस विद्यालय लौट आये।

ऐसे ही एक चक्रवातीय तूफान में, मैं अपनी शादी के दो वर्ष बीत जाने के बाद फँस गया, पश्चिम दिशा में हल्की सी एक बदली आकाश में दिखाई पड़ी मैंने, अपनी धोती को दोबर लुंगी नुमा कमर में लपेटा, कमीज पहनी और बेंत हाथ में लिए दूर स्थित गन्ने के एक खेत की फसल देखने निकल पड़ा, आधे रास्ते को तय करने के बाद एक सघन बाग के निकट, एक व्यक्ति अपने खेत के बरहे से घास साफ करते हुए दिखाई पड़ा, जो अपने फावड़े से मिट्टी उठाकर बरहे की स्थिति को ठीक कर रहा था। थोड़ी दूर जाकर मैंने अपने खेत में जाकर अपनी फसल देखी, जैसे ही वापिस मुड़ा चक्रवातीय हवा ने तेज बारिश के साथ मुझे घेर लिया, बड़ी कठिनता से विपरीत दिशा की ओर हवा के वेग को, सहन करता हुआ मैं फावड़े वाले व्यक्ति के पास पहुँचा, जिसने पहले से ही बरसात, धूप, गर्मी से बचाव हेतु खेत में एक मड़ैया भी छा रखी थी। तेज घूमती हुई बारिश के साथ हवा ने मुझे निढाल कर दिया, बारिश के साथ हवा का इतना वेग था कि हम दोनों व्यक्ति पहले तो बचने के लिए उस मड़ैया में घुसे, लेकिन हवा के वेग से उस मड़ैया की दो थुनियां टूट गयी, और हमने मड़ैया की बीच की लकड़ी पर टंगी छप्पर की उस छावन के पीछे खड़े होकर दो मिनट इन्तजार किया, फिर बाहर आकर जैसे ही दूर खड़े हुए कि हवा ने हमें जमीन पर लेट जाने को विवश किया हमने अपनी लुंगी ओढ़ रखी थी जिस पर पानी की तेज हवा के साथ शरीर पर पड़ती बूँदें बेंत की मार की चोट का काम कर रही थी थोड़ी देर में हम दोनों निढाल हो गये, जब तक तूफान का जोर रहा बाग में आम के पेड़ की शाखाएं झुक–झुक कर भीगी हवा में धरती का आलिंगन करती रही तूफान थमने पर चारों ओर फसलें, खेत में बिछी पड़ी थी, और घर वाले खोजते हुए आये और हम लोगों को उठाकर घर ले गये, बाद में अखबार पढ़ने से अगले रोज पता चला कि तूफान एक सौ पचास किमी0 की गति से था जिसमें खीरी जिले में रामलीला का एक गेट गिरने से कई लोग मारे गये। मेरे प्रभु ने मुझे उस दिन भी बचा लिया।

(जब कान में कीड़ा घुसा)

कान में घुसने से बचायें

कान हमारे शरीर का श्रवण अंग है। हमें प्रकृति में होने वाली सारी गतिविधियों का आभास इस प्राकृतिक यन्त्र द्वारा हो जाता है। कभी–कभी इसमें होने वाली तकलीफों को हम अपने स्तर पर यदि कार्य में व्यस्त होने के कारण अनदेखा कर देते हैं, तो ईश्वर द्वारा दिये गये इस अमूल्य उपहार में विकृति का कारण बनते हैं।

एक बार ऐसा हुआ, कि मैं एक व्यक्ति के साथ उसकी बुलेट मोटरसाइकिल से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने गया, देर रात्रि कार्यक्रम की समाप्ति पर जब उसके साथ मैं वापस घर आ रहा था। तेज हवा के साथ बारिश होने लगी, मैंने अपने कानों के साथ सिर को नहीं ढका था, जब कि उस वाहन का चालक अपने सिर और कानों को ढके रहा, मेरे कानों में हवा और पानी की बूँदे प्रवेश करती

रही, चालक तेजी से मोटर साइकिल चला रहा था, बूँदों के आघात से मेरे एक कान में विकृति पैदा हो गई, और मेरे द्वारा लापरवाही करने पर उसमें आवाज सी गूँजती रहती है, जो बढ़ती उम्र में स्थायी बनकर रह गई है।

कभी कभी ऐसा भी होता है, कि हमारा दोष भी नहीं होता और अनचाही विपत्ति भी हमारा पीछा कर उठती है। एक बार मैं ससुराल गया, उस समय ससुराल वाले घर में भी कृषि कार्यो में प्रयुक्त होने वाले जानवरों सहित दुधारू पशु पाले जाते थे। तथा खेतों में पशुओं के लिए चारा बोते थे। और उसे काट कर घर लाकर वह लोग पशुओं के लिए चारा तैयार करते थे।

उस दिन मैं उनकी पशुशाला के निकट, जहाँ चारा काटने की मशीन रखी थी, एक चारपाई पर धूप का सहारा लेकर आराम से बैठा था, ज्वार के तीन या चार गट्ठर अभी मुश्किल से उन्होंने लाकर इकट्ठा किये होंगे, उसमें पलने वाले एक बड़े कीड़े ने मुझ पर हमला किया, और सीधे मेरे खुले हुए एक कान में घुस गया। कीड़े ने कान में घुसकर बड़ी हलचल मचाई न तो उसे वापिस लौटने के लिए कोई रास्ता था, उसका काम केवल अपनी जीवित अवस्था में कान में घुसकर मुझे पीड़ा पहुँचाना था।

मेरी बेचैनी देखकर मेरी पत्नी के एक चचेरे भाई मुझे पास में स्थित सरकारी अस्पताल ले गये, जहाँ चिकित्सक महोदय ने पिचकारी में दवा भरकर कीड़े को यमलोक पहुँचाया, तथा उसी पिचकारी के प्रेशर से कीड़े को कान के बाहर निकाला, बाद में हम लोगों ने पाया कि वह कीड़ा घरों में छत्ता लगाकर प्रजनन काल में रहने वाली पीली बर्रैया के बराबर था।

अगर यह पीली बर्रैया, कान के अंदर किसी कारण घुस जाये, तो काटकर अंदर सूजन पैदा कर देगी, और सूजन में कीड़े को कान से निकालना मुश्किल काम होगा, कान में यदि एक और विशेष प्रकार का कीड़ा प्रवेश कर जाय, तो व्यक्ति को पूरी तरह से बहरा बना देता है जिसे ग्रामीण भाषा में कानसलाई कहते हैं। इसमें कातरें (अनेक पैर वाला कीड़ा) होती है निकालने पर टूट–टूट कर निकलती है। एक

मुसलमान सज्जन ने बताया कि उनके साथ यह घटना घटित हुई, और वह बहरे हो गये। कान से बाहर निकालने पर कीड़ा टूट जाता है कातरें कुछ न कुछ कान में रह ही जाती है।

(पुलिस की भ्रामक मुठभेड़ से बचे)

छात्रावास
लुटेरों से इस ट्रक वाले को बचाओ

उस समय मैं विभागीय ट्रेनिंग हेतु चयनित कर भेजा गया था। हॉस्टल की ऊपरी मंजिल के जीने के निकट बने एक रूम में मैं रहता था। वहीं, एक कमरे में आठ प्रशिक्षार्थियों के रहने की व्यवस्था थी। उस समय प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को एक तख्त सोने के लिए, तथा साथ ही पढ़ने के एक छोटी मेज, किताबें रखने के लिए कमरे में बनी एक छोटी खुली हुई अल्मारी उपलब्ध कराई गई थी। कमरे की खिड़कियाँ भी कहीं–कहीं टूटी हुई थी, मुझे याद है कि सर्दी के मौसम की तीखी हवा में, अपने साथ ले जायी गई रजाई में ही सोना पड़ता था, जो यदा कदा बीमार होने से बचा नहीं पाती थी। हॉस्टल के नीचे के दो कमरों में वॉर्डन अपने परिवार के साथ रहते थे। ऊपरी मंजिल के, दोनों कमरों में संस्थान के प्रधानाचार्य अपने परिवार के साथ रहते थे। हॉस्टल अत्यंत खुले स्थान पर हाल ही में बनाया गया था। वॉर्डन साहब ने भैंस पाल रखी थी, जिसके लिए हॉस्टल के निकट वह भैंस के लिए हरा चारा बोया करते थे।

हॉस्टल में रहने वाले सभी प्रशिक्षणार्थियों में से कुछ अन्य जिलों से या दूर के रहने वाले भी थे, जो रविवार की साप्ताहिक पड़ने वाली संस्थान की छुट्टी में अपने घरों को नहीं जा पाते थे, और वही छात्रावास में ही रूके रहते थे। दूर से आने वाले विद्यार्थियों में मैं ही एक प्रशिक्षणार्थी था, जो छुट्टी में भी वही रूक कर पढ़ाई करता था।

उस समय छात्रावास से एक फर्लांग दूर से दक्षिण की ओर से, एक सड़क निकलती थी, और कुछ दूर उत्तर की ओर से भी एक सड़क शहर से निकलकर पूरब दिशा में एक छोटी नदी के निकट त्रिभुज बनाती थी। छात्रावास सहित प्रमुख संस्थान, एवम् कुछ अन्य सरकारी कार्यालय उस क्षेत्र में बने हुए थे।

रामलीला के मेले की तैयारियां जोरों पर थी। नगर में शिव बारात धूमधाम से निकलती थी। रात–रात भर नर्तकियां नृत्य करती हुई बारात में सम्मिलित होती थी। ग्रामीण क्षेत्रों से बैलगाड़ियों में बैठकर लोग बच्चों सहित मेले में लगने वाले खेल तमाशों को देखते हुए आनन्द उठाते थे।

छात्रावास में उस दिन कुछ ही दूरस्थ रहने वाले विद्यार्थी ठहरे हुए थे, क्योंकि साप्ताहिक छुटटी के कारण अधिकांश लोग अपने घरों को गये हुए थे।

रात्रि का एक बज रहा होगा, एक दो ही ट्रक, छात्रावास के दक्षिण वाले मार्ग से गुजर रहे थे, कि बदमाशों के एक गुट ने उन पर लूट के इरादे से हमला बोला, और ट्रकों को, अवरोध लगाकर रोका ड्राइवर को वाहन से उतार कर मारपीट करने लगे। उक्त घटना को एक विद्यार्थी देख रहा था, जो अभी लघुशंका हेतु छात्रावास की छत पर बने पेशाब घर में गया था। उसने लूट की इस घटना के बारे में कमरों में सो रहे शेष ठहरे हुए छात्रों को बताया सभी जग गये, और छात्रावास की छत पर जाकर शोर मचाने लगे, लेकिन बदमाश जानते थे कि यह वही से शोर मचा रहे हैं यहाँ तक नहीं आयेंगे, उन्होंने वाँछित सामान ट्रकों के ड्राइवरों से लूट कर उन्हें जाने दिया।

अगले दिन छात्रावास के उत्तर वाले मार्ग से भी कुछ बैलगाड़ियाँ रात्रि में आ जा रही थी। दोनों मार्गों को पश्चिम दिशा से रेल लाइन क्रॉस करती थी।

रात्रि 2 बजे लगभग एक ट्रक फिर दक्षिण के रास्ते से आया, और फिर एक स्थान पर रूका और आगे बढ़ा, ठहरे प्रशिक्षणार्थियों की बाल बुद्धि ने सोचा कि शायद आज भी बदमाश लूट की इस वारदात को अंजाम देने वाले हैं। उन्होंने वॉर्डन की एक इशारात्मक आज्ञा के अनुसार, सड़क के निकट बहने वाली छोटी नहर, जो उस समय सूखी थी, को पारकर यह पूँछने का उस ट्रक वाले से दुःसाहस किया, कि क्या आज भी लूट हो रही थी। उस छोटे से विद्यार्थियों के ग्रुप में मैं भी था, जिस ग्रुप के सदस्यों के हाथों में केवल कुदालों में पड़ने वाले छोटे डन्डे थे। और उन्हें दिखाकर वह उस ट्रक को रोक रहे थे। ट्रक रूका, उसके अन्दर से एक कड़कती सी आवाज आई, उसमें पुलिस की टीम थी, पुलिस के लोगों ने छात्रों के इस ग्रुप को अपने हथियारों के साथ घेर लिया। दरोगा बोला, मारो इन्हें, कल के यही लुटेरे हैं, मगर दूसरे पुलिस कर्मी ने उसे रोका, और कहा यह छात्रावास में रहने वाले छात्र तो नहीं है। शोर सुनकर संस्थान के प्रधानाचार्य और वॉर्डन भी छात्रों के इस ग्रुप के पीछे तेजी से कदम बढ़ाते हुए आये। उस दिन उस सज्जन पुलिस अफसर ने हमारे वॉर्डन से केवल यह कहा आपने इन्हें कैसे यहाँ भेज दिया, वॉर्डन ने कहा भयभीत यह लोग यह जानने के लिए, कि यहाँ लुटेरे भी लूट करते हैं। पुलिस दरोगा ने कहा, कि अभी इनसे हमारी भ्रामक मुठभेड़ हो जाती। कृपया, आप इन्हें सकुशल संस्थान साथ ले जाइये।

(दाँतों की पीड़ा)

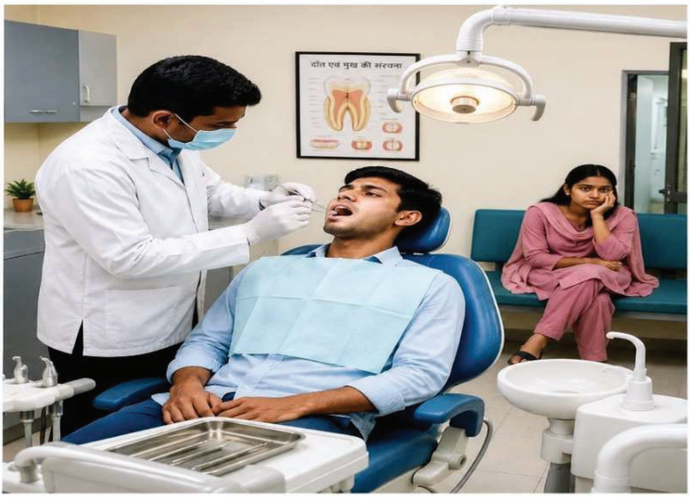

काम

दाँतों में होने वाली, पीड़ा भी बड़ी परेशानी का कारण बनती है। दाँत की गलन या सड़न को लोग दाँत में कीड़ा लगने की परेशानी का कारण बताते हैं। मेरे बेटे के एक चबर्ण दाँत में जिन्हें दाढ़ कहते हैं, सर्दियों की सीजन में पीड़ा पैदा हुई, उस समय ग्रामीण जीवन जीने वाला मैं उसे लेकर एक कुशल व्यक्ति के पास गया। उसने उसके पीड़ा वाले दाँत को मन्त्र से कील दिया, और उस लोहे की कील को एक दीवाल में गाड़ दिया, आज वह युवा हो गया। जहाँ तक मुझे पता है उसके उस दाढ़ में दुबारा पीड़ा नहीं हुई।

मैं एक बार गन्ने के एक खेत पर गया, छिलाई करने वाले एक व्यक्ति ने एक नरम गन्ना, मुझे देकर कहा, खाकर तो देखो छीलने में अत्यंत नरम है। मैंने गन्ने को अपनी दाढ़ों से फाड़ना प्रारम्भ किया, एक दाढ़ कुछ आवाज के साथ दरक गई, और उसमें सूजन बनी और दर्द

रहने लगा, मैं दाँतों के एक चिकित्सक के पास गया, उसने परीक्षण किये वगैर सूजन वाली दाढ़ छोड़कर पास वाली दूसरी दाढ़ उखाड़ दी, मेरी पीड़ा कम नहीं हुई, जख्म ठीक होने पर मैं शहर के एक प्रसिद्व चिकित्सक के पास गया। उन्होंने पहले एक्सरे से दाढ़ का फोटो लेकर तय किया, कि वास्तव में कौन सी दाढ़ खराब है। उसे मुँह से ऑप्रेशन कर बाहर निकाला, तब जाकर मैं स्वस्थ हुआ इस प्रकार युवावस्था में ही मैं अपनी दो दाढ़ों को गवां बैठा, और तब जाकर ठीक हो पाया।

दाँतों के उखाड़ने का काम लोग मन्त्र द्वारा भी करते थे। पीड़ित दाँत में पीड़ित व्यक्ति की उँगली लगवाकर कुछ पढ़ते, और दाँत बाहर आ जाता था। अप्रशिक्षित चिकित्सक द्वारा एक स्कूल के छात्र का एक कच्चा दाँत अप्रशिक्षित विधि से अपने औजारों से उखाड़ा, खून बन्द नहीं कर पाया और छात्र की मृत्यु हो गयी। एक चिकित्सक ने तो जमूरे से पीड़ित का दाँत उखाडा, जमूना हाथ से फिसला, और उसके ऊपरी जबड़े के बीच में जा धँसा, और जख्म बना दिया।

मेरी बड़ी पुत्री, जिसकी विवाहोपरान्त प्रसव के बाद दाँत में पीड़ा हुई, तथा उसके एक गाल में फोड़ा बनने लगा। दाँत की पीड़ा उसे मालूम नहीं होती थी, फोड़ा बढ़ जाता, उसमें दर्द होता, दवा खाने पर ठीक हो जाता, और फिर बन जाता। कमजोर अवस्था में मैं उसे दाँतों के एक कुशल चिकित्सक के पास ले गया, उसने परीक्षण कर बताया यह फोड़ा दाँत के कारण बनता बिगडता है। जब उसने उसका दाँत निकाला, फोड़ा शान्त हो गया और वह ठीक हो गई।

लोगों के द्वारा परीक्षण कराये वगैर दाँतों की चिकित्सा नहीं करानी चाहिए, कभी–कभी पैसों के लालच में अच्छे दाँत भी चिकित्सक उनकी चिकित्सा के नाम पर उखाड़ देते हैं। दाँत हमारे शरीर की अमूल्य निधि है। परम्परागत उपायों पर भी विश्वास करते हुए पीड़ा होने पर हमें इनकी रक्षा करना चाहिए, अच्छे मंजन, एवम् टूथपेस्ट का प्रयोग करते हुए ठंडे गरम खाद्य पदार्थो का सोच समझकर प्रयोग करना चाहिए। और दाँतों की पीड़ा से बचना चाहिए।

(नाभि खिसकने की पीड़ा)

नाभि ठीक करने का प्राचीन उपाय

नाभि खिसकने की पीड़ा, जिसे अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग नहीं जानते या मानते ही नहीं, या डाक्टरों की भाषा में इसका कोई भी स्थान नहीं, लेकिन ग्रामीण भाषा मे इसे नाभि खिसकना या उर्दू में इसे नाफ हटना भी कहते हैं। इतना तो हम अवश्य कह सकते हैं, कि इसके हटने पर डाक्टर चाहे जितनी दवा से उपचार करे, मरीज को ठीक नहीं कर पाता। जानकार बताते हैं, कि नाभि के खिसकने से इक्यावन प्रकार के पेट संबंधी रोग क्रमशः तैयार हो जाते हैं। और मरीज का शरीर सूखता जाता है। अधिक समय इसके हटे रहने पर यह उपचार कराने पर भी अपने नये स्थान पर खिसक जाती है और पीड़ित व्यक्ति पीड़ा भोगता रहता है।

इसके मुख्य कारणों में खाली पेट वजन उठाना, कूदना, या उछलना माने या जाने जाते हैं। इसे पेट की किसी मुख्य नस का हटना भी माना जाता है।

मैं इसकी पीड़ा का शिकार तब हुआ, जब ग्रामीण जीवन में धान की कटाई का सीजन था। आधी रात तक बैलगाड़ी से धान ढोए जाते रहे, मेरा स्वास्थ्य उन दिनों काफी अच्छा था, मैं भूखे पेट धान बैलगाड़ी से ढोता और उतारता रहा। रात्रि में मेरी नाभि खिसक गई, और मैं अगले सवेरे तक भंयकर दर्द से पीड़ित हो उठा, मेरी माता जी जिनकी आज्ञा मैं बहुत मानता था, मुझे दर्द के कारण उस समय चलने वाली एक बस से साठ किलोमीटर दूर शहर के एक परिचित चिकित्सक के पास ले गईं, चिकित्सक ने मेरी पीड़ा का परीक्षण कर बता दिया कि तुम्हारे पेट में पथरी बन गई है। उपचार शुरू हुआ पन्द्रह दिनों के क्रमशः उनके उपचार से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। मेरी भूख गायब थी और शरीर सूखता चला जाता था, विवश होकर मैंने उन श्रद्धेय चिकित्सक के उपचार को बन्द किया, और विपरीत दिशा में पड़ने वाले नगर के एक और चिकित्सक से जाकर परामर्श लिया, उन्होंने भी मेरी पीड़ा को देखकर मेरे पेट में पथरी की आशंका व्यक्त कर उपचार शुरू कर दिया, लेकिन मेरे रोग में कोई फायदा नहीं पहुँच रहा था। और मैं दिन प्रतिदिन निढाल होकर उनकी दवा खा रहा था।

एक दिन जब मैं ट्रेन से शहर उनके पास दवा लेने गया, मुझे न तो उस दिन थोड़ी सी भी भूख लगी, और न प्यास, मैं नगर में उस दिन बेचैन घूमता रहा। पुनः शाम को उनके पास गया, परन्तु वह उस दिन समुचित अन्य दवा से भी मुझे बिल्कुल भी आराम न दिला सके।

उन दिनों अत्याधुनिक परीक्षणों का अभाव था, केवल बड़े नगरों में एक्सरे जैसी सुविधाएं थी, पीड़ित क्या न करता, मैं वापिस आने वाली शाम की एक ट्रेन में सवार होने रेलवे स्टेशन आ गया, जहाँ पहले से एक परिचित व्यक्ति के साथ मैं जब ट्रेन के डिब्बे में चढ़ा, तो वहाँ भी पहले से ही सीट पर बैठे एक डाक्टर से भेंट हुई बातचीत के दौरान जब उन्हें मैंने अपनी पीड़ा के बारे में बताया, तो वह बोले कल क्लीनिक पर आना हम आपको अपनी दवा देंगे। रात्रि की बेला हो उठी थी। ट्रेन लेट हो रही थी कारण यह था कि सामने की लाइन पर एक गन्ना गाड़ी

क्रॉसिंग लेते हुए आकर रूकी। एक देहाती व्यक्ति उस गाड़ी के वैगन से दो गन्ने खींच लाया, डाक्टर साहब और उसने गन्नों को फाड़कर खाना प्रारम्भ किया, और मुझसे भी खाने को कहा, मैंने पीड़ा के कारण खाने से मना किया उस समय सामने बैठे एक सज्जन गौर से मेरी बात को सुन रहे थे, बोले बेटा तुम्हारे कहाँ पीड़ा हो रही है मेरे बताने पर वह कहने लगे, मेरे भी इसी प्रकार की पीड़ा एक बार हुई, मैंने बड़े शहर जाकर दिखाया,

डाक्टर ने एक्सरे किया, मेरी आँत के ऊपर आँत चढ़ी है, ऐसा उसने परीक्षण में मुझे बताया, जिसका ऑप्रेशन लखनऊ में कराना पड़ेगा। मैं घर लौटा, ऑप्रेशन की बात सुनकर घर वाले रोने लगे, उस समय ऑप्रेशन से लोग डरते थे, मैंने अपने जाने की तैयारी के बँधे सामान को उनके रोने पर छोड़ दिया, और चहल कदमी के लिए सड़क पर निकल गया, जहाँ एक परिचित व्यक्ति ने मुझे मेरी हालत के बारे में टोका मेरी सारी बात सुनने के बाद उसने एक पेड़ के पास ले जाकर, कहा मैं तुम्हें ठीक करता हूँ लेट जाओ, और उसने मुझे लिटाकर मेरी पीठ पैरों को झटका देकर अपना उपचार किया और साधारणतः मुझे उठाकर कुछ खाने को मंगवा कर मुझे खिलाकर उठाया। मैं उसी दिन से ठीक हो गया मुझे दुबारा इलाज के लिए कहीं नहीं जाना पड़ा। तुम भी इसका परीक्षण करा लेना।

मैंने घर आकर एक बूढ़ी माँ से संपर्क किया, जो जमीन पर लिटाकर पेट पर आंटे का दीपक बनाकर रखती तथा घी डालकर दीपक जलाती, जलते दीपक पर मिट्टी की एक छोटी मलैया रखती, पेट सिकुड़ता जाता था और उसके सिकुड़ने से नाभि पुनः अपने स्थान पर आ जाती थी, उनके उपचार से मैं ठीक तो हुआ लेकिन वह फिर अपने नये स्थान को पकड़ लेती थी, जिसे नाभि का टरकना भी कहते हैं।

उस समय हमारे एक संबंधी दूसरे गाँव की एक बूढ़ी माता जी के पास ले गये, जो सेवाभाव से मन्त्र द्वारा पीठ पर अपनी उँगली से गोला बनाती जाती थी, और नाभि की पीड़ा शान्त हो जाती थी। त्रासदी यह थी कि उनका एक पुत्र शराब पीने का आदी हो गया, नशे में अचेत उसकी पीठ पर किसी दुष्ट ने जलती लकड़ी रख दी। और वह जलने की पीड़ा से मृत्यु को प्राप्त हुआ, बूढ़ी माता ने पुत्र की मौत के बाद न

वह मन्त्र किसी को सिखाया कालान्तर बिना ज्ञान दिये वह इस असार संसार से चल बसी। मैं ठीक हो गया और एक स्वस्थ जीवन जिया। हाँ एक बार भरी बोरियाँ को उठाने के कारण मैं फिर इस पीड़ा से पीड़ित हुआ, और इस बार भी मैं पुनः स्मृति के आधार पर शीघ्र स्वस्थ हो गया।

कुछ लोग किसी जड़ी की लकड़ी को कमर में नाभि की इस पीड़ा होने पर बाँध देते हैं, और ठीक हो जाते हैं मैंने छः माह से भी अधिक इस पीड़ा को भोगा है। एक वकील के मुंशी को मैंने इस पीड़ा से पीड़ित हुए सूखते देखा है, मेरी सलाह पर उसने भी उचित उपाय से स्वस्थ होने का लाभ उठाया, हमें इस प्रकार की पीड़ाओं पर भी ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए, और सेवा भाव से प्रभु में आस्था रखते हुए सत्य मार्ग पर चलकर इन अपने कर्मज रोगों से अपनी रक्षा करनी चाहिए।

(भंयकर खूनी पेचिश)

Dycentry बीमारी

कारण दूषित पानी

मनुष्य को जब रोग जनित, पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। तो उसमें भी, डाक्टरी भाषा में जिसे पेचिश के रूप में जाना जाता है। इसमें बार–बार मल त्याग के लिए शौंच जाना पड़ता है, गुदा मार्ग में सूजन हो जाती है और इसके बिगड़े रूप में मल के साथ खून आने लग जाता है। तब इसे भयंकर रूप वाली खूनी पेंचिश कहा जाता है।

प्रकृति में कोई भी घटना बिना कारण नहीं घटती है। मेरे पुत्र को भी बचपन में इस भंयकर रोग ने घेर लिया था, जब वह अभी गोद में रहने वाला शिशु ही था। मुश्किल से बोल पाता था, कारण का हम पता नहीं लगा पाये, कि उसे यह पीड़ा क्यों हुई, दस–दस मिनट पर उसे खून मिली हुई आंव के रूप में मल आता था, जिससे उसके पेट में दर्द, जिसे मरोड़ कहते हैं, होता था। शिशु रोता और माँ को भी बहुत परेशान करता था।

उस समय चलने वाली सुबह की एक ट्रेन से मैं उसे लेकर शहर के एक चिकित्सक के पास उपचार हेतु गया। मुझे याद है कि ट्रेन में अधिक भीड़ के कारण, मैं रास्ते में पड़ने वाले प्रत्येक स्टेशन पर खिड़की से उतरकर उसे प्लेटफार्म के निकट नाली में बिठाता परन्तु पूर्ववत् वही स्थिति, पुनः ट्रेन के प्रस्थान के समय की बजने वाली सीटी के साथ ही पुनः खिड़की के रास्ते डिब्बे में, बच्चे को माँ की गोद में देकर ट्रेन के अन्दर आ जाता।

क्रमशः प्रशिक्षित चिकित्सक की दवा लेने पर भी शिशु को कोई आराम न होता दिखाई पड़ रहा था, मुझे लग रहा था कि उसके जीवन की आशा करना व्यर्थ है। किम कर्तव्य विमूढ मैं घर वापिस आ गया, संयोग से उसके मामा जी, अपनी बहिन को अपने घर ले जाने के लिए आये और उसकी माँ शिशु को उसकी उसी दशा में साथ लेकर मायके चली गई, रास्ते में उनके भाई इसकी पूर्ववत् दशा देखकर, बहुत पछताये कि इस दशा में वह क्यों इन्हें लेकर आये।

लेकिन प्रभु को कुछ और ही मंजूर था, घर पहुँच कर वह बस अड्डे पर उतरे और सीधे सरकारी चिकित्सालय पहुँचे, नवागत एक चिकित्सक ने कुछ टेबलेट खाने को दी और पीड़ित को केला खिलाने को बोला, उसकी उस दवा ने रोग पर अचूक निशाना लगाया, और वह स्वस्थ हो गया। कहते हैं जिसका जीवन शेष होता है, उसके जीवन में कष्ट आने पर भी उसकी रक्षा हो जाती है।

मुझे भी एक बार इस रोग ने गर्मी बरसात के सन्धि काल में आ घेरा, मेरी भी हालत खराब, खून मिला मल आना शुरू, मैं भी बहुत पीड़ित हुआ, उस समय लाइसेंस धारी डोडा (अफीम के पौधे के फल का छिलका) बेचने वाले दुकानदार से मैं डोडा खरीद कर लाया, उबालकर थोड़ा सा पानी दवा के रूप में पिया और मैं ठीक हो गया। यह बीमारी कभी–कभी पेट में निरन्तर बनने वाली आंव के कारण संग्रहणी नामक रोग का कारण वन जाती है, जिसमें बेल फल से बनने वाले उत्पादों का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक चिकित्सा पद्वतियों का सहारा लेकर भी इसकी पीड़ा से स्वंय को ठीक कराना चाहिए।

शब्दार्थ – आँव कच्चे मल का स्वरूप

नागिन का पैर के ऊपर से निकल जाना

घास से आच्छादित स्थान पर देख भाल कर चलें

ग्रामीण जीवन की घटनाओं में, उक्त शीर्षक की घटना का उल्लेख करना आवश्यक बन जाता है, जिसने मेरे जीवन को मृत्यु के अत्यंत निकट पहुँचाने का प्रमाण पत्र दे डाला।

बरसात के दिन थे, खेतों में धान की लहलहाती फसल हवा के मन्द झोकों से अठखेलियां करती हुई बड़ी भली जान पड़ती थी, खेत के चौड़े बरहा में बरसात के मौसम में प्राकृतिक रूप से उगने वाली घास को भैंस की पीठ पर बैठा हुआ एक चरवाहा उस भैंस को चरा रहा था। सामने चकरोड से लगा हुआ गन्ने की पेड़ी का एक खेत था, जिसकी जुताई के समय किसान ने चकरोड के किनारे एक आंतर छोड़ रखा था, जिस पर प्राकृतिक रूप से उगने वाली चिरायता नाम की जड़ी के लाइन बद्व पौधे उग आये थे।

चकरोड पर चहल कदमी करते हुए मैंने अपनी कमर में एक बड़ा सा अंगौछा लुंगी नुमा पहन रखा था, हाथ में छड़ी थी, लहलहाती फसल के सौन्दर्य को निहारते हुए, मैं उस फसल की अठखेलियों के साथ ही उसकी हरीतिमा के अवलोकन में खो गया, और चकरोड पर खड़ा होकर उस भैंस सवार चरवाहे से बाते करने लगा।

अभी मैं बातें कर ही रहा था, कि वही पेड़ी वाले खेत के आंतर से निकली खैरे रंग की एक नागिन, मेरे दाहिने पैर के ऊपर से निकल गई, जिसके स्पर्श ने मेरे पैर को ठंडक का आभास कराया, मैं उछला और कूदकर चकरोड के दूसरे किनारे जा लगा।

मुझे उछलते देखकर, वह चरवाहा भैंस की पीठ से नीचे उतरा और मुझसे पूछा कि क्या हुआ, मैंने कहा सर्प पैर के ऊपर से गुजर गया, बोला काटा तो नहीं, मैने कहा नहीं, नागिन पैर में ठंडक का अनुभव कराती हुई गुजर गई, मुझे उसने सुरक्षित छोड़ दिया और फिर एक बार भगवान की कृपा का जीवन में पूर्ण अहसास हुआ। मैं सकुशल घर वापिस आ गया।

ऐसे ही, एक बार कृषि क्षेत्र के अवलोकन के समय जब खेत के किसान ने एक कोने पर गन्ने की ठूंठ इकट्ठे कर रखे थे, सारे खेत में बरसात का पानी भरा हुआ था, मैंने वहाँ पहुँचने पर पद्म नाग के दर्शन किये, जिसमें मेरी उपस्थिति को अपने मुक्त जीवन में अवरोध माना, और पूँछ के बल खड़े होकर अपना फन उठाकर घोड़े की आवाज के सदृश हींसना शुरू किया, लेकिन मैं उसे प्रणाम कर दूर से बचकर वहाँ से चला आया, मुझको जाते हुए देख कर वह फन नीचा कर अपनी शान्त मुद्रा में वापिस आ गया।

जानकार बताते हैं कि प्रकृति में सांपों की तीन सौ प्रजातियां हैं, जिनमें कुछ ही प्रजातियां विषैली होती है नाग, नागिन के विषय में इसके काटने पर व्यक्ति की शत प्रतिशत मृत्यु हो ही जाती है। यह बहुत फुर्तीला होता है नाग को यदि कोई मार दे, तो कहा जाता है नागिन अवश्य बदला ले लेती है। लेकिन यह अपने शरीर के किसी अंग के दबने पर ही व्यक्ति या पशु पर हमला करते हैं। पशु की मोटी चमड़ी पर जानकर बताते हैं, कि इनके विष का असर नहीं होता, लेकिन यदि

घास में पड़े सर्प को चरता हुआ पशु यदि धोखे से भी जीभ से चाट ले तो वह उसे काट लेगा और पशु की निश्चित रूप से मृत्यु हो जाती है।

सांपों के विषय में यह भी कहा जाता है, कि नर और मादा के सम्मिलन को यदि कोई देख ले, तो यह उसके पीछे पड़ जाते हैं, तब इन पर कपड़ा या अंगौछा फेंक कर देखने वाला अपनी जान बचा सकता है। सांपों की प्रजातियों में पगैहिया सर्प बहुत लम्बा रस्सी जैसा होता है, लेकिन मनुष्य को देखते ही यह भाग खड़ा होता है। बहती हुए तेज पूरबी हवा में मैंने इस सांप को खेत में पड़ा देखा, मेरे पहुँचने पर मेरी आहट पाकर तेजी से वह भाग गया।

काला सांप भी बहुत जहरीला होता है, दबने पर ही यह काटता है, और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। सांप चूहों द्वारा बनाई गई बिलों में ही रहते हैं, चूहे इनका प्रिय भोजन है। अधिक सर्दी की सीजन में बाहर निकला सांप सर्दी में अकड़ सा जाता है, और हिलने डुलने लायक नही रहता, यह दृश्य भी मैंने अपनी आँखों से देखे हैं।

फुल बग्घा जिसकी त्वचा पर फूल जैसी आकृतियां बनी होती है, उसे करैत साँप कहते हैं, जो बहुत विषैला होता है। एक बार खुले मैदान में सर्दी की ऋतु में पास खड़े पुराने पाकड़ की टहनी से पेड़ के कोटर से निकला करैत फिसलकर पाकड़ की जड़ पर आ गिरा, बच्चे पास में ही पढ़ रहे थे, वहाँ उपस्थित एक ग्रामीण ने उसका लाठी से काम तमाम कर दिया।

गारे से चुनी ईंट की दीवालों, छोटा लेकिन अत्यंत विषैला, गडार नामक सर्प दीवालों की खाली जगहों में जिसके रहने का स्थान होता है, तथा खूंटी पर टंगे हुए थैला या दीवार में उकेरे आलों में आकर बैठ जाता है। मेरी एक मामी थीं, उन्होंने थैले से अपने द्वारा लाई हुई मिठाई लाकर रख दी, थैले में गडार आकर बैठ गई और उनके हाथ डालते ही उसने उन्हें काट लिया, और उन्हें बचाया नहीं जा सका। हम सभी को कार्यस्थल पर सावधानी से कार्य करना चाहिए।

पेट के कीड़ों के कारण पीड़ा

पेट के कीड़ों के कारण बैचेन

बच्चे छोटी आयु के थे, जब मेरा इकलौता पुत्र जो अपनी दो बहनों से बड़ा है, जब वह शिशु अवस्था में ही था, रात्रि में मुझे याद है कि उसके लिए दूध गरम करने के लिए हम लोग अपने छोटे से कमरे में कागज जलाते थे, भगौने में दूध गरम करते थे। उस समय रात्रि में चोरो के डर से बाहर निकलना भी उस समय देश में बढ़ती अराजकता के कारण संभव न था।

हाँ एक गाय जरूर खरीदी, और पाल ली, पता नहीं उसका दूध ठीक से भी गरम हो पाता था या नहीं, दूध के सेवन से पेट में लम्बे केंचुए जैसे कीड़े हो गये। मेरी बड़ी पुत्री को भी और छोटी पुत्री तथा उनकी माता को छोड़कर मुझे भी पेट की लगातार तकलीफ बनी रही।

उन दिनों मैंने गाँव छोड़कर सर्विस के कारण शहर में रहना प्रारम्भ कर दिया था, कालान्तर गाय का बछड़ा भी उन गेडुओं (कीड़ों)

के कारण मर गया, और उसके गोबर में अनेक कीड़े दवा देने के बाद मल में दिखाई पड़े।

यह परेशानी लगभग एक वर्ष रही, और मैं पेट के रोगों से पीड़ित रहा भूख लगती नहीं थी। स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ रहा था, बच्चे बेचारे अपनी पीड़ा किसी को क्या बताते।

संयोग से एक शिक्षक महोदय, जो हमारे सहकर्मी बनकर शिक्षण कार्य करने विद्यालय में आये, उन्हें हमारी इस समस्या का पता चला, तब उन्होंने बताया कि उनकी भी एक पुत्री को इस प्रकार की समस्या से जूझना पड़ा था। लेकिन जब उन्हें कीड़ों की इस वास्तविकता का पता चला, जबकि एक कीड़ा मल के साथ किसी प्रकार बाहर आ गया और मैंने चिकित्सक के पास जाकर कीड़े के बारे में बताया। उनके द्वारा दी गई दवा ने कीड़ों पर जादू की तरह असर किया, और उनकी पुत्री कीड़ों की उस समस्या से मुक्ति पा गई, और उनके सारे पेट के रोग ठीक हो गये।

मैंने भी उन सहकर्मी सज्जन की बात पर ध्यान दिया और डाक्टर से दवा लेकर खाई। मुझे याद है कि कमवेट्रन नामक इस टेवलेट (गुटिका) ने जादू जैसा असर किया और हमारे पेट से कीड़े निकल गये, हमने अपने बच्चों को भी उस दवा को खिलाकर कीड़ों से मुक्ति दिलाई और उनके रोगों को ठीक किया।

आज कल लोग अपनी बीमारी का दूसरों से जिक्र करने में शर्म या अपना अपमान समझते हैं, जबकि इसके उलट, यदि समस्याओं को दूसरों के समक्ष रखा जाय, तो दूसरों के अनुभवों के आधार पर हम अपनी बेवजह आयी मुसीबतों का हल भी निकाल सकते है। पहले जमाने के लोग दूसरों को अपनी आयी हुई तकलीफों को बताते भी थे, और उसका निदान भी अक्सर उन्हें मिल जाता था।

ज्ञातव्य हो कि इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि जिसको हम अपनी समस्या बता रहे हैं, वह हमारा हितैषी भी है, अगर वह बुरा चाहने वाला होगा तो हमें गलत परामर्श दे डालेगा, और हम और मुसीबत में पड़ते चले जायेंगे। लेकिन मैं उन सहकर्मी सज्जन को याद करता हूँ जिनकी सलाह से हम और हमारा परिवार रोग मुक्त हुआ।

(छालों की पीड़ा)

मुँह के अन्दर छाले या व्रण हो जाते हैं, यह कभी–कभी जब पेट तक अपना असर जमा लेते हैं, तो इन्हें ठीक करना कठिन कार्य होता है। इसके प्रमुख कारणों में चिकित्सकों के अनुसार अधिक या कम गर्म या ठन्डे पदार्थों का सेवन करना होता है। हमारी अनियमित दिनचर्या, आहार, बिहार भी हमें पेट में कब्ज रहने की समस्या बनाकर छालों की तकलीफ पैदा कर देती है।

यह दवा खाने पर ठीक तो होते हैं, लेकिर फिर अपना रूप शीघ्र ही प्रकट कर देते हैं। मुझे भी यह समस्या कई बार हुई, और मैं काफी समय तक छालों की समस्या से पीड़ित रहा।

मेरी अपनी दिनचर्या में मुझे किंचित मात्र भी आलस्य या उसके अनियमित होने का डर कदाचित ही सताया हो, परन्तु सामाजिक बदलाव

के कारणों के साथ समन्वय बिठाने के कारण मेरी दिनचर्या को भी अनियमितता का शिकार होना पड़ा। मुझे याद है कि मैं भोजन करके बैठा ही था, कि हमारे अधिकारी महोदय, निरीक्षण में हमारी संस्था पहुँचे, और हमसे एक आरक्षित वर्ग की रसोइया द्वारा बनाये गये, पूर्वाग्रह के कारण चटाई पर बैठकर अपने साथ भोजन खाने को बोला, मैंने उनके आग्रह पर उनके साथ बैठकर भोजन किया। हमारी अनियमितता के कारणों में चाय का सेवन भी है, हमें यदि दस लोगों से आवश्यक कारणों से बात करनी पड़े तो वह चाय का स्वागत जरूर करेगा, बार–बार चाय पीने से हम बीमार होकर पेट के रोगों से पीड़ित होते रहते हैं।

मैंने सेवा कार्य में आने से पूर्व चाय कभी नहीं पी, परन्तु सेवा में आने के बाद, स्वागत में बार–बार चाय तो पीनी ही पड़ती थी, मुझे मेरी शारीरिक प्रकृति अधिक पीने चाय की अनुमति नहीं देती है, परन्तु ग्रुप में बैठने पर उसके लिए मना करना कम से कम सामाजिक विरोधाभास का अवसर खोल देता है। मिडिल क्लास के लोगों के लिए यह मुसीबत का विषय रहा है।

मेरी इस प्रकार की अनियमितता ने मुझे कई बार छालों की पीड़ा का शिकार बनाया, देर तक बैठकर सीट पर काम करना और बार–बार अनियमित खानपान ने मुझे इसका शिकार बनाया।

हमारे एक सहकर्मी बार–बार चाय पीते थे, और स्वस्थ रहते थे। मुझे मेरी प्रकृति ने इसके अधिक सेवन से बीमारी का शिकार बनाया, मैं सेवा से निवृत्त होने के बाद इस पीड़ा से पूर्णतः मुक्त हुआ। सहकर्मी चाय से मना करने पर नाराज होते थे।

हमें इस प्रकार के खान पान से स्वयं को बचाया जाना चाहिए, और अपने स्वास्थ की रक्षा करनी चाहिए। फास्ट फूड के खाने से भी स्वयं को बचाना चाहिए। घर की बनी वस्तुओं का ही सेवन करना चाहिए, कब्ज से स्वयं को बचाना चाहिए। छालों की पीड़ा बहुत परेशान करती है। कब्ज इसका प्रमुख कारण है। पीने का पानी भी शुद्व होना चाहिए, आजकल भूगर्भ जल प्रदूषित हो रहा है। घरों में पर्याप्त गहराई वाले हैण्डपम्प लगवाये जाने चाहिए, शुद्व पानी पेट की खराबी जनित इन बीमारियों से हमें बचाता है।

(गुर्दे की पथरी की पीड़ा)

मन्त्र से पथरी का इलाज

रात्रि में भयंकर पेट दर्द उठा, मैं उपचार हेतु नगर के एक चिकित्सक के पास गया, चिकित्सक के उपचार से मुझे आराम तो हुआ, समय बदल चुका था, चिकित्सक ने मुझे बड़े नगर के एक अल्ट्रासाउण्ड केन्द्र पर भेजा, जाँच में मेरे गुर्दे में पथरी पायी गयी। पेट के आंतरिक अंग जैसे गुर्दे और पित्त की थैली में पथरी बन जाती है। और कभी–कभी बहुत तेज दर्द उठता है, और मरीज बहुत बेचैन हो जाता है। मैंने अपनी ट्रेन यात्रा के एक अवसर पर एक पहलवान महोदय को, जो टाइलेट में लघुशंका के लिए गये थे, वापिस सीट पर पेशाब न आने के कारण बहुत बुरी तरह रोते देखा था। जिन्होंने बड़े–बड़े प्रसिद्व पहलवानों को कुश्ती में चित्त कर दिया था। वह बूँद–बूँद पेशाब उतरने के कारण पथरी की कुश्ती में असहाय सीट पर बैठे रो रहे थे।

एक अध्यापिका जिसके गाल ब्लेडर में पथरी हो गई थी, डाक्टरों ने ऑप्रेशन कर गाल ब्लेडर निकालने की सलाह दी। ऑप्रेशन कराने से

डर गई, अन्ततः गाल ब्लेडर फटा, और उसकी मृत्यु हो गई। मेरी पत्नी को भी उनके जीवन में गाल व्लेडर और गुर्दे में पथरी हो गई। उस समय पथरी की जाँच की अत्याधुनिक मशीनों का प्रयोग प्रारम्भ ही हुआ था, उन्हें अपनी पथरी के बारे में पता चला, उन्होंने भोजन के मामले में अत्यंत संयम बरतना प्रारम्भ किया, उन्हें एक अध्यापिका ने सलाह दी कि उन्हें मध्य प्रदेश के एक मंदिर वाले गाँव में इलाज के लिए जाना चाहिए, जहां एक भगत झाड़ा देकर पथरी निकाल देता है। उनकी इच्छानुसार उन्हें लेकर मैं सुदूर मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में उक्त गाँव में पहुँचा, जहाँ पहले से ही अनेक लोग, भिन्न–भिन्न वाहनों से यात्रा कर झाड़े के उपचार हेतु पहुँचे थे, मन्दिर निर्जन, आदि वासी वस्ती सरीखे विभिन्न प्रकार के पेड़ों से घिरा हुए एक स्थान पर था। नेपाल और जम्बू संभाग के लोग भी इलाज हेतु पहुचे थे। पुलिस, शिक्षक, वकील जैसे पढ़े लिखे लोगों से भी मेरी भेंट हुई, रात्रि में मंदिर परिसर में ही ठहरना पड़ता था, सुबह मंगलवार के दिन भगत जी एक ऊँची, चौकी पर आकर बैठ जाते थे, पास में नारियल का प्रसाद चढ़ाया जाता था। कतार में लगे मरीज क्रमशः उनके सामने से निकलते थे, सामने आने पर स्थान पर बैठे भगत जी उन्हें नीम की टहनी से झाड़ा देते, छोटी–छोटी पथरी सामने बिछाये गये अखबार पर गिर जाती थी, किसी की पथरियां निकलती थी किसी की नहीं यह चमत्कार मैंने अपनी आँखों से देखा है। भगत जी की सिद्वि के बारे में ईश्वर ही जाने,मैंने वापिस आने पर अपने इस अनुभव को कई लोगों बताया, कई पीड़ित लोग उपचार के लिए निर्दिष्ट यात्रा पर गये, अनेकों को दर्द की पीड़ा नहीं हुई, आप्रेशन नहीं कराने पड़े कईयों को कराने पड़े।

मुझे अपनी पत्नी के गाल ब्लेडर का ऑप्रेशन कराना पड़ा, तब जाकर उन्हें पथरी के रोग से मुक्ति मिली। उनके गाल व्लेडर के ऑप्रेशन पर गुथी हुई ग्यारह की संख्या में पथरिया निकली थी।

मैंने अपनी गुर्दे की पथरी की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए भी डाक्टरी अत्याधुनिक चिकित्सा पद्यति का सहारा लिया था। धन्यवाद देता हूँ डा0 पी0डी0 सिंह, चिकित्सक महोदय का जिन्होंने लेजर विधि से मेरी पथरी का दूरबीन पद्यति से ऑप्रेशन किया, और मैं स्वस्थ हो गया।

पथरियां क्यों बनती है। मेरी समझ में कुछ क्षेत्रों के दूषित जल के सेवन से जिससे अशुद्वियों के कारण पथरी बन जाती है। अथवा मनुष्य के खानपान या प्रकृति के अनुसार भी पेट में पथरी बनने के कारणों में से एक है बेहतर जानकार ही जानें।

प्रकृति में मनुष्य के रोगों के अनेक कारण और माने जाते हैं, कुछ कर्मज या कुछ आगुन्तक होते हैं। आधुनिक चिकित्सा से हमें उपचार कराकर लाभ उठाना चाहिए, और ऐसे कारणों से बचना चाहिए, जो भंयकर रोग की पीड़ा पैदा करते थे।

(कब्ज के भंयकर मरीज)

अनुभव के आधार पर शरीर के आगन्तुक रोगों में पीड़ा के मुख्य कारणों में कब्ज का होना ही माना जाता है। कब्ज होने पर भूख नहीं लगती, और शरीर सूखता जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास महाराज ने राम चरित मानस की अद्वाली में ठीक ही कहा है। 'चिन्ता साँपिनि केहि नहीं खाया' अर्थात चिन्ता ही व्यक्ति को बीमार बनाती है। चाहे आफिस जाने की जल्दी में जल्दी जल्दी खाया गया भोजन जो ठीक से चबाया न जाय, कब्ज का कारण बन जाता है। अध्यापकों के विषय में परिहासवश एक बुजुर्ग सेवानिवृत्त शिक्षक कहा करते थे। जल्दी से आधा पका हुआ खाकर जो विद्यालय समय पर छात्रों के बीच दैनिक कार्य में लगता चाहता है, वह अध्यापक है।

यद्यपि इस चर्चा के साथ घरेलू समस्याओं के कारण होने वाली चिन्ताएं भी हमारी जल्दी–जल्दी भोजन खाने में रोग का कारण पैदा कर देती है, और हम कब्ज का शिकार हो जाते हैं। अधिक देर तक भरे पेट

या खाली पेट थोड़ा अल्प आराम लिए वगैर काम की व्यस्तता वश हम पेट के रोगी कब्ज के कारण बन जाते हैं। भूख लगी घर से टिफिन में लाये तले हुए भोज्य पदार्थों का सेवन रोज–रोज करने से हमें कब्ज घेर ही लेती है। खाली पेट भूख लगने पर खाना नहीं खाया चाय पीली फिर चाय पी, कब्ज में सहायक हो जाती है। हमारे सुविधा भोगी जीवन में डायविटीज (मधुमेह) रोग भी लम्बे समय तक कब्ज के कारण देखे गये हैं।

मेरी कब्ज का कारण, अपने कार्य को समय से पूरा करने के लिए खाकर तुरन्त ही अपने लिखने पढ़ने के काम में लग जाना था, हम कब्ज से पीड़ित हुए दिन चर्या नहीं बदली और परेशान हुए, लेकिन इसको तब पहचाना और जाना जब हम अन्य कब्ज जनित रोगों से पीड़ित हुए और मैंने इस पर आयुर्वेदिक उपचार से प्रहार करना प्रारम्भ किया, और हम ठीक हो गये।

मेरे लिखने का यह मतलब नहीं कि मैं पाठकों को कोई चिकित्सीय सलाह दे रहा हूँ, लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि यदि हम अपनी दिनचर्या वगैर किसी के दबाव के विकेन्द्रीकरण पद्यति से उसमें हल्का बदलाव कर जीवन जियें, तो हम कब्ज के द्वारा पैदा होने वाले रोगों से स्वयं के स्वास्थ्य की रक्षा कर एक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं, तथा व्यर्थ की चिन्ता न पालकर भी जैसी चादर वैसे पैर फैलाकर सोने बाली उक्ति का पालन कर अपने को हाई बी0पी0, शुगर जैसे रोगों से बचा सकते हैं। चिन्ता पैदा करने वाले लोगों का साथ छोड़कर चिन्ता से बच सकते हैं, तथा अपने लोगों को बचा सकते है।

(बवासीर का देशी इलाज)

नीम हकीम द्वारा इलाज

कब्ज के कारण पेट के रोगों में बवासीर अत्यंत कष्टसाध्य रोग है। कार्य की व्यस्तता के कारण, छुट्टी के एक दिन मैं अपने एक खेत को किराये के एक ट्रेक्टर के द्वारा ट्रेक्टर में जुड़े हुए करहे से खेत को समतल करा रहा था। दिन में व्यस्तता के कारण उस दिन, साझेदार द्वारा लाये गये तले हुए भोजन को खाना पड़ा, मुझे सुबह शौच जाने पर उक्त रोग बिन बताये प्रकट हो गया।

रोग की परेशानी के बारे में पहले से ही लोगों से सुन रखा था, मेरे मन में डर था, कि यदि इसे ठीक न किया गया तो यह आगे और भयंकर रूप धारण कर लेगा, क्योंकि लोगों के बताये अनुसार अनेक लोग इसकी पीड़ा के बिगड़े स्वरूप के कारण मर चुके थे मेरे दुर्दिन उस समय मेरे साथ थे। दुर्योग से एक नीम हकीम जो हमारे रिश्तेदार बनकर आये थे, उन्होंने अपने अल्प ज्ञान के द्वारा मुझे विश्वास में लेकर उपचार प्रारम्भ किया, अत्यंत गर्म औषधी का बवासीर की प्रारंभिक अवस्था में

गुदा मार्ग पर लेप करते थे, जिसने उस स्थान को अत्यंत कमजोर पीड़ादायक पिलपिला बना दिया, और वह अपने खरे नोटों की फीस के साथ मेरा गलत इलाज कर अपने घर प्रस्थान कर गये।

हमें बाद में पता चला, कि उन्होंने यह इलाज अपनी प्रौढ़ा पत्नी से सीखा था। जिसके पिता अपनी कुशल विधि से इस बीमारी के चिकित्सक थे। नीम हकीम की चिकित्सा से हम बिल्कुल ठीक न हुए और अधिक समस्या बढ़ाकर वह अपने घर वापस लौट गये थे, बाद में पता चला कि उन्होंने और भी अपने रिश्तेदारों को रिश्ते का वास्ता देकर चिकित्सीय क्षति पहुँचाई थी। बरसात के दिन थे, मेरी शौच क्रिया के समय मल द्वार से रक्त आने लगा, खुले मैदान में एक बार मल त्याग करने पर रक्त बड़ी दूर तक पानी में बहकर गया।

मेरा स्वास्थ्य उस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में उचित दवा के सेवन से बिल्कुल ठीक हो सकता था, लेकिन उनके इलाज से मैं निरन्तर कमजोर होता गया, दुबारा वह देखने भी नहीं आये, मेरे याद करने पर ही वह आये लेकिन अब उनके लिए मुझे स्वस्थ करना उनके वश के बाहर था।

अब मुझे अन्य दवाओं से भी लाभ न होता था, दवाओं से मेरी पेट की कब्ज की स्थिति सामान्य हो गई, लेकिन गुदा मार्ग का पूर्व अवस्था में लाना मुश्किल काम हो गया।

मैं बरेली महानगर के एक प्रसिद्व आयुर्वेदिक चिकित्सक से जाकर मिला, उन्होंने परीक्षण में निर्णय दिया कि आपके फिशर नामक रोग हो गया है। वह मरीज का क्षार सूत्र विधि से इलाज करते थे। फिशर गुदामार्ग पर एक न भरने वाला कट होता है, जो ठीक तो होता है शौच जाने पर फिर कट खुल जाता है, और रक्त का प्रवाह जारी रहता है। मैं वहाँ भी उनके इलाज से ठीक न हो पाया।

बाद में एलौपैथिक एक चिकित्सक ने जख्म को सुखाने वाली अपनी पावर फुल दवा का सेवन कराकर मुझे ठीक किया, लेकिन लम्बे समय तक बीमारी की पकड़ ने मुझे कमजोर कर दिया था।

(मोटर साइकिल खाई में घुसी)

आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर था, लोगों के जन जीवन पर आगन्तुक इस त्रासदी ने भय का बवंडर खड़ा कर रखा था। रोज डयूटी पर जाने वाले विभिन्न विभागों के कार्मिक भी सतर्कता बरतते हुए प्रभु का नाम लेकर ड्यूटी पर जाते थे।

एक खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय को तत्काल एक स्कूल का निरीक्षण कर उसकी आख्या (रिपोर्ट) सौंपने का आदेश जारी हुआ। अधिकारी महोदय को निरीक्षण के लिए अकेले जाने से डर लगता था, उन्होंने मुझसे तीन बजे अपराह्न साथ चलने के लिए कहा मैंने कहा कि साहब आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र है, एक व्यक्ति को साथ और ले लीजिए। उन्होंने एक शिक्षक को और साथ में लेकर अपनी राजदूत मोटरसाइकिल पर बिठाया। अधिकारी महोदय एक नेत्र से दिव्यांग थे, शायद यह आरक्षण ही उनकी नियुक्ति में सहायक रहा होगा। बरसात के दिन थे, उन दिनों खेतों में धान की फसलें लहलहा रही थी, चकरोड के रास्ते होकर सुदूर स्थित विद्यालय का निरीक्षण करना था, आतंकवाद के कारण शिक्षक विद्यालय नहीं जाते, और कभी–कभी विभाग को विद्यालय न खुलने की

शिकायत भी मिलती रहती थी। उनके काँपते हाथों के साथ ही मोटरसाइकिल का हैन्डल भी काँप रहा था। साथ बैठे हम दोनों लोग मोटरसाइकिल चलाना नहीं जानते थे, और हमें केवल साइकिल चलाना ही आती थी, साथी शिक्षक ने अभी तक मोटरसाइकिल नहीं चला पाई थी, न जीवन के शेष समय में चलाना ही सीखी। अधिकारी महोदय भी प्रशिक्षित वाहन चालक नहीं थे, कई जगह बरसात की गीली जमीन उनके चालन कार्य में बाधा पहुँचा रही थी। यद्यपि पक्की सड़क पर डर के मारे उनकी मोटरसाइकिल दूसरो को अपनी टक्कर देने से बची।

हमारे अधिकारी थे, हम लोगों को उनके साथ प्रशासन में रहते हुए आज्ञा अनुपालन में रहना ही था।

धान के खेतों के निकट, गीली रास्ते से जाती हुई तेजी से मोटरसाइकिल फिसली, और सभी सवारों को खेत के निकट लगी पानी भरी खाई में ले जाकर गिरा दिया। खाई के किनारे पेड़ की सूखी टहनियां, किसान ने बाड़ के रूप में फसल को बचाने हेतु लगा रखी थी। मोटरसाइकिल के गिरने के साथ ही हम लोग भी पानी में गिरे सूखी टहनियों ने खुरेंच जैसी चोटें पहुँचाई, एक्सीलेटर के दबने से अधिकारी महोदय का वाहन खाई को पारकर खेत में जाकर गिर गया, और वहाँ उनका भी उस गीली मिट्टी ने अभिषेक कर दिया।

यद्यपि हम बच गये, हल्की फुल्की खुरेंचों के साथ, लेकिन गीली मिट्टी से अभिषिक्त निरीक्षक महोदय ने उसी अवस्था में जाकर स्कूल की रिपोर्ट तैयार की। काफी समय बीत गया, सभी ने सेवा से अवकाश भी प्राप्त कर लिया, लेकिन उस दिन की याद अभी भी बनी हुई है।

(इलेक्शन डयूटी उपरान्त पैरों में दर्द)

उस समय की चुनाव ड्यूटियां जीवन में तरह–तरह की यादें छोड़ जाती थी। पंचायत चुनाव होना था, ग्राम प्रधान के चुनाव में हमारी डयूटी पोलिंग ऑफीसर के रूप में नेपाल सीमा के अत्यंत निकट पड़ने वाले एक ग्राम में लगी। मुझे याद है कि 7 जुलाई को पोलिंग होनी थी, बरसात खूब शुरू हो चुकी थी। उस समय लगातार बिना रूके 48 घन्टे बराबर पानी गिरा था। हल्की बूँदाबाँदी में पोलिंग पार्टियां तत्कालीन उपलब्ध साधन अर्थात ट्रकों से रवाना हुई। ट्रक कच्चे पक्के कीचड़ भरे मार्गो पर दौड़ रहे थे, नेपाल सीमा के निकट बहने वाली शारदा नदी पर प्रतिवर्ष बनने वाले पुल को हटा दिया गया था। अतः काफी दूरी तय कर लखीमपुर के पलिया में शारदा नदी पर बने पुल से गन्तव्य तक पहुँचना था। ट्रक कच्चे रास्तों से गुजरता हुआ, पहिये से कीचड़ उछाल–उछाल कर ट्रक में पीछे बैठी पोलिंग पार्टियों का अभिषेक करता

हुआ दौड़ रहा था। मार्ग के जाते समय ट्रक एक कच्चे रास्ते में जाकर पहिले से भरे हुए गढढे के कीचड़ में जाकर फँस गया, और अब पोलिंग पार्टी को अपने बैलेट बाक्स और बैलेट पेपरों के साथ वही उतरना पड़ा। अब हम लोगों को तीन किलोमीटर अपने सामान के साथ रह–रहकर होने वाली बरसात में पैदल यात्रा करनी पड़ी। ग्राम प्रधान के चुनाव में उस समय चुनाव पार्टी के लोगों की खातिरदारी करने की लोग किसी बड़े धार्मिक पुण्य का लाभ लेने के कार्य से कम नहीं समझते थे। उस दिन होने वाली बरसात में गन्ने के एक खेत के निकट, अपने समर्थको तथा पोलिंग पार्टी के शौकीन लोगों के लिए व्यवस्था उन खाने पीने वालों ने कर रखी थी, ट्रेक्टर पर सवार एक कन्डीडेट के समर्थक दो लोगों ने सिर में साफा बाँधे पैदल पोलिंग बूथ की ओर बढ़ती हुई पोलिंग पार्टी को इस आग्रह के साथ घेर लिया, कि वह उनके साथ चले और खाने पीने की उनकी व्यवस्था में शामिल हो, खैर उन्हें पार्टी में एक सज्जन होमगार्ड मिल ही गये जिसे उन्होंने पास में लेजाकर शराब पिला दी थी, तब तक दूसरी पार्टी के समर्थक अपने ट्रैक्टर पर सवार होकर पार्टी से रास्ते में मिलने आये, वह भी शराब पीये हुये थे, उनके पहले कृत्य को देखकर उनमें खूब कहासुनी होने लगी। लड़ते–लड़ते सभी पोलिंग स्टेशन पर पहुंचे पोलिंग स्टेशन नेपाल सीमा से सटे एक गांव में वहाँ रहने वाले बंगाली बाबा की एक छप्परपोश कुटिया में थी, जहां वह स्थायी रूप से रहते थे। रात्रि के अंधकार ने बंगाली बाबा की कुटिया में पहुँचने से पहले ही अपना पसारा फैला दिया था। तेज हवा के झोके पास खड़े गन्ने की फसल जमीन की गीली मिटटी मे बिछा रहे थे, शराब पिये हुए प्रत्याशी अब वहाँ अपने समर्थकों के साथ पहुँच कर उस बरसात के तूफानी वातावरण को और अधिक भयभीत बना रहे थे। सेक्टर मजिस्ट्रेट का वहाँ तक पहुँचना और किसी से बात करना अँधेरी बरसाती रात्रि में बिल्कुल संभव नहीं था। पुलिस की सहायता की उम्मीद तो न के बराबर जान पड़ती थी। लड़ते झगड़ते तलवार लहराते प्रत्याशियों पर मौसम की इस मार का कोई असर दिखाई नहीं पड़ रहा था। उम्मीद बार तीसरा प्रत्याशी भी अब वाक्यों की इस लड़ाई में मैदान में उतर चुका था। तेज हवा के झोकों ने पूरी पोलिंग पार्टी के कपड़ों में ट्रक द्वारा उठाये गये लगे कीचड़ को पानी की बौछारों से धोकर स्नान करा दिया और अब वह उनके शरीरों को कँपाने का काम कर रही थी।

वैलट पेपर बचाना मुश्किल भरा काम था। जैसे तैसे पार्टी के लोगों ने अपनी छाती से चिपकाकर उस बरसाती पानी से उन बैलट पेपरों को बचाया, चुनाव कर्मी रात्रि भर भूखे पड़े रहे।

उस दिन उस कुटिया निवासी बंगाली बाबा जिसकी जटाएं पैरों तक फैली हुयी थी, बाबा की कड़क भरी डाँट ने प्रत्याशियों के शराब के नशे को ठंडा कर दिया, और देर रात्रि वह वहाँ से चले गये।

सवेरे, हल्की बूँदाबाँदी के साथ वोटिंग शुरू हुई, बरसते हुए पानी के साये में सारे दिन वोटिंग हुई। मतदाताओं में काफी उत्साह दिखाई दिया, जैसा कि प्रधानी के चुनाव में दिखाई देता है। बरसते पानी में ही वोटिंग खत्म हुई, और तभी सेक्टर मजिस्ट्रेट ने आकर सबको साथ लेकर चलने को कहा, और उसी हालत में वापिस आकर हम लोगों ने अपना सामान लाकर जमा किया।

इस इलेक्शन डयूटी के बाद घर वापस आने पर मेरे पैरों में भंयकर दर्द शुरू हुआ, और मैं दो तीन महीने पीड़ा से परेशान रहा दवाएं चलती रही, नगर के रिंगना बाबा स्थान पर हाजिरी लगाते रहे, युवावस्था थी प्रभु की कृपा हुई और अन्ततोगत्वा हम स्वस्थ हो गये, और एक बार फिर ईश्वर की दया के प्रतिभागी हुए।

(साइटिका का दर्द)

रिंगना का इलाज

कार्य की व्यस्तता और आगुन्तक परेशानियों ने मुझे अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं का दिग्दर्शन कराया। और मुझे उन बीमारियों से अपने आत्म बल और विवेक के हथियार के साथ लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा था। किन्हीं कारणों से मुझे एक पैर में साइटिका का दर्द प्रारम्भ हो गया, उस समय भी मुझे दो चरणों की सम्पन्न होने वाली डयूटी करनी पड़ी थी। चुनाव डयूटी करनी ही थी, मेरे पैर में भंयकर दर्द था, लेकिन मैंने कर्तव्यवश डयूटी कभी नहीं छोड़ी, और मैं डयूटी करने गया, लेकिन मैंने देखा कि कुछ कर्मचारी वगैर किसी समस्या के अपनी डयूटी कटवा लेते हैं, और इलैक्शन में होने वाली नेतागिरी से अपने को जोड़कर नेतागिरी करने लगते हैं।

मैं लंगड़ा–लंगड़ा कर चल रहा था। कुछ दिन पहले से रोग ने शरीर को एक पैर से अपंग बनाना शुरू कर दिया। डयूटी से कुछ दिन पूर्व मैं अपनी एक विवाहित पुत्री के घर उसका हाल चाल लेने गया था, लेकिन पैर में होने वाले दर्द ने मुझे इस तरह से बेचैन कर रखा था,

कि मुझे थोड़ा सा भी चलने में परेशानी होती थी। मुझे याद है, कि मेरे समधी जी ने मुझे एक व्यक्ति के साथ अपने एक परिचित चिकित्सक के पास इलाज के लिए भेजा था, जिसने मेरे पैर में दो इन्जेक्शन लगाये थे, और तब मैं कठिनता से घर तक आ पाया था।

मैंने अंग्रेजी दवाओं के सहारे अपनी इस कठिन पीड़ा में भी इलेक्शन की इन डयूटियों के काम को पूरा किया। मैंने जीवन में कभी सेवाकाल के दौरान मेडिकल लीव नहीं ली। लेकिन निरन्तर पब्लिक सम्पर्कों से जुड़ा रहकर आने वाली परेशानियों के निदान जरूर खोजा करता था।

संयोग से मैं अपनी मोटरसाइकिल से पास के गांव में किसी काम से गया। मार्ग से गुजरते हुए एक परिचित सरकारी स्वास्थ्य कर्मचारी ने मुझे आवाज देकर चाय के लिए आमंत्रित किया। मैंने उनके आग्रह को स्वीकार कर उन्हें अपनी इस पीड़ा से अवगत कराया।

मेरी परेशानी जानकर उन्होंने मुझे बताया, कि जैसा आप जानते हैं, कि मैं एक सरकारी स्वास्थ्य कर्मी हूँ, मेरी पत्नी भी इस पीड़ा से बहुत परेशान थीं, मैंने डाक्टरी उपचार का सहारा लिया दवा से लाभ न हुआ, और डाक्टरों ने ऑप्रेशन की सलाह दे डाली।

मेरे दिन अच्छे थे, मुझे किसी ने सुदूर रहने वाले एक व्यक्ति का पता दिया जो कड़ा पहनाकर उक्त दर्द को ठीक कर देता है। मैं अपनी पत्नी को उस व्यक्ति के पास ले गया, और तब से यह ठीक हो गई है। बाद में उन्होंने अपनी पत्नी से भी मेरी वार्ता करवाई।

मैंने उनकी उस सलाह पर ध्यान दिया, दिये गये पते के अनुसार मै भी उपचार हेतु उसकी शरण में गया। उसने भी मुझे मेरे हाथ में कड़ा पहनाया, और कुछ उपाय करने को कहा, जिन्हें मैं आसानी से कर सकता था। आज मैं हरीश श्रीवास्तव को याद कर उनको धन्यवाद दे रहा हूँ, जिसके उपचार से ठीक होकर एक स्वस्थ जीवन जी रहा हूँ। जिसने वगैर पैसे मेरा इलाज सेवाभाव से किया।

फिस्टुला (भगंदर की पीड़ा)

मैंने पूर्व में वर्णित एक चेप्टर में बताया, शरीर में होने वाली कब्ज के कारण बवासीर की मेरी पीड़ा को एक नीम हकीम अप्रशिक्षित चिकित्सक ने अपनी चिकित्सा से और बढ़ा दिया था, और मैं अब बवासीर के बिगड़े हुए स्वरूप फिस्टुला का शिकार हो चुका था। मुझे शौच के लिए जाते वक्त गुदा मार्ग में भंयकर जलन के साथ रक्त का आना जारी हो गया था। जलन की स्थिति चार–चार छःछः घण्टे बनी रहती थी, मैं बहुत परेशान हो उठा था।

कुछ लोगों का कथन यह भी है, कि कुछ लोग आनुवांशिक रोगी भी होते हैं। यद्यपि मेरे पिता जी को भी अपने जीवन में यह रोग हो गया था, जो उस समय एक बंगाली डाक्टर के इलाज से ठीक हो

गये थे, और एक स्वस्थ जीवन जिये मेरी माता जी भी इस रोग से पीड़ित रही।

लेकिन मेरा मानना है, कि यदि इस बारे में सतर्कता रखी जाय, तो रोग की स्थिति बिगड़ने की संभावना न के बराबर रहेगी, मेरे परिवार में अन्य कोई इस रोग से पीड़ित नहीं रहा।

एक बार जब गर्मी की ऋतु प्रारम्भ हो चुकी थी। अप्रैल का महीना था, मेरी स्थिति बिगड़ रही थी, छुटटी के दिन अपने खेत में एक बोरिंग करवा रहा था, मुझे गुदा मार्ग से रक्त आना जारी हो गया, जलन ने भंयकर रूप धारण कर लिया। मैं निराश अत्यंत परेशान ईश्वर का स्मरण करता रहा कि हे! प्रभु मेरे किन कर्मो की सजा मुझे मिल रही है, अब मुझे इस रोग से छुटकारा दिलाने की आपकी अहेतुकी कृपा बन ही जाती है, मुझे इस रोग को ठीक करने में बंगाली कुशल डाक्टर की तलाश थी। क्योंकि मेरे पिता जी को इसी प्रकार के डाक्टर ने अपने उपचार से ठीक किया था। प्रभु कृपा से एक कुशल डा0 का परिचय प्राप्त हो गया। डा0 सिकदार उनके पास शैक्षिक डिग्रीया भले ही न रही हो, परन्तु वह अपने कार्य के प्रतिपूर्ण ईमानदार वफादार और आश्वस्त थे। मेरे द्वारा उनसे भेंट करने पर पहले तो मेरा इलाज करने में हिचकिचाये परन्तु मेरे द्वारा उन्हें यह दिलासा देने पर कि केस के बनने बिगड़ने के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूँगा, उन्होंने मुझे सामान्य तौर पर वी0पी0, शुगर की जाँच कराने को भेजा, जाँच कराने पर जो सामान्य पाया गया।

डा0 सिकदार ने एक इंजेक्शन से पीड़ा वाले स्थान को संवेदन हीन बनाते हुए मेरा ऑप्रेशन कर दिया, और एक माह तक तीसरे दिन घाव पर पट्‌टी करते रहे। हालांकि जून के आखिरी सप्ताह में आप्रेशन हुआ था, मैंने उनके बताये गये सुझावों पर अमल किया और मैं अन्तोगत्वा पूर्ण स्वस्थ हो गया।

कहने का अर्थ यह है, कि महत्व शैक्षिक योग्यता का अपनी जगह है परंतु कार्य के प्रति दक्ष होना अलग बात है। डिग्रियों के बल पर दक्ष हुए बिना इलाज से अनेक लोगों को मैंने इस रोगसे प्राण गँवाते देखा है। मैं पुनः उन दक्ष डाक्टर महोदय को धन्यवाद देकर याद करता

हूँ, कि उनके इलाज ने तथा उनके द्वारा दिये निर्देशों का अनुपालन कर फिर एक बार मैं स्वस्थ जीवन जीने के लिए खड़ा हो सका।

साढ़ के झपटने से कंधे में चोट

मैं अपने जीवन की उन महत्वपूर्ण घटनाओं को जिनमें मुझे पीड़ा परेशानी का सामना करना पड़ा। पाठकों /श्रोताओं के सम्मुख रखने में एक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ, कि वह अपने हृदय में इन घटनाओं का मेरे प्रति कैसा आकलन करेंगे।

स्कूल में शिक्षण कार्य चल रहा था, सर्दियों की सीजन थी, बच्चो को खिली हुई गुनगुनी धूप में विद्यालय प्रांगण में अलग–अलग कक्षाओं में शिक्षण हेतु चटाइयों पर बिठाया गया था। अध्यापक लोग कक्षाओं में बैठे विद्यार्थियों को उनके विषय से संबंधित जानकारी दे रहे थे। स्कूल की टूटी हुई चहार दीवारी को नया स्वरूप देने हेतु ढहाया जा चुका था, अब छात्र प्रांगण में दूर से दिखने वाले खुले स्थान पर शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। प्रांगण दूब घास से आच्छादित था। मैं सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों को उनके विषय से संबंधित, ज्ञान सामने पड़ी कुर्सी पर बैठकर दे रहा था। पड़ोस में एक तिगुड़िया के सहारे श्याम पट लगाया गया था, जो एक तिगुड़िया में लगने वाली एक फन्टी के सहारे टिका था। थोड़ी दूर पर तोड़ी गई बाउन्ड्री का मलवा परिसर में ईट के

छोटे छोटे रोड़ों के रूप में बिखरा पड़ा था। सहसा एक गाय ने विद्यालय के खुले प्रांगण में प्रवेश किया, उसके पीछे–पीछे एक साढ़ गाय का पीछा करता हुआ आ धमका गाय शनैः शनैः सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों की ओर ही बढ़ती चली आ रही थी।

आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को थोड़ी दूर पर कक्षा की कुर्सी में बैठे हुए, हमारे एक वरिष्ठ शिक्षक विषय का ज्ञान दे रहे थे।

गाय को हमारी कक्षा के विद्यार्थियों की ओर बढ़ती देखकर वरिष्ठ शिक्षक महोदय ने दूर से हमें पुकार कर उन दोनों जानवरों के हमले से छात्रों को बचाने हेतु सचेत किया। मैंने श्यामपट की तिगुड़िया के डन्डे को निकालकर जैसे ही गाय को भगाने का प्रयत्न किया, साढ़ ने गाय को छोड़ा, और मेरा पीछा करना शुरू किया, मैं पीछे हटा तेजी से भागा मेरी सहायता के लिए हमारे पीछे हमारे वही वरिष्ठ शिक्षक आगे आये, लेकिन हम दोनों आपस में टकरा गये, मेरा जूता घास पर फिसला, मैं अपने एक कांधे के बल जमीन पर गिरा और मुझे चोट लगी।

उक्त स्थिति को भांपकर छात्रों ने मोर्चा संभाला और रोड़ो से प्रहार कर गाय को भगा दिया। साढ़ भी गाय के पीछे–पीछे विद्यालय प्रांगण से निकल गया।

मेरे कंधे में चोट लग चुकी थी। तुरन्त एक छात्र मेडिकल से आइंटमेन्ट लाया, उसे हाथ में मला लेकिन हाथ पूरा उठता नहीं था। लगभग छः माह हाथ उठाने में दर्द होता था, दवाएं काम नहीं कर रही थी, लेकिन हाथ में टूट फूट नहीं थी। संयोग से एक दिन मेरे मकान की गली से एक सिंगी लगाने वाला देहाती ढंग से पारम्परिक उपचार करने वाला एक व्यक्ति निकल रहा था। उसको मैंने बुलाया, उसने सिंगी के प्रयोग से कांधे में जमे दूषित खून को मुँह से खींचकर बाहर निकाला, उसी दिन से मैं ठीक हो गया, और मेरा हाथ ऊपर उठकर पूर्ववत कार्य करने लगा। मुझे उस आयी हुई परेशानी से इस प्रकार मुक्ति मिली।

(खुजली का प्रकोप)

खुजली से जिसमें सारे बदन में दाने निकलते हैं, और मनुष्य खुजलाते—खुजलाते अपने शरीर की त्वचा को लाल कर लेता है। कहते हैं, कि जब आम के बाग और उनमें बहुतायत से देसी आम के पेड़ पाये जाते थे, तब जनता उन्हें खूब चूसती थी, और खाती थी, आम गर्मियों में पाया जाने वाला एक स्वादिष्ट खट्टा, मीठा फल है। मीठा आम स्वास्थ्य बर्धक होता है, लेकिन खट्टे आम का रस त्वचा रोगों को उत्पन्न और उनमें वृद्धि करने का कारण जरूर बनता है। आज कल आमों का जूस डिब्बा बन्द पैकटों, या पैकों में बाजार में उपलब्ध रहता है। महीनों पुराना, हर सीजन में मिलने वाला, प्रयोग करने पर शरीर को लाभ पहुँचाता, अथवा हानि मुझे इसका ज्ञान नहीं है। उस समय बरसात आते—जाते समाज में यह रोग तेजी से फैल जाता था, सर्दियों में यह रोग बहुत बड़े स्तर पर लोगों को प्रभावित कर बीमार बना देता था। मैंने अपने एक पहले एपीसोड में उल्लेख किया, कि रोग की तीव्रता पर हमारे मुख्य अध्यापक रोग से ग्रसित विद्यार्थियों को अलग चटाई पर बिठाते थे, कि

ग्रसित बच्चों से यह संक्रमण अन्य विद्यार्थियों को अपनी चपेट में न ले ले।

सारे के सारे परिवार में फैलने वाले इस रोग ने मुझे व मेरे परिवार को तब अपनी चपेट में लिया, जब हमारे दूर से एक रिश्तेदार अपनी पत्नी के साथ सर्दियों की सीजन में हमारे घर मेहमानी के लिए आये, वह पूर्णतयः इस रोग से संक्रमित थे, स्वयं सरकारी सेवा में शिक्षक थे, मैने संस्कार वश उनकी सेवा की, रात्रि में वह मेरे घर में ही रूके उस समय मैं गांव से आकर नगर में निवास करने लगा था। उचित भोजन व्यवस्था के साथ मैंने उनके लिए ओढ़ने बिछाने हेतु मौसम अनुसार अनुकूल वस्त्र रजाई भी उपलब्ध कराई, सुबह नाश्ते के बाद जब वह मेरे घर से विदा हुए तो हमें और हमारे परिवार के लिए आशीर्वाद स्वरूप खुजली की व्यवस्था कर गये।

बहुत थोड़े दिनों में ही मुझे व मेरे परिवार को रोग ने घेरे में लिया, पत्नी को आसानी से मिलने वाले नीम की पत्तियों में उबाले हुए पानी से गर्म वस्त्र धोने पड़ते थे, जो कई–कई दिन सर्दी के कोहरे भरी सीजन में सूखते ही नहीं थे। उस समय हम डाक्टरी परामर्श से बदबूदार दवा एस0के0 व्याल का ठंडी सीजन में बदन में लेप करते थे। परन्तु रोग पर काबू न पाया जा सका, हमारी धर्म पत्नी और हमारे पैरों की पिंडलियों में इस का काफी असर था, जोड़ों की सन्धियों में यह रोग तेजी से जड़े जमाता है।

खोजते–खोजते फिर मैंने एक भद्र पुरूष बंगाली डाक्टर को खोज ही लिया। जिन्होंने क्रमशः प्रति तीसरे दिन इंजेक्शन द्वारा दवा का प्रयोग कर हमारे सारे परिवार का इलाज कर ठीक कर दिया।

आज कल पर्याप्त चिकित्सीय उपलब्धता तथा समुचित जानकारी होने से इस रोग का प्रसार बहुत कम देखा जा रहा है। ग्रामीण लोग भी दृश्य अन्य उपकरणों के अवलोकन श्रवण के माध्यम से अपने को बहुत कुछ सुरक्षित कर पाते हैं रोग की सफाई में सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(नितम्बों में दाद)

गीले कपड़े पहनने के कारण दाद के चकते

खुजली में खुजलाने की समस्या के कारणों में शरीर के किसी अंग में दाद का हो जाना भी रोगी को बार–बार पीड़ित स्थान को खुजलाने पर मजबूर करता है। दाद भी अधिकतर सन्धि वाले स्थानों पर अधिकांश बरसात के सीजन में अपनी जड़ें जमाता है। जब वह स्थान नमीयुक्त हो, सूख न पाय, या गीले कपड़ों का प्रयोग बदन में करने से दाद नामक रोग घेर लेता है।

दाद आवश्यक नहीं, कि उक्त स्थानों पर ही यह पैदा हो, लेकिन यह कभी पेट, पीठ, पैरों या चेहरे पर भी हो सकता है। नहाकर उठे और सीधे आफिस जाने की तैयारी में बदन सूखा नहीं, गीले बदन कपड़े पहने, गर्म खाना खाने लग गये, आप ने दाद होने की संभावना को जन्म दे दिया। दाद एक प्रकार से छोटे–छोटे घेरों में उभरते दानों में प्रकट होता है। लापरवाही से यह अथवा खुजली पड़ने पर अपना

बिगड़ा रूप प्रकट कर देता है। चेहरे पर आँखों के निकट पीठ पर तेज दवा लगाने से हमेशा परेशानी का सामना करना पड़ता है।

मेरे को भी सन्धि स्थान या नितम्बों में डयूटी जाने में जल्दी करने के कारण यह समस्या हो गयी। मैंने जीवन में कभी बाहर का भोजन करने से स्वयं को दूर रखने का प्रयास किया। पत्नी के हाथ का बना भोजन करके ही घर से निकलता, और घर पहुँचकर घर का बना भोजन ही प्राप्त करने की आदत बन गई थी। नितम्बों में बनी इस समस्या में दवा तो असर करती थी, लेकिन ड्यूटी के दौरान जब मोटरसाइकिल को संस्था के बाहर धूप में खड़ा करना पड़ता था, और धूप में जब वाहन की सीट गर्म हो जाती थी, और वापिस लौटने पर उसमें सवारी करने में पीड़ा खूब बढ़ जाती थी, और मैं दूसरा साधन न होने के कारण पीड़ा झेलते रहने की दिशा की ओर बढ़ रहा था।

खैर बहुत कुछ सावधानी और इलाज से मैं ठीक हो गया, और फिर सावधानी रखने के साथ ही स्वस्थ जीवन जीने की ओर बढ़ने लगा।

(बरहा क्रास करते समय पैर की चोट)

बरसात के मौसम में जमीन गीली हो जाती है, पानी भरने से कच्ची जमीन कीचड़ युक्त पानी से भर जाती है, हर जगह कच्चे पक्के मार्गों पर वाहन चलाना कभी–कभी स्थिति को खतरनाक बना देता है। विशेषकर दुपहिया वाहनों को ड्यूटी पर जब टाइम से पहुँचने की आकांक्षा में वाहन चालक अपने वाहन को तेजी से चलाते हैं। पक्की सड़कों पर भी यदि फिसलने वाली कोई वस्तु जैसे गन्ने की मैली, जिसे यदि कोई चौपहिया वाहन चालक अधिक लोड भरने के कारण रोड पर गिराता चला गया हो, और उसके पीछे से आता हुआ कोई दुपहिया वाहन का चालक, उस मैली के ऊपर से वाहन को निकालने का प्रयास करे, तो फिसल कर गिरने की संभावना को बढ़ायेगा और निश्चित ही चोट खायेगा। कभी–कभी अन्य फिसलन युक्त चीजों पर भी दुपहिया वाहन सवार तेजी से निकलते हुए कोहरे भरे रास्तों पर भी धोखे से टकरा जाते हैं।

कुछ चालकों को साइड का तो अधिकांश तौर से ज्ञान है परन्तु सड़क पर वाहन चलाने के अन्य नियमों का बिल्कुल ही ज्ञान नहीं है, जो दूसरे को मुसीबत में डालते हैं, और खुद भी मुसीबत में पड़ते हैं। विदेश से लौटा एक छात्र जो कार ड्राइविंग कर रहा था, कार की बगल की सीट पर मैं बैठा हुआ था, उसने सामने आते हुए एक चौपहिया वाहन के चालक के बारे में बताया, कि इसको चालन के नियमों का आधा अधूरा ही ज्ञान है, इसके वाहन की लाइट सीधे मेरी आँखों पर पड़ रही है। एक बटन दबाकर यह उस लाइट का रूख सड़क पर नीचे मुझे सामने से आता देख कर सकता था, यदि मैं सतर्कता न बरतूँ तो दुर्घटना की संभावना बढ़ जायेगी, अब हमारी आँखे इसके वाहन से पड़ने वाली लाइट से चुधियां सी रही है।

खैर, मैने जनहित में इस प्रकरण का इस एपीसोड में उल्लेख किया। मैं ड्यूटी जाने की जल्दी में था, साथ में सहकर्मी एक शिक्षिका भी मेरे दुपहिया वाहन पर विद्यालय समय पर पहुँचने की अनुनय के कारण सवार थी, थोड़ा मुझे कच्चे मार्ग से गुजरना था, जो एक छोटे से बम्बा के किनारे से होकर जाता था, बम्बे की सिल्ट सफाई के दौरान उससे निकली चिकनी मिट्टी लाकर रास्ते में पहले ही डाल दी गई थी, पूर्व सिंचाई के दौरान किसान ने बम्बा से एक बरहा अपने खेत में बम्बा का पानी ले जाने हेतु बना रखा था, जिसको बरसात के पानी ने भर दिया था, साथ ही निकली सिल्ट को फिसलन युक्त बना रखा था। जैसे ही मैंने पानी भरे बरहा को अपनी मोटरसाइकिल से क्रॉस करना चाहा पहिया फिसल गया, मोटरसाइकिल तथा पीछे बैठी शिक्षिका को गिरने से बचाने के प्रयास में मैंने अपने पैरों पर अधिक जोर दिया। गिरने से बचाने में मेरा प्रयास सफल रहा लेकिन दाहिने पैर के पंजे में चोट लगी और मैं आज तक कभी–कभी उस चोट से पीड़ित रहता हूँ, दवा कराने पर भी मैं पूर्णतयः ठीक नहीं हुआ। डाक्टर ने ऑप्रेशन कराने की सलाह दी परन्तु मैंने हल्की पीड़ा जानकर नहीं कराया कोई विशेष समस्या नहीं रही।

कहने का तात्पर्य यह है, कि हम पर्याप्त सतर्कता रखकर अपने तथा दूसरों को अचानक आने वाली मुसीबतों से बचाकर रख सकते हैं, और एक अच्छा जीवन जी सकते हैं।

(शरीर पर दागों की समस्या)

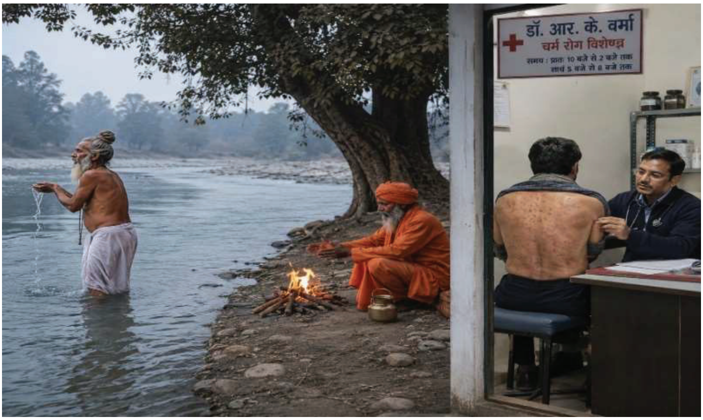

मेरा मानना है, कि जिस तरह से एक देश की समस्याओं को उस देश के प्रधानमन्त्री अपने राष्ट्रध्यक्ष के साथ, अपने कुशल सहयोगियों के साथ मिलकर सुलझाते रहते हैं, तथा सहयोगियों के सहयोग से अपनी परिष्कृत बुद्धि और विवेक से जनता को हर आने वाली मुसीबत से बचाते हैं, प्रजा पालते है, उसी प्रकार परिवार रूपी अत्यंत छोटी इकाई को इस परिवार का मुखिया हर प्रकार की मुसीबत झेलकर अपनी धर्मपत्नी के सहयोग से जिसे गृह मन्त्री का दर्जा परिवार में प्राप्त है, चलाता है, और रोज–रोज आयी समस्याओं और मुसीबतों से निकालकर सदस्यों को आगे उन्नति से बढ़ने का मार्ग उपलब्ध कराता रहता है। समर्पित और त्यागी जीवधारी इन प्रयत्नों में त्याग और तपस्या के वश सन्यासी की तरह अपने जीवन को जाड़े की ऋतु में ठंडे पानी में खड़ा होकर और भंयकर गर्मी में पंचाग्नि तापकर शरीर को गलाकर परहित में निरत रखता है। संसार का नियम है, कि हम दूसरों की पुत्री का विवाह अपने पुत्र के साथ करके घर में लाते हैं, और उसको अच्छा आवास यथा शक्ति उपलब्ध कराकर बाहर के खुले बरामदे में सर्दियों में सोते हैं, और हमारा जीवन और भोजन भजन भी उसकी दया पर निर्भर हो जाता है, जिसे कभी देखा

नहीं, जिसने हमें कभी नहीं देखा, दोनों परोपकार में निरत हो जाते हैं। यही नियम हमारी बेटी पर भी लागू हो जाता है, यदि इस नियम की जरा भी अवहेलना की जाय तो परिवार के विघटन में देर नहीं लगती और परिवार बिखर कर मुसीबत क्या घोर मुसीबत में पड़ जाता हैं। इस प्रकार के अनेक उदाहरण इस समय समाज में दिखाई देते हैं।

इस नियम के अनुपालन में सन्यासी का रोल निभाते परिवार के मुखिया या परिवार की गृहणी जो अपने खून पसीने से परिवार का पालन पोषण करती है। अधिक परिश्रम करने के कारण बदलती और बढ़ती आयु में बीमारी की चपेट में आ जाती है। तब कर्तव्य उनका बनता है, कि अब इन तपस्वियों की देखरेख में उन्हें अपना अपेक्षित ध्यान रूपी सहयोग प्रदान करें।

मुझे भी कठिन तपस्या के इन क्षणों में गर्मी सर्दी में कर्तव्य पालन में एक कठिन रोग शरीर के पीठ में दागों के रूप में हो गया, और मुझे काफी दिनों तक दवा खानी पड़ी नियमित दवा खाने से मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया।

मेरी पत्नी को सुबह सवेरे जब वह सोकर उठती थी, तो कभी कभी उनके शरीर पर नीले–नीले धब्बों को रूप में जैसे चोट लगी हो उभर आते थे, जो दबाने या हाथ रखने पर दर्द करते थे, और स्वयं ही ठीक भी हो जाते थे। मुझे उसके लिए कभी दवा दिलाने की जरूरत नहीं पड़ी, न उन्होंने दवा खाई। उनकी कोहनी के निकट एक गाँठ थी, जो उसी अवस्था में उनके शरीर में पड़ी रही, न तो बढ़ी न कम हुई न ही उन्होंने उसका उपचार ही कराया।

जीवन में छोटी मोटी परेशानी बनी ही रहती है। मुझे कभी कोई ऐसा कर्मज रोग प्रभु की दया से नहीं आया जिसे पूर्णतयः ठीक न किया जा सका हो। मेरी भी प्रभु से यही बचपन से प्रार्थना रही कि यदि अनजान में भूल से कोई गलती भी आ बन पड़े, प्रभु हल्का दण्ड देकर आभास जरूर कराना। जिसके लिए आपके स्मरण की आवृत्ति बार–बार होती रहे हुआ भी ऐसा ही।

(तीव्र ज्वर, भीगने के कारण)

कर्तव्य पालन में मनुष्य को शारीरिक मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। अनुभवी एक वृद्ध द्वारा सुनाई गई अंग्रेजो के जमाने की कर्तव्य पालन की एक घटना, जब अंग्रेजी सेना में भर्ती देशी सैनिकों को अंग्रेज सैनिकों के मुकाबले अत्यंत कम वेतन मिलता था, तो उन देशी सैनिकों ने अंग्रेजी अफसर से पूछा, कि वेतन में इतनी विसंगति क्यों है। उसने कहा कि वेतन सभी का एक समान कर दिया जायेगा, मैं हुक्म देता हूँ कि तुम दो लोग सामने आती हुई ट्रेन की पटरी पर लेट जाओ। देशी सैनिक कुछ हिचकिचाये उन्हें ट्रेन की पटरी पर लेट जाने का मतलब मृत्यु का वरण करना था, उनकी हिचकिचाहट देख उस अफसर ने दो अंग्रेज सैनिकों को पटरी पर लेट जाने का हुक्म दिया, वे दोनों सैनिक आदेश के साथ ही रेल की पटरी पर लेट गये, आफिसर ने कहा बस यही वेतन की विसंगति का मुख्य कारण है।

अपनी ड्यूटी करते हुए मुझे भी इस प्रकार की लक्ष्मण रेखा का सामना करना पड़ा। मोबाइल मैसेज से मीटिंग में तत्काल पहुँचने का आदेश प्राप्त हुआ, वर्षा शुरू होकर अपने शबाब में हवा के झोके के साथ तेज से तेज तर होती जा रही थी। मुझे बुखार भी था, एक वृद्ध ग्रामीण

को अनुनय विनय कर साथ मोटरसाइकिल पर बिठा लिया जो वर्षा से बचने के लिए झीनी सी एक पुरानी लोई से अपने बदन को ढके हुए था, उसने मेरे पीछे की सीट पर बैठकर उस पुरानी भीगी झीनी लोई से मेरे बदन को भी ढक लिया। परन्तु सामने आती हुई तेज हवा के साथ बौछार मेरे सीने पर पड़ रही थी। कर्तव्य पालन की परीक्षा में मैं अपने भाई जैसे सहयोगी जो बार–बार लोई से मुझे ढक कर बरसा की तीव्रता से बचाने का प्रयत्न कर रहे थे, उन जागन लाल के साथ मैं बीमार हालत में मीटिंग में पहुँचा। मेरी कर्तव्य निष्ठा से जलने वाले विरोधी षड़यंत्रकारियों के नुकसान पहुँचाने के प्रयत्न को मैंने अपनी उपस्थिति से विफल कर दिया।

उस दिन मैं मीटिंग के बाद जब विद्यालय वापिस लौटा, बरसात बिलकुल नहीं रूकी और शाम घिरने को आ गई, मैं हमेशा अपनी ड्यूटी के बाद अपने परिवार में नियमित आ जाता था। बुखार की तीव्रता के साथ ही भीगते हुए पानी में स्कूल बन्द कर घर लौट पड़ा। मोटरसाइकिल सड़क पर चलाते समय मुझे सामने का कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा है, मेरे हाथों में कंपन था, लेकिन एक राम नाम ही रामवाण जैसा काम कर रहा था, और मैं निरन्तर आगे बढ़ता हुआ कई किलोमीटर यात्रा कर अपनी पत्नी और बच्चों के बीच पहुँच गया, और कई दिनों के उपचार के बाद पूरी तरह ठीक हो पाया।

कई सैनिक अपने कार्य की कर्तव्यपरायणता में दुर्गम स्थानों में अपने कर्तव्य पथ पर चलते हुए प्राण गवां देते हैं। जो सभी कर्तव्य में लगे हुए लोगों के लिए हमेशा आदर्श बन जाते है।

कर्तव्य पथ हमेशा, समझने का विषय है। इस पर चलते हुए ही व्यक्ति के त्याग और बलिदान की गाथा लिखी जा सकती है।

(चक्कर आने की समस्या)

मैंने कामचोरी कभी नहीं की। सहयोग की मन में भावना के रहते मैने अपने साथियों के हाथ से उनका भी काम छीनकर पूरा किया। जब हम उनका कार्य निपटाते थे, तो उनमें से एक आध सज्जन मुझे बेवकूफ समझकर पीठ पीछे बचे हुए समय में बुराई कर कार्यक्षेत्र में प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाने के प्रयत्न में संलग्न रहते थे। हालांकि उनका यह असंगत कार्य कालान्तर ईश्रेच्छा से उन्हीं के लिए घातक साबित हुआ।

इस प्रकार सहयोग से कार्य करने की अधिकता ने मेरी व्यस्तता को और बढ़ा दिया था और अधिक व्यस्त रहने के कारण मुझे कई बार चक्कर आने जैसी समस्या का सामना करना पड़ा। मैं किसी अन्य की गतिविधियों के बारे में सोचता ही नहीं था। हो सकता है, कि देर तक बैठे रहने के कारण सिर पर चढ़कर बैठी हुई गैस की समस्या ने मुझे बीमार बनाया हो, लेकिन मैंने इसका भी डटकर मुकाबला किया और अपने को ठीक किया।

मुझे याद है, कि एक वृद्धा माता ने मुझे एक छोटी जड़ी का टुकड़ा दिया, और कहा कि यह घुमना (सिर का घूम जाना) की लकड़ी है। इसे धागे में पिरोकर गले में डाल लो। निशुल्क सेवा भावना की प्रतिमूर्ति मुझे वह माता याद है। मुझे याद नहीं कि उनकी जड़ी ने मुझे क्या और कितना लाभ पहुँचाया, परन्तु उनका समाज के पीड़ित लोगों के लिए सेवाभाव अभी भी याद है।

इतना तो अवश्य ही है, कि हम सत्य मार्ग पर चलते हुए यदि कर्तव्य का निर्वहन करते रहते हैं, तो पग–पग पर ईश्वर हमारी सहायता के लिए आ पहुँचता है। और हिम्मत रखने की सामर्थ्य प्रदान करता है।

मेरी छोटी पुत्री को, जब मैं एक दिन साइकिल पर बिठाकर घुमाने ले गया, जब वह पाँच–छः वर्ष की रही होगी। वह साइकिल से उतरकर खड़ी हुई चक्कर आया और गिर पड़ी। थोड़ी देर में अपनी पूर्ववत् अवस्था में आ गई, फिर उसे कभी कोई इस प्रकार की समस्या नहीं हुई।

छोटे बच्चे अपने अभिभावक या माता पिता की उँगली पकड़कर उन्हें घुमाने के लिए ले जाने की जिद करते हैं, और उनकी उँगली पकड़कर खींचते हुए आगे बढ़ते जाते हैं, जरा सी असावधानी से बच्चे की उँगली अभिभावक की मुट्ठी से छूट जाती है, और बच्चा नीचे गिर जाता है, और चोट खा जाता है। मेरी इसी पुत्री को जीने से उतरते समय इसी प्रकार एक बार सिर में काफी चोट लगी थी।

हमारी असावधानी अपने निकटस्थ लोगों के दुःख का कारण न बन पाये, हमें इसका सदैव ध्यान रखना चाहिए।

(बैरिको सील, लिपोमा (बड़ी गाँठ) हार्निया)

मुझे मेरे कार्य क्षेत्र में घटती कार्य क्षमता के साथ ही, कई अन्य रोग जनित परेशानियों ने एक साथ मेरे सेवानिवृत्त होने के साथ ही घेर लिया, जिसमें उदर के निचले हिस्से में उत्पन्न होने वाली हार्निया (आंत उतरना) का उभार स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा । हमने इस रोग के उत्पन्न होने पर विचार किया, कि मुझे यह पीड़ा क्यों आई, समझ में आया, कि मैं डयूटी पर समय से पहुँचने की जल्दी में जल्दी–जल्दी खाना खाकर और तुरन्त मोटरसाइकिल पर सवार होकर निकल पड़ता था। कभी–कभी, ऊँचे–नीचे सड़क में पड़े गड्ढों का भी सामना करने से यह रोग शरीर की घटती क्षमता के साथ हो जाता है।

मैने जब अपने इस रोग के बारे में जब डाक्टरी परामर्श लिया, तब अल्ट्रासाउंड परीक्षण की रिपोर्ट में परीक्षक डाक्टर ने केवल हार्निया होने की ही पुष्टि की, लेकिन रिफर करने वाले अनुभवी चिकित्सक ने कुछ और रोग होने की संभावना जताई, परीक्षण के लिए फिर

अल्ट्रासाउण्ड केन्द्र भेजा, परीक्षक डाक्टर ने फिर पूर्ववत् रिपोर्ट दी, उसी रिपोर्ट के आधार पर जब कुशल चिकित्सक ने मेरा ऑपरेशन प्रारम्भ किया। उन्होंने अन्य रोगों की अपनी संभावना को सही पाया, जाँघ के सन्धि स्थल पर बनी एक लिपोमा नामक उभरी हुई बड़ी गाँठ थी, जिसने अपने साथ बैरिको सील नामक रोग को अपना सह मित्र बनाकर मुझे पीड़ित करना जारी कर रखा था।

मैं ऑपरेशन थियेटर में था, ऑपरेशन के वक्त अनुभव में कुशल, अपने कार्य में प्रवीण दक्ष डाक्टर जिनके नाम का उल्लेख मैं आदर के साथ करना चाहता हूँ डा0 भगवानदास, जो अपनी टीम के साथ मेरे ऑपरेशन के लिए तैयार खड़े थे, मेरा पेट खोलकर बोले देखो यह क्या है। मैंने क्या कहा था, यह तो संलग्न एक बड़ी गाँठ है, उनके सहयोगी डा0 दुवे जी आड़े हाथों मेरी मदद को आये और बोले कि इनके इस कष्ट का भी आप इसी समय निदान कर दें, नहीं तो यह बाद में और परेशान होंगे। मुझे अर्द्धचेतन अवस्था में उन लोगों की सारी बातें सुनाई पड़ रही थी। आदरणीय डाक्टर साहब ने मेरी दयनीय दशा का मुस्कराते हुए, वगैर किसी शुल्क के बढ़ाये मेरे एक बार में ही सभी सफल आप्रेशन कर दिये।

बाहर की बैन्च पर बैठी मेरी पत्नी और पुत्र मेरा इन्तजार कर रहे थे। मुझे उन्होंने अपनी नम आँखों से मुझे देखा, मुझे स्ट्रेचर पर लाकर मुख्य बैड पर आहिस्ता से लिटाया गया, रात्रि में दर्द तो बहुत हुआ, लेकिन डाक्टर साहब के निर्देशन में, परहेज के अनुपालन के साथ मैं ठीक हो गया।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना भी मैं युक्ति संगत समझता हूँ, कि जब मैं अल्ट्रासाउंड शुल्क जमा कर रहा था, कि किसी उचक्के ने मेरे बुकिंग खिड़की पर झुककर पैसे जमा करते समय मेरा दस हजार कीमत का मोबाइल जेब से उड़ा दिया। बाद में कोतवाली में शिकायत दर्ज कराने पर भी मैं मोबाइल न पा सका। कहने का अर्थ यह है, कि यदि आप परेशान है तो आपके लिए कोई देवदूत है और कोई आपकी परेशानी बढ़ाने के लिए तैयार खड़ा है।

(आँख के ऑप्रेशन)

आँखों से निरन्तर काम लेने से आँखों की क्षमता बढ़ती आयु के साथ घटती जाती है। मुझे काम की व्यस्तता के कारण चालीस वर्ष की आयु में नजदीक के नम्बर का चश्मा लग गया था। बढ़ती आयु के साथ एवंम् लगातार मुसीबतों के आक्रमण के कारण मेरी दोनों आँखों में मोतियाबिन्द हो गया। पत्नी की मृत्यु के कारण मुझे अत्यंत दुःख ने घेर लिया, और सत्तर वर्ष की आयु में जाँच में मुझे पता चला, कि मेरे दोनों नेत्र मोतियाबिन्द से प्रभावित है, अब चश्में का कोई भी नंबर मेरी आँखों में काम नहीं कर रहा था।

इसके लिए मैंने पूर्व में कराये हितैषी लोगों से उनके ऑपरेशन के रिजल्ट के बारे में पूछा। इससे पहले मैं बरेली के एक नेत्र चिकित्सालय में अपनी पत्नी की जीवित अवस्था में उनकी बायीं आँख का ऑप्रेशन करा चुका था, जिसके परिणाम हमें सही नहीं मिले, जब तक वह जीवित रही आँख में कड़क और एक दो धारियाँ आँख के सामने उन्हें मालूम होती रही।

मेरे दिन अच्छे थे। आँख के ऑप्रेशन कराये कुछ महानुभावों ने मुझे सलाह दी, कि मुझे पड़ोसी राष्ट्र के प्रसिद्व नेत्र चिकित्सालय गेटी

गेटा अस्पताल जाकर अपने नेत्र संबंधी रोग का उपचार कराना चाहिए। जहाँ के चिकित्सक सेवा भाव से नेत्रों का सफल ऑप्रेशन कर देते हैं। मैंने उन लोगों की सलाह को हृदयंगम किया, और अपनी जाने की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

नवम्बर के महीने के प्रथम सप्ताह में मैने अपने पुत्र को साथ लिया और बस से यात्रा कर गौरी फंटा बार्डर के रास्ते, भारत के मित्र राष्ट्र नेपाल के उस प्रसिद्व अस्पताल पहुँच गया, जिस समय मैं अस्पताल के गेट पर पहुँचा, उस समय सुबह के 9 बज रहे थे। मैंने मामूली फीस जमा कर, अपना एडमिट कार्ड बनवाया, और जाँच के लिए मरीजों की लाइन में लग गया। अपराहन 3 बजे तक मेरी सभी आवश्यक जाँचे पूरी हो चुकी थी। मुझे पता न होने के कारण रात्रि विश्राम खुले बाउंड्री वाले प्लेटफार्म के टीन के छावन के नीचे तख्त पर करना पड़ा।

सुबह नौ बजे मैं तैयार होकर उन मरीजों की लाइन में जाकर लग गया। जिनके नेत्रों का ऑप्रेशन होना था, सभी को ऑप्रेशन के समय पहनाये जाने वाले आवश्यक वस्त्र पहनाये गये। डाक्टरों की टीम ने मेरी बायी आँख का अत्यंत सावधानी से कुशलता पूर्वक ऑपरेशन कर आँख के वांछित लेन्स का आँख में प्रत्यारोपण कर दिया। मुझे लाकर मेरे लिए आवंटित बैड पर लाकर लिटा दिया। उस दिन मुझे अत्यंत हल्का भोजन खाने के लिए दिया गया।

मेरा पुत्र कुछ दूर बैन्च पर भोजन करके जाकर लेट गया, उल्लेखनीय है कि रात्रि के ठीक 11 बजे की सारी की सारी इमारत हिलने लगी। ऐसा लग रहा था, कि छत पर सैकड़ों बन्दर कूद रहे हों, पंखे हिल रहे थे, बैड भी हिलने लगे। बैन्च पर सोया मेरा पुत्र बैन्च से जमीन पर गिर पड़ा, जो मुझे कुछ देर पूर्व जो पेशाब कराकर बैड पर छोड़ गया था। असल में नेपाल में उस रात्रि में एक तेज भूकम्प आया था, बाद में पता चला कि मित्र राष्ट्र के सुदूर कई जिलो में भूकम्प के कारण अनेक प्रकार से जन धन की हानि हुई।

मेरे पुत्र की भी तबियत उस दिन खराब हुई, जिसके लिए उन्हें कई माह दवा खानी पड़ी। मेरी आँख का यह ऑपरेशन पूर्णतयः सफल रहा एक महीने के बाद मैं ठीक हो गया।

लेकिन मैं ठीक तो हो गया, परन्तु अब दाहिनी आँख में भी मोतियाबिन्द अपनी पूरी जड़े जमा चुका था। दोनों आँखों की दृष्टि में तालमेल का संतुलन बिल्कुल भी नहीं बैठ पा रहा था। अतः हमें दूसरी आँख की भी शीघ्र ऑप्रेशन कराना था।

ठीक उसी ऑप्रेशन के दो माह बाद मैं फिर अपने दूसरे ऑप्रेशन हेतु फरवरी माह में गेटा अस्पताल गया। डाक्टरों की कुशल टीम ने मेरी प्रभावित दूसरी आँख का भी सफलतापूर्वक ऑप्रेशन कर लेन्स प्रत्यारोपित कर दिया और मै बताये गये उचित निर्देशों का पालन कर अपनी खोयी दृष्टि पुनः प्राप्त कर सका। अब मैं अपने दैनिक काम ठीक से कर पा रहा हूँ। आँखों के यह ऑप्रेशन पूर्णतयः सफल रहे।

ईश्वर का कृपा का भाजन हमेशा रहा हूँ। कि जिसने मुझे सदैव आयी कठिन से कठिन मुसीबत से उबारा है। साथ ही भगवान के दूत उन निर्लोभी सदाशयी चिकित्सकों को धन्यवाद देते हुए नमन करता हूँ, जो ईश्वर की प्रेरणा से पीड़ितों की पीड़ा दूर करने में संलग्न रहते हैं।

(एक हादसा ऐसा भी)

यह घटना, मेरे पिता जी के साथ घटी घटनाओं में से एक घटना है। जिन्हें वह कभी–कभी हमें बताया करते थे। उस समय उनकी उम्र कोई सात साल की रही होगी, केवल खेलने कूदने की उम्र थी। उस जमाने में कुछ ही लोग अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने के लिए भर्ती कराते थे। जिन्हे आम बोल चाल की भाषा में मदरसा कहते थे। पढ़ने वाले बच्चों में लड़कियां न के बराबर होती थी। मेरे पिता जी ने केवल कक्षा तीन तक की ही पढ़ाई कर अपनी शिक्षा पूरी करली थी।

उस जमाने में ग्रामीण क्षेत्रों में कोई एक या दो घर छोड़कर सारे के सारे घर कच्ची मिट्टी के बने होते थे। अधिकांश घरों के ऊपर छप्पर पड़े होते थे। घरों की मुंडेर पर पलानियां डाली जाती थी। जो बरसात में दीवालों की पानी से सुरक्षा प्रदान कराती थी। होली–दीवाली जैसे अवसरों से लगभग पन्द्रह दिन पूर्व इन घरों की महिलायें तालाब से निकाली हुई, चिकनी मिट्टी जिसे पड़ोर कहते हैं। उसमें गोबर मिलाकर

लीपती और पोतती थी, जिससे घर मच्छर मक्खियों से मुक्त हो जाते थे, और बड़े ही सुन्दर और स्वच्छ दिखाई देते थे।

ऐसे ही एक घर का स्वामी घर की लिपाई पुताई हेतु एक बड़ी सी कढ़ाई जिसमें गन्ने का रस डालकर भट्टी में उबाला जाता है, और गुड़ बनायी जाती है। उसे अपनी बैलगाड़ी में रखकर घर पर ला रहा था, कढ़ाई हल्की रस्सी से उसने बाँध रखी थी। तथा तालाब से निकाली हुई गीली मिट्टी उसमें लबालब भरी हुई थी। बैलगाड़ी में जुते बैल गाड़ी को खींचते हुए घर की ओर बढ़ रहे थे। तथा गाड़ीवान उस गाड़ी को हाँक कर आगे बढ़ रहा था।

दूर से बच्चों ने देखा कि बैलगाड़ी जा रही है, बच्चे दौड़े और मन्जलुआ खाने को उस बैलगाड़ी में चढ़ गये। बैलगाड़ी का बैलेन्स बिगड़ा और बैलों की गले की रस्सी जिसे जोत कहते हैं, टूट गई और सारी कढ़ाई की मिट्टी और कढ़ाई मेरे पिता जी के ऊपर पलट गई। गाड़ीवान दूर जा गिरा, दूसरा पीछे से चढ़ा बच्चा भी छिटक कर दूर जा पड़ा, लेकिन पिता जी उसके नीचे मिट्टी में दब गये।

दूर बैठे लगभग आठ या दस आदमी जो उस समय चिलम पी रहे थे। यह हादसा देख कर दौड़ पड़े, और उस कढ़ाई को उठाया, और शीघ्रता से गीली मिट्टी से पिता जी को बाहर निकाला, उनके मुँह या नाक में गीली मिट्टी भर गई थी। जिसे मेरी दादी ने रूई की बत्ती से साफ कर बाहर निकाला गया।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है, कि उस समय के ग्रामीण क्षेत्रों में तम्बाखू लोग चिलम में सुलगाकर उसका धुआँ पीते थे, और कई–कई लोग इकट्ठे होकर चठिया बनाकर बैठते थे। और परस्पर एक दूसरे को सुलगती हुई चिलम बढ़ाकर पिलाते थे। लोग मजे से धुएं का कश खीचते थे। खैर वह चठिया वाला ग्रुप दौड़कर हमारे पिताजी की जान बचाने में सफल हो गया। उन्हें तीसरे दिन होश आया, और उनके शरीर में कहीं कोई चोट नहीं आयी, हाँ, एक पैर में थोड़ा सा निशान जरूर था, जिसे वह उक्त घटना का वर्णन करते समय दिखाया करते थे।

यहाँ एक बार फिर यह बात चरितार्थ हो उठी, कि 'जाको राखे साइयां मारि सके न कोय'।

जब दीवाल डगमगाई

मेरी शादी के वर्ष में जब मेरी पत्नी, हम लोगों के विवाह के बाद अपने मायके वापिस गईं, तब दो महीने बाद सावन का हरियाला माह आ गया। शादी बैशाख मास में हुई, परन्तु उस साल बरसात अपने ठीक समय पर प्रारम्भ हो गई थी, सावन में खूब बादल बरस रहे थे, किसान आसाढ़ में ही अपनी खरीफ की फसलें बो चुके थे, मेरी ससुराल वाला घर कच्चा बना हुआ था, जो मिट्टी की कच्ची दीवाल की चहार दीवाली से घिरा छोटा घर था, जिसमें पीछे की ओर एक कोठरी थी, सामने एक बरौठा और अन्दर एक छप्पर पड़ा था। घर के अन्दर छोटा सा एक खुला आँगन था, जिसमें घर की उत्तरी दीवाल से सटा नीम का एक साल पुराना रोपा गया नया पेड़ था, जिसके किनारे हाथ से आटा पीसने वाली एक पत्थर की चकिया रखी थी, जिस पर मेरी सास सुबह सवेरे चक्की गीत गाती हुई घर के खर्च के लिए हाथ से आटा पीसा करती थी। मैंने देखा पड़ोस से भी आटे की चक्की चलने एवम् पड़ोसी महिला के आटा पीसने के वक्त सुबह गीत गाने का स्वर सुनाई पड़ता था।

घर पूरब मुखी था, जो कि वास्तु कला की दृष्टि से शुभ माना जाता है। सामने एक और नीम का वृक्ष था। नीम के एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर उड़कर जाने वाले कुहकते हुए मोर बड़े भोले और भले लगते थे। मेरा मन को इन दृश्यों ने शायद ठग ही लिया था। मैं सोचता था, कि इन राष्ट्रीय पक्षियों के मोहक दृश्यों को अवलोकन करने का सौभाग्य हर किसी को नहीं मिल पाता है।

घर के दक्षिण के ओर भी कच्ची दीवाल थी। शायद उस वर्ष मेरे श्वसुर लगातार होने वाली बरसात के कारण उस पर पलानी का छावन नहीं कर पाये थे। मुझे याद है कि मेरे कलेवे की रस्म उसी दीवाल के किनारे एक मशहरी डालकर उस पर एक कालीन बिछाकर कराई गई थी। जिस पर हमारे साथ हमारे दो छोटे भाई, दो मौसेरे छोटे भाई विराजमान थे। साथ ही हमारी पत्नी के परिवार और पड़ोस एवम् रिश्तेदारों की महिलायें कलेवा की रस्म अदा करा रही थी, बच्चों की तादाद भी बरोठे की छत से कलेवा के दृश्य का आनन्द उठा रही थी।

मेरी पत्नी जब मायके में थी, सावन के बादल कई दिनों तक खूब बरस कर आज आसमान से समुद्र की ओर फिर अपने जल का घड़ा भरने निकल गये थे। खूब मोहक धूप खिली थी। मेरे पत्नी रंग और रूप में सुन्दर थी। उन्होंने उस दिन कुएँ से भरकर लाए हुए दो तीन डोलों के जल से स्नान किया बाल धोए, और धूप का आनन्द लेने के लिए तथा बालों को खिली हुई धूप का सेंक देने के इरादे से उस दीवाल के सहारे टिकी नसैनी (सीढ़ी) से ऊपर बरोठे की छत पर जाने का मन बनाया। जैसे ही वह नसैनी के ऊपरी सिरे पर पहुँची दीवाल भरभराकर आँगन में गिरी, साथ ही वह सीढ़ी उनको साथ लेकर दूर दूसरे किनारे की दीवाल के पास उन्हें पटकती हुई गिरी। सीढ़ी का आधे से अधिक भाग दीवाल के बड़े–बड़े ढीलों के बीच दब गई।

आँगन में मेरी सास द्वारा सूखने के लिए डाली गई मक्का जो एक चादर पर चारपाई के ऊपर पड़ी सूख रही थी, दीवाल के गिरने के साथ धूल धूसरित हो गई, और जिस पर वह सूख रही थी, वह चारपाई भी चकनाचूर हो गयी।

दीवाल गिरने के साथ ही उनके पड़ोसी और परिवार के लोग दौड़कर आये, उन्हें उठाया लेकिन उनके शरीर पर कहीं कोई चोट नहीं थी। शायद मेरे भाग्य में उनका सुख था, उनके द्वारा आगे परिवार की वृद्धि होनी थी।

मैं यह भी सोचता हूँ, कि यदि कलेवा की रस्म के दौरान जब भीड़ काफी अधिक थी, यदि कोई हादसा हो जाता तो कितने लोग हादसे की चपेट में आते। लेकिन ईश्वर की इच्छा से अधिक कुछ नहीं।

प्रकृति के उन्मुक्त मोहक वातावरण में विचरते हुए तथा ससुराल वालों की मधुर मीठी बोली, तथा कुहकते मोरों की एक डाल से नीम की दूसरी डाल पर जाते हुए गतिविधियों ने मेरे सारे अशुभ चिन्तन पर पर्दा डाल दिया।

जब मेरे पौत्र को चोट लगी

उस दिन मेरी पत्नी हमारे एक पौत्र को लेकर पड़ोस के एक घर में गृह स्वामिनी के बुलावे पर उसे अपने साथ लेकर गई। उस घर में किसी कथावार्ता के छोटे कार्यक्रम का आयोजन था | हमारे उस पड़ोसी का घर एक पक्की सड़क पर है। जिस पर लगातार वाहनों का आवागमन बना रहता है। उस समय हमारे उस पौत्र जिसका नाम प्राशु है, उसकी आयु लगभग 6 वर्ष की थी, हमारी श्रीमती जी पौत्र को कुछ अन्य बच्चों के साथ घर में खेलते हुए छोड़कर वहाँ उपस्थित अन्य महिलाओं के साथ महिला सुलभ वार्तालाप में लिप्त हो गई। हमारा पौत्र प्राशु, वहाँ उपस्थित अन्य बच्चों के साथ खेल में जैसे ही संलग्न हुआ, कोई एक दूसरा बच्चा जो उससे आयु में थोड़ा बड़ा था, उसे खेलने के लिए सड़क पर लिबा ले गया | सड़क क्रॉस करते हुए प्राशु को वहाँ से गुजरते हुए एक स्कूटर सवार ने टक्कर मार कर बुरी तरह घायल कर दिया, और तेजी से अपने को वहाँ से निकाल कर लोगों की आँखों से ओझल हो गया।

एक अन्य किशोर जो उस घटना को दूर से देख रहा था, दौड़कर मेरे दरवाजे पर आया और मुझे आवाज देकर घर के बाहर बुलाया और जल्दी-जल्दी मुझे बताने लगा कि प्राशू को एक स्कूटर चालक ने टक्कर मार कर घायल कर दिया और वह रोड पर पड़ा है।

मैं उस समय नहाने जा रहा था, बनियान नेकर पहने कमर में तौलिया लपेटे दौड़कर जब मैं रोड पर पहुँचा, तो मैंने प्राशु को लहूलुहान अवस्था में देखा | किम् कर्तव्य बिमूढ मैंने उसे उठाकर अपनी छाती से चिपका लिया, सिर में काफी चोट थी, चोट के कारण फटे सिर से निरंतर खून वह रहा था, बहते खून के कारण मेरे सारे कपड़े उसके खून से सराबोर हो रहे थे।

हतप्रभ! सड़क से गुजरते हुए, एक रिक्शे वाले को मैंने रोककर अनुनय के साथ शीघ्रता से उसे अस्पताल ले चलने को राजी किया | मैं प्राशु को अपनी छाती से चिपकाए गोद में उठाएं अस्पताल पहुँचा, और डॉक्टर के केबिन में उसे लेकर गया, पीछे से मेरी पत्नी भी कुछ अन्य महिलाओं के साथ अस्पताल पहुँच गई।

तत्काल अस्पताल पहुँचाने के कारण प्राशु को उचित उपचार मिल गया | डॉक्टर महोदय के उपचार के कारण कुछ देर बाद उसका खून बहना बंद हो गया, उसके सर में कई टांके लगे, नियमित मरहम पट्टी और दवा के प्रभाव से एक माह में वह ठीक हो गया, लेकिन सिर में से अधिक रक्त बह जाने के कारण बह बहुत कमजोर हो गया। परंतु परमात्मा की दया से उसकी जान बच गई।

इसी प्रकार की एक दुर्घटना मेरी विवाहित पुत्री की छोटी पुत्री पीहू के साथ खेल खेल में हुई, उसके घर की ऊपरी मंजिल में बने बरामदे के सामने की दीवार पर एक दो पल्लू की खिड़की लगी थी, जिसमें ग्रिल अभी नहीं लगी थी, खिड़की के पास सटी हुई लकड़ी की एक छोटी चौकी रखी थी, जिस पर पीहू अपने खिलौने के साथ खेल रही थी, उसकी माँ पास में बैठी हुई खिलौनौं का उसका खेल देख रही थी।

जब बन्दर मेरी पुत्री की चोट का कारण बना

आज जब हम छोटी–छोटी घटनाएं जो हमें पालतू अथवा गैर पालतू पशुओं के संपर्क में आने से प्रभावित करती है, और कभी कभी यह ना समझ पशु हमारी जान के दुश्मन बन जाते हैं। इस प्रकार भी घटनाएं निश्चित ही लोगों को हानि पहुँचाती है।

पशुओं के साथ मनोरंजन करने वाली रची गई कविताएं अथवा कहानियां पढ़कर हम या हमारे बच्चे यही समझ लेते हैं, कि यह पशु भी मानव जैसी बुद्धि या विवेक रखते होंगे परन्तु ऐसा नहीं है। यह पशु विभिन्न योनियों में रहते हुए अपने स्वभाव के वश कार्य करते और कदम उठाते रहते हैं।

पशु प्रवृत्ति में बन्दरों का स्वभाव भी एक अलग प्रकार का है, यह झुण्ड में रहते हैं। कभी–कभी यह बस्ती के अन्दर झुण्डों में आ जाते हैं। हमारे छत पर पड़े कपड़े उठा ले जाते हैं, उन्हें फाड़ देते हैं, और फेक देते हैं। यह बाग और जंगलों में हिंसक पशुओं से डरकर जंगल से

गुजरने वाली सड़क किनारे भी देखे जाते हैं । लेकिन इन छोटी प्रजाति के लाल मुँह वाले बन्दरों में यदि एक काले मुँह का लम्बी पूँछ का लंगूर पहुँच जाये, तो यह वहाँ से पलायन करने को मजबूर हो जाते हैं।

एक बार मैं मोटरसाइकिल से अपने गन्तव्य विद्यालय की ओर शिक्षण कार्य करने जा रहा था, सर्दी का कोहरे भरा मौसम था, रोड के किनारे आम का एक बाग था, उसमें बन्दर थे, और एक लाल मुँह वाला बन्दर काफी उद्दण्ड था। बन्दर घुंड़की तो बन्दरों के स्वभाव में मशहूर है।

सहसा एक ट्रक सामने आकर रूका, उसके अगले केविन में सवार दो महिलायें ट्रक से उतरी जिनमें एक वृद्व महिला दूसरी महिला युवती थी, जिसकी गोद में बच्चा था, जो सर्दियों में पहने जाने वाले कपड़े पहिने था, महिलाओं के ट्रक से उतरते ही चालक ट्रक के साथ अपने गन्तव्य की ओर चला गया, बाग में पेड़ पर चढ़े उस उददण्ड बन्दर ने पेड़ से उतरकर झपट्टा मारते हुए युवती की गोद से बच्चे को छीन लिया, और सड़क पर पटक कर फिर भाग गया। यह दृश्य मैंने पीछे मोटरसाइकिल से आते हुए रूककर अपनी आँखों से देखा।

मेरी छोटी पुत्री की शादी जिस नगर के घर में हुई थी, उस घर की छत पर उस दिन उसने सुखाने के लिए धूप में गेहूँ फैलाये हुए थे, उस छत पर कहीं से दो बन्दर आ गये, उसे छत पर कुछ हलचल मालूम हुई, छत पर जाने को उसने जैसे ही छत पर लगा दरवाजा खोला, गेहूँ खाते हुए बन्दर घुड़की देकर उसकी ओर झपटा वह डर गई और नीचे आ गिरी।

नीचे उनकी दुकान के कुछ गत्ते, जिनमें सामान भरा था, उस पर आकर गिरी, चोट तो उसे बहुत लगी, पैर में फैक्चर हो गया, जो प्लास्टर के बाद कई महीनों में ठीक हुआ, लेकिन ईश्वर की दया से जान बच गई।

बन्दरों के स्वभाव में अन्तर देखा जाता है। रेलवे स्टेशन पर बन्दरों का एक झुण्ड अपना आतंक जमाये था, यदि कोई काली पन्नी में किसी भी प्रकार का सामान ले जाता हुआ दिखाई देता, तो लागू बन्दर

उस पर घात लगाकर पीछे से हमला कर उसकी पन्नी का सामान छीनकर बिखरा देते, खाने की चीज होती, तो खा लेते अन्य चीजे बिखराकर बरबाद कर देते है।

एक बन्दर तो इस प्रकार की गतिविधि में लिप्त था, कि वह महिलाओं के पर्स छीन ले जाता, अथवा उनके पैरों की चप्पलें उठाकर पेड़ पर बैठ जाता, अगर उसे खाने की केला जैसी चीज कोई देता, तो वह उसकी वह चीज वापिस कर देता, अन्यथा चीड़ फाड़कर बरबाद कर देता। एक बार एक बन्दर कुतिया के एक पिल्ले को लेकर नीम के पेड़ पर चढ़ गया, काफी देर तक लोग उसे देखते रहे पता नहीं बाद में उसने उसका क्या किया।

कहने का मतलब हमें बन्दरों की इस प्रकृति का आकलन कर इनकी गतिविधियों से बचकर जीवन यापन करना चाहिए, और अपने को सुरक्षित रखना चाहिए।

श्याम बाबू शुक्ल 'विमल'

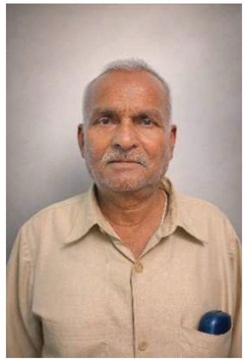

जन्मतिथि :–(10–04–1954) दस अप्रैल उन्नीस सौ चौवन ई0

पिता का नाम :– स्व0 दुर्गा प्रसाद शुक्ल

जन्म स्थान – शहीद ग्राम मुजफ्फरनगर, तहसील–पूरनपुर

जनपद–पीलीभीत (उ0प्र0)

शिक्षा–बी0ए0, बी0टी0सी0, अदीब कामिल (जामिया उर्दू अलीगढ़)

भाषा ज्ञान–हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, गुरूमुखी, बांग्ला

लेखन विधाएं–गीत, छन्द, बालगीत, संस्मरण, निबन्ध

पूर्व में प्रकाशन– 1. '**अंगारों के पथ पर**' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।

2. '**बालगीतों की छाँव में**' प्रकाशित हो चुका है।

प्रकाशित कृति– '**कहानियाँ बदलते जीवन की**' आपके हाथ में है।

संप्रति– शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त (वर्ष 2017 ई0 में)

(वर्तमान में साहित्यिक सेवा)

प्रकाशन पत्रों में – राष्ट्रदेव (बरेली) अमर उजाला, दैनिक जागरण(बरेली)

विधि सन्देश (बदायूँ) न्याय पुजारी (आगरा) राजमोर्चा (पीलीभीत)

पत्रिकाओं में – राष्ट्रधर्म (लखनऊ) मानस चन्दन (सीतापुर) शिक्षक एकता

नैमिष गौरव, गायत्री तपोवन विप्र पंचायत, नालन्दा दर्पण

केरल हिन्दी अकादमी शोध पत्रिका (तिरूवनन्तपुरम)

संकलनों में–साहित्य सारथी (झांसी) नाजनीन, काव्य श्रंगार (बैतूल (म0प्र0)

झरोका (हैदराबाद) धरती और चाँद (राय बरेली)प्रत्यंचा (बिजनौर)

सम्मान– कविवर मैथिली शरण गुप्त (गाँधी जयन्ती सन् 1999 मथुरा)

समाज रत्न सम्मान (महाशिवरात्रि सन् 2000 मथुरा)

काव्य महारथी (क्रिसमस डे 2000 वैतूलम0प्र0)

जायसी सम्मान (हिन्दी दिवस 2000 राय बरेली उ0प्र0

सरस्वती साहित्य सम्मान (हिन्दी दिवस 2001 गोरखपुर (उ0प्र0)

साहित्य रत्न सम्मान (नाहन हिमाचल प्रदेश)

काव्य रसिया (नव वर्ष 2001 वैतूल (म0प्र0)

प्रसारण – आकाशवाणी रामपुर से अनेकों बार काव्य पाठ

दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ से काव्य भेंट वार्ता

यात्रांए– देश के लब्ध प्रतिष्ठित शीर्षस्थ मन्दिरों के दर्शन एवमं पूजन

वर्तमान पता– विमल कुटी, पंकज कालोनी, पूरनपुर

जनपद–पीलीभीत (उ0प्र0) पिन–262122

मोबा0–6395764979

(पुस्तक का संक्षिप्त परिचय)

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में दिन प्रतिदिन बचपन से ही कुछ न कुछ घटनाएं अवश्य घटती हैं। अबोध पन में हमें उनके परिणाम का ज्ञान भले न ही हो परन्तु उनका हमारे शारीरिक और मानसिक पटल पर अवश्य असर पड़ता है जब हमारा विवेक जाग्रत हो जाता है तो घटने वाली इन परिस्थितियों से हम अपने को काफी हद तक सुरक्षित रख पाते हैं। तथा अपने जीवन को किसी हितैषी की सलाह जैसे सुखद बना पाते हैं।

मेरे जीवन के विभिन्न चरणों में घटी कुछ ऐसी घटनाएं जो या तो बिन बुलाये घटित हुई और हम कैसे और किस प्रकार स्वयं को उनसे सुरक्षित कर पायें हमने उन्हें ' कहानियाँ बदलते जीवन की ' नामक पुस्तक में इस उद्देश्य से कलम वद्व करने का प्रयास किया है। कि वे कहॉ तक हमारे पाठकों में परिस्थितियों से लड़ने में सहायक सिद्व होगी तथा ईश्वर पर भरोसा रखते हुए उन्हें साहस और संवल प्रदान करेंगी।

सारांश यह है कि मुसीबतों का सामना करते हुए यदि हम बिना विचलित हुए शान्त हृदय से जीवन के रणक्षेत्र में एक कुशल योद्वा की भाँति हार न मानते हुए अगर डटे रहते हैं तो हम अवश्य ही अपेन लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। और जीवन में घटी अच्छी बुरी सभी घटनाएं अतीत का इतिहास बन एक सीख का सबक बन उठती है।

'कहानियाँ बदलते जीवन की '

' पुस्तक से साभार '

(लेखक का परिचय)

'कहानियाँ बदलते जीवन की' पुस्तक के माध्यम से लेखक अपने सुधी पाठकों को अपने साथ घटी इन छोटी–छोटी घटनाओं के माध्यम से बताना चाहता है कि किस प्रकार उसने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में किन–किन समस्याओं का सामना किया है तथा वह हँसते हँसते किस प्रकार उनसे मुकाबला कर अपने जीवन को सफल कर पाया।

लेखक निर्विवाद रूप से अपने इस आत्म कथ्य को इस पुस्तक के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता है कि वह इन घटनाओं को पढ़े समझे, उसे किसी भी प्रकार से घटी इन घटनाओं का उल्लेख करने में कतई संकोच नहीं है। सारा निर्णय प्रबुद्व पाठकों की सोच के अधीन सुरक्षित रहेगा।